वर्ष 14 अंक 1

जनवरी 2024 (शुल्क 20/-)

टुडे एक्सप्रेस

आईना सच का...

रामराज

रामलला हुए विराजमान। अयोध्या में भव्य-दिव्य राम मंदिर के निर्माण से राम राज्य की संकल्पना को साकार करता नया भारत विकास और विरासत की साझा शक्ति से सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक गौरव को कर रहा है पुनर्स्थापित

थल सेना सेना दिवस - 15 जनवरी

भारतीय सेना
परिवर्तन की राह पर

मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव तत्पर हमारे वीर सैनिक अपने पराक्रम और दक्षता के लिए जाने जाते हैं। अदम्य साहस, शौर्य व सर्वोच्च बलिदान से भरी हमारी सेना का मानवीय भावना के लिए भी सम्मान किया जाता है। जब भी कभी लोगों को मदद की आवश्यकता पड़ी, हमारी सेना उनके साथ खड़ी हुई। साल 2024 में भारत अपना 76वां सेना दिवस मना रहा है। देश के प्रति सेना की नि:स्वार्थ सेवा, समर्पण और प्रतिबद्धता को लेकर हर भारतीय मन से करता है उन्हें करें सैल्यूट...

- भारतीय सेना हर साल 15 जनवरी को 'सेना दिवस' के रूप में मनाती है।
- वर्ष 1949 में आज के दिन जनरल के.एम. करियप्पा (बाद में फील्ड मार्शल) ने अंतिम ब्रिटिश कमांडर-इन-चीफ जनरल सर एफ.आर.आर. बुचर से सेना की कमान संभाली थी।
- वे स्वतंत्रता के बाद भारतीय सेना के पहले कमांडर-इन-चीफ बने थे।
- विकसित और आत्मनिर्भर भारत के राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ तालमेल बिठाकर भारतीय सेना प्रासंगिक और शक्तिशाली बनी रहे इसलिए 2023 को 'परिवर्तन के पथ पर' रूप में मनाया है।

भारतीय सेना को उसकी वीरता और कर्तव्यपरायणता के लिए जाना जाता है। राष्ट्र की सुरक्षा में भारतीय सेना ने जो अमूल्य योगदान किया है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। भारतीय सैन्यकर्मी दुरूह इलाकों में काम करते हैं और प्राकृतिक आपदाओं सहित सभी मानवीय संकटों के समय देशवासियों की सहायता करने में सदैव आगे रहते हैं। विदेशों में शांति-स्थापना मिशनों में भी भारतीय सेना के शानदार योगदान के लिये भारत को गर्व है। - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

टुडे एक्सप्रेस

आईना सच का...

वर्ष 14 | अंक 1 | जनवरी 2024

चेयरमैन
हरीओम दीक्षित

वाइस चेयरपर्सन
कल्याणी दीक्षित

ग्रुप एडिटर
पवन सिंह

कार्यकारी सम्पादक
ऐश्वर्या सिंह

मुख्य संवाददाता
अभिमन्यु सिंह

सलाहकार मण्डल
डॉ. अनिल कुमार दीक्षित
पी.पी. सिंह चौहान
धर्मेन्द्र सिंह मलिक
आलोक द्विवेदी

बिजनेस हेड
एकलव्य सिंह

वरिष्ठ प्रसार प्रबंधक
एम.एस. भट्ट

सीनियर डिजाइनर
अनिल कुमार

स्वामी-प्रकाशक, मुद्रक, हरीओम दीक्षित द्वारा नरेन्द्र प्रिन्टर्स महादेव गली, मोती कटरा, आगरा-282003 उ.प्र. से मुद्रित तथा 1/93, रत्न मुनि मार्ग, पंचकुईयां रोड, शाहगंज, आगरा से प्रकाशित

संपादक - पवन सिंह
RNIRGN No. UPHIN/2012/48651

कुल पृष्ठ-64

उपरोक्त अंकों में प्रकाशित रचनाओं के लिए सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए संपादक उत्तरदायी नहीं हैं पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री व विज्ञापन से संपादक/सवामी/प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है उपरोक्त से संबन्धित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ प्रकाशन की अवधि से तीन माह के अन्दर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी कार्यवाही और पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं है। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जायेगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

प्रधान कार्यालय :
महोल्का ग्रुप - 247, जयपुर हाउस, आगरा उ.प्र. (इंडिया)
Mob.: +91 9412777777
E-mail : pawansingh@todayexpress.net

सुरक्षा बलों का शिकंजा 8-9

पहली चाल से जीत की जुगत 11-12

2014 में संकल्प 2024 की सिद्धि 26-30

विकसित भारत संकल्प यात्रा 45-46

भारत की प्राचीन धरोहर 65-66

आज का भारत 58-59

संपादक की कलम से...

संकल्प से सिद्धि का साक्षी वर्ष- 2024

पवन सिंह 'संपादक'

सादर नमस्कार।

नववर्ष की आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

अमृत काल की ओर अग्रसर भारत के लिए 2024 नई सुबह लेकर आया है। यह वर्ष इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि 2014 में देश ने एक संकल्प के साथ लोकतंत्र के पर्व में उत्साह दिखाया था, 2024 की सुबह उन संकल्पों की सिद्धि का साक्षी बन गया है। सही अर्थों में यह विकसित भारत के संकल्प और आजादी के बाद सबसे बड़ी जनभागीदारी का सशक्त दशक बन गया है। ऐसे में इस नववर्ष यह जानना स्वाभाविक है कि किस तरह दीर्घकालिक विजन के साथ इस दशक में सर्वांगीण, सर्वस्पर्शी और समावेशी विकास की सोच ने विकसित भारत का आधारस्तंभ तैयार कर दिया है। इस आधारस्तंभ से भारत आत्मनिर्भरता के मार्ग पर कदम बढ़ा चुका है। अमृत काल की यह बेला-भारत का अनमोल समय बनकर आया है। जिसमें सपने केवल सपने नहीं होंगे, पराक्रम ही विकल्प होगा, अभूतपूर्व सफलताओं के साथ भारत का हर तरफ जयगान होगा क्योंकि सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास, भारत का सबसे बड़ा मंत्र तो संकल्प से सिद्धि आज देश का प्रचलित नारा बन चुका है।

संकल्प से सिद्धि के दशक के रूप में स्थापित हो चुके 2014-24 ने किस तरह विकास के आयाम और प्रतिमान बदल दिए हैं तो परिवर्तनकारी सुधारों ने 2047 के नए भारत के निर्माण की पटकथा लिख दी है। नववर्ष के प्रथम अंक की हमारी आवरण कथा विकसित भारत की नींव बनी ऐसी ही योजनाओं पर आधारित है।

व्यक्तित्व की कड़ी में सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक उत्थान में अमिट योगदान देने वाले पद्म विभूषण से सम्मानित कल्याण सिंह को शामिल किया गया है। पात्र लाभार्थियों तक शत-प्रतिशत लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से शुरू हुई विकसित भारत संकल्प यात्रा के प्रति अपार जन उत्साह और प्रधानमंत्री का लाभार्थियों से सीधा संवाद भी इस अंक में शामिल है। इसके अलावा केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय, अनुच्छेद 370 और 35 A पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के संबंध में प्रधानमंत्री मोदी का आलेख, कॉप-28, नौसेना दिवस, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, इंडिया आर्ट से जुड़े विशेष कार्यक्रमों को भी इस अंक में शामिल किया गया है।

पुनश्चः वर्ष 2024 का यह वर्ष विकास की उस निरंतरता का वर्ष है जो 2047 के स्वर्णिम भारत का उद्घोषक बनेगा। राष्ट्र प्रथम की सोच के साक्षी आप सभी 140 करोड़ देशवासियों को नववर्ष की पुनः शुभकामनाएं। नववर्ष की मंगल कामनाओं के साथ आपके जीवन में नई ऊर्जा का संचार हो।

आप अपना सुझाव हमें भेजते रहें।

आत्मनिर्भरता की यात्रा का पावरहाउस बनकर उभर रहा है पूर्वोत्तर

हरिओम दीक्षित 'चेयरमेन'

सादर नमस्कार।

किसी भी इमारत के निर्माण में उत्तर-पूर्व को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यही बात राष्ट्र निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है। दशकों तक देश का पूर्वोत्तर क्षेत्र कई तरह की चुनौतियों से जूझता रहा है। भौगोलिक दुर्गमता और सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं वाले इस क्षेत्र में आठ राज्य आते हैं- अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा। भारत में सूर्य की पहली किरण इसी इलाके में पड़ती है लेकिन विडंबना कहें या मजबूरी, पूर्वोत्तर के ये आठ राज्य विकास की रौशनी से दूर थे। ऐसे में 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब नेतृत्व संभाला तो इस 'अष्टलक्ष्मी' को सच्चे अर्थ में भारत की लक्ष्मी बनने की ताकत रखने वाला बताया और एक विजन के साथ पूर्वोत्तर को सुरक्षा और समृद्धि का गेट-वे बना दिया है। अब पूर्वोत्तर न दिल्ली से दूर है और न ही दिल से। वर्ष 2014 के बाद के विकासवादी कदमों ने पूर्वोत्तर के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बदल दिया है। बीते लगभग 10 वर्षों में पूर्वोत्तर में भौतिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ सोशल यानी सामाजिक इंफ्रास्ट्रक्चर पर अभूतपूर्व काम हुआ है जिससे 2014 के बाद से पूर्वोत्तर का ऐतिहासिक उत्थान हुआ है। विश्वास बहाली के उपायों के कारण सरकार पूर्वोत्तर के जन-जन के द्वार तक पहुंची है।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने पूर्वोत्तर को आजादी का गेट-वे बताया था तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन ने इसे नए भारत की विकास गाथा का द्वार बना दिया है। हाल के वर्षों में प्रमुख शांति समझौतों से सौहार्दपूर्ण पूर्वोत्तर का मार्ग प्रशस्त हुआ है। उग्रवाद की घटनाओं में बड़ी कमी आई है। पूर्वोत्तर आज सही अर्थों भारत की आत्मनिर्भरता की यात्रा का पावरहाउस बनकर उभरा है। जनवरी के दूसरे पखवाड़े में ब्रू-रियांग और बोडो समझौते के चार वर्ष पूरे होने के अवसर पर पूर्वोत्तर की विकास यात्रा ही इस बार हमारी आवरण कथा बनी है।

व्यक्तित्व की कड़ी में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रेरक गाथा शामिल है। उनकी जयंती (23 जनवरी) को राष्ट्र अब पराक्रम दिवस के रूप में मनाता है। वर्ष 2024 लोकतंत्र के महापर्व का भी वर्ष है इसलिए 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस के संदर्भ में विशेष सामग्री, विकसित भारत संकल्प यात्रा, पखवाड़े भर के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रमों को भी पत्रिका में शामिल किया गया है। इसके अलावा अयोध्या में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन की सौगातें, अंग्रेजी काल में बने दंडात्मक कानून की जगह न्याय दिलाने वाले कानून को नए भारत का हिस्सा बनाने पर विशेष सामग्री इस अंक में है। साथ ही, मन की बात, केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय भी हमेशा की तरह इस अंक का हिस्सा है।

पी.पी. सिंह चौहान

दिव्यांगजन भी अब छू रहे हैं आसमान

लोकाः समस्ताः सुखिनोभवंतु ।।

अर्थात्, जगत के अंदर, समाज का हर वर्ग, हर नागरिक, हर कोई सुखी हो। इसी सोच को साकार करते हुए केंद्र सरकार ने तत्कालिक और दीर्घकालिक उपायों के माध्यम से समाज के हर वर्ग को विकास की योजनाओं से छुआ है। इसी कड़ी में देश के लगभग 3 करोड़ ऐसी आबादी के लिए विशेष योजनाएं और नीतियां लागू हुई, जिन्हें कभी लाचार माना जाता था। समाज में भागीदारी न के बराबर मानी जाती थी। संवेदनशील प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक आह्वान किया- क्यों न हम विकलांग की बजाय दिव्यांग शब्द का प्रयोग करें क्योंकि भगवान ने दिव्यांगों को दिव्य शक्ति दी है। दिव्यांगजनों की दिव्यता को पहचान कर ही प्रधानमंत्री ने सुगम्य भारत अभियान शुरू किया तो 2016 में संसद से पारित हुआ दिव्यांगता अधिकार विधेयक दिव्यांगजनों के आत्मनिर्भर जीवन का आधार बन गया है।

केंद्र सरकार के प्रयासों का ही परिणाम है कि आजादी के दशकों बाद तक समाज में भागीदारी से वंचित रहे दिव्यांग चाहे उद्योग हो या फिर खेल जगत, हर क्षेत्र में सफलता के आयाम लिख रहे हैं। दिव्यांगों को सहज और सरल वातावरण उपलब्ध कराने के लिए 3 दिसंबर 2015 को इसकी औपचारिक शुरुआत की गई थी। इस कानून और अभियान के तहत दिव्यांगजनों के लिए सुगम्यता एक अधिकार बन गया, जबकि इससे पहले यह केवल एक कल्याणकारी कार्यक्रम भर था। आज दिव्यांगजनों की जीवन यात्रा, उनका साहस और दृढ़ संकल्प प्रेरणा और सुगम्य भारत अभियान की दिशा में आठ वर्ष पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से दिया गया दिव्यांग शब्द नए भारत का संकल्प बन गया है। 'सम' और 'मम' के भाव से समाज में समरसता बढ़े और सब, एक साथ मिल कर आगे बढ़ें, इस सोच के साथ दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाने की पूरी पहल ही 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के संदर्भ में हमारी आवरण कथा बनी है।

केंद्र सरकार की सोच दिव्यांगों को न सिर्फ मानसिक, शारीरिक और सामाजिक सुविधाएं बल्कि समान अवसर उपलब्ध कराना भी है। इस दिशा में सरकार ने अभूतपूर्व प्रगति की है और दिव्यांगजन भी अब आसमान छू रहे हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा से जुड़ी जानकारियों को सम-सामयिकी के रूप में जगह दी गई है। इसके अलावा व्यक्तित्व की कड़ी में भारत रत्न से सम्मानित पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को नमन, राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस पर विशेष सामग्री, सहकारिता से समृद्धि, जनजातीय गौरव दिवस पर विशेष कार्यक्रम, प्रधानमंत्री की जवानों के संग दीपावली, अयोध्या का दीपोत्सव और प्रधानमंत्री के कार्यक्रमों को इस अंक में शामिल किया गया है।

विकसित भारत के संकल्प का आधार

प्रो. अनिल कुमार दीक्षित

हैं कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके वीर नर के मग में
खम ठोक ठेलता हैं जब नर,
पर्वत के जाते पांव उखड़।
मानव जब जोर लगाता हैं,
पत्थर पानी बन जाता हैं।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की कविता की ये पंक्तियां हाल ही में उत्तरकाशी के सुरंग बचाव अभियान की सार्थकता को सिद्ध करती है। वह भी एक ऐसे समय में जब भारत अमृत काल के प्रथम वर्ष के समापन की ओर है। एक बड़े बचाव अभियान में 17 दिनों के अथक परिश्रम से पहाड़ जैसी चुनौतियों को पार कर 41 श्रमिकों को सकुशल बचाना उस इच्छाशक्ति का परिचायक है, जिसके संकल्प से लैस होकर विकसित भारत के नवनिर्माण की अमृत यात्रा चल रही है। उत्तरकाशी सुरंग बचाव अभियान को हमारे इस अंक में विशेष रूप से शामिल किया गया है। भारत आज हर बाधा को पार कर विकास की नई पटकथा लिख रहा है। अमृत काल का प्रथम वर्ष- 2023 सही अर्थों में विचलित हुए बिना, विघ्नों को गले लगाते और धीरज रखते हुए, कांटों में भी राह बनाने वाला वर्ष बन गया है। किसी भी वर्ष के अंत में उसकी समीक्षा उतनी ही जरूरी होती है, जितनी शुरुआत में संकल्प लेना।

भारत ने सदियों के संघर्षों को झेला है, शून्य से संभावनाओं का सृजन किया है। 21वीं सदी का भारत अब विकसित भारत के मार्ग पर कदम बढ़ा चुका है और वर्ष 2023 इसका आधार बना है। बीता एक वर्ष ऐसी उपलब्धियों से भरा है, जिसने देश में मान, दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ा दिया है। इस वर्ष भारत ने किस तरह अपने विकास के रथ का पहिया दौड़ाया है, यही हमारी इस बार के अंक की आवरण कथा है, जिसे वर्षांत समीक्षा कहना ज्यादा बेहतर होगा।

व्यक्तित्व की कड़ी में परमवीर अल्बर्ट एक्का तो 25 दिसंबर को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर हर वर्ष मनाए जाने वाले सुशासन दिवस पर विशेष सामग्री इस अंक में शामिल है। जी-20 की अध्यक्षता के समापन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विशेष आलेख और वर्चुअल शिखर सम्मेलन, संत मीराबाई की 525वीं जयंती पर प्रधानमंत्री का मथुरा दौरा, तेजस में प्रधानमंत्री की उड़ान, विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से संवाद, रोजगार मेले का आयोजन, भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव और केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय इस अंक के विशेष आकर्षण हैं। इनसाइड कवर के रूप में मन की बात और महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती 22 दिसंबर को मनाए जाने वाले भारतीय गणित दिवस को बैक कवर के रूप में शामिल किया गया है।

देश की माता-बहन और बेटियों के लिए मीराबाई आज भी प्रेरणापुंज

धर्मेन्द्र सिंह मलिक
संपादक-अग्र भारत

रेडियो पर प्रसारित होने वाले मासिक मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समसामयिक विषयों के साथ-साथ सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों पर बात करते हैं। यहां लोग अपनी समस्याएं बताते हैं और सवाल भी पूछते हैं। 29 अक्टूबर 2023 को प्रसारित 106वीं कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मीराबाई को माता-बहनों के लिए प्रेरणापुंज बताया और देशवासियों को त्यौहारों की बधाई दी। वोकल फॉर लोकल पर जोर देने के साथ डिजिटल पेमेंट, खादी सहित कई अन्य मुद्दों पर भी बातचीत की। प्रस्तुत है मुख्य अंश...

- **मीराबाई :** देश की माता-बहन और बेटियों के लिए मीराबाई आज भी प्रेरणापुंज हैं। उस कालखंड में भी उन्होंने अपने भीतर की आवाज को ही सुना और रुढ़िवादी धारणाओं के खिलाफ खड़ी हुई। एक संत के रूप में भी वे हम सबको प्रेरित करती हैं।

- **खादी की बिक्री :** गांधी जयंती के अवसर पर दिल्ली के कनॉट प्लेस के स्टोर से खादी की रिकॉर्ड बिक्री हुई। दस साल पहले देश में जहां खादी उत्पादों की बिक्री 30 हजार करोड़ रुपये से भी कम की थी, अब ये बढ़कर सवा लाख करोड़ रुपये के आसपास पहुंच रही है।

- **आत्मनिर्भर भारत :** हमारी प्राथमिकता 'वोकल फॉर लोकल' हो और हम मिलकर 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को पूरा करें। ऐसे उत्पाद खरीदें जिसमें मेरे किसी देशवासी के पसीने की महक हो, मेरे देश के किसी युवा की प्रतिभा हो।

- **डिजिटल पेमेंट :** हमारे देश की शान बने यूपीआई डिजिटल पेमेंट सिस्टम से पेमेंट करने की आदत डालें। खरीदे गए उत्पाद के साथ सेल्फी नमो एप पर शेयर करें और वो भी मेड इन इंडिया स्मार्ट फोन से।

- **सरदार वल्लभभाई पटेल :** 31 अक्टूबर का दिन हम सभी के लिए बहुत विशेष होता है। इस दिन हम लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाते हैं। हम भारतवासी, उन्हें कई वजहों से याद करते हैं और श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

- **मेरा युवा भारत :** 31 अक्टूबर को एक बहुत बड़े राष्ट्रव्यापी संगठन की नींव रखी जा रही है। इस संगठन का नाम है - मेरा युवा भारत। मैं युवाओं से आग्रह करूंगा कि आप सभी मेरे MYBharat.Gov.in पर रजिस्टर करें और विभिन्न कार्यक्रम के लिए Sign Up करें।

- **बिरसा मुंडा :** भगवान बिरसा मुंडा हम सब के हृदय में बसे हैं। उन्होंने विदेशी शासन को कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने ऐसे समाज की परिकल्पना की थी, जहां अन्याय के लिए कोई जगह नहीं थी।

- **खेल में उपलब्धि :** इस समय देश में खेल का भी परचम लहरा रहा है। पिछले दिनों एशियाई खेल के बाद पैरा एशियाई खेल में भी भारतीय खिलाड़ियों ने जबरदस्त कामयाबी हासिल की है। इन खेलों में भारत ने 111 मेडल जीतकर नया इतिहास रच दिया है।

- **कर्तव्यनिष्ठ नागरिक :** असम के कामरूप मेट्रोपोलिटन जिला में अक्षर फोरम नाम का एक स्कूल बच्चों में, सतत विकास की भावना भरने का काम कर रहा है। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थी हर हफ्ते प्लास्टिक कचरा जमा करते हैं।

पूरन डाबर
समाजसेवी

सांस्कृतिक पुनर्जागरण का साक्षी अयोध्या

धन्य है नए भारत की अमृत पीढ़ी जो सदियों का इंतजार बीते कुछ वर्षों के अथक प्रयास से पूर्ण होते हुए देख रही है। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर देख रही है। सांस्कृतिक विरासत से जुड़े स्थल हों या धरोहर, सांस्कृतिक पुनर्जागरण के साक्षी बन रहे हैं। एक दौर था, जब देश में उस समय की पीढ़ी ने विदेशी आक्रांताओं द्वारा सांस्कृतिक विरासत से जुड़े धार्मिक स्थलों को टूटते देखा था, आजादी के बाद भी अनदेखी को अपनी आंखों के सामने देखा था। यह स्थिति तब थी जब किसी भी राष्ट्र की सफलता का परिचायक उसका सांस्कृतिक वैभव होता है।

इस 22 जनवरी को अयोध्या का दृश्य कुछ वैसा ही था जैसा 14 वर्ष के वनवास के बाद श्रीराम की अयोध्या वापसी के समय मनाई गई दीपावली। वर्ष 2024 के पहले महीने में ही दीपावली जैसा दृश्य विकास और विरासत के समागम का अद्भुत उदाहरण बन गया है, जिसे सदियों तक याद किया जाएगा क्योंकि आजादी के 7 दशक बाद समय का चक्र एक बार फिर घूमा है। देश अब लाल किले से 'गुलामी की मानसिकता से मुक्ति' और अपनी 'विरासत पर गर्व' की घोषणा कर रहा है जो काम सोमनाथ से शुरू हुआ था, वह अब एक अभियान बन गया है। आज अयोध्या में नव्य-भव्य-दिव्य राम मंदिर हर भारतीय की चेतना में अंकित हुआ है तो सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि का प्रतिबिंब बन गया है। काशी में विश्वनाथ धाम की भव्यता भारत के अविनाशी वैभव की गाथा गा रही है। आज महाकाल महालोक अमरता का प्रमाण दे रहा है। आज केदारनाथ धाम भी विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। बुद्ध सर्किट का विकास कर भारत एक बार फिर दुनिया को बुद्ध की तपोभूमि पर आमंत्रित कर रहा है। देश में राम सर्किट के विकास के लिए भी तेजी से काम हो रहा है। सही अर्थों में अब सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि राष्ट्र की प्राण वायु बनी है। दुनिया में कोई भी देश हो, अगर उसे विकास की नई ऊंचाई पर पहुंचना है तो उसे अपनी विरासत को संभालना ही होगा। भारत की सांस्कृतिक विरासत, हमें प्रेरणा देती है, हमें सही मार्ग दिखाती है। इसलिए आज का भारत, पुरातन और नूतन दोनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रहा है।

21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभवप्रयास। इसी सोच का परिणाम है कि आज अयोध्या के विकास के लिए हजारों करोड़ों रुपये की नई योजनाएं साकार हुई हैं। सड़कों का विकास हुआ है, चौराहों और घाटों का सौंदर्यीकरण हुआ है। नए इंफ्रास्ट्रक्चर बन रहे हैं। यानी अयोध्या का विकास नए आयाम छू रहा है। अयोध्या रेलवे स्टेशन के साथ साथ वर्ल्ड क्लास एयरपोर्ट का निर्माण भी हो चुका है। कनेक्टिविटी और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन का लाभ इस पूरे क्षेत्र को मिलेगा। अयोध्या के विकास के साथ-साथ रामायण सर्किट के विकास पर भी काम चल रहा है। यानी, अयोध्या से जो विकास अभियान शुरू हुआ, उसका विस्तार आसपास के पूरे क्षेत्र में होगा। इस सांस्कृतिक विकास के कई सामाजिक और अंतरराष्ट्रीय आयाम भी हैं। श्रृंगवेरपुर धाम में निषादराज पार्क का निर्माण, भगवान राम और निषादराज की 51 फीट ऊंची कांस्य प्रतिमा उस सर्वसमावेशी संदेश को भी जन-जन तक पहुंचाएगी जो समानता और समरसता के लिए संकल्पबद्ध करता है। इसी तरह, अयोध्या में क्वीन-हो मेमोरियल पार्क का निर्माण भारत और दक्षिण कोरिया अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के लिए, दोनों देशों के सांस्कृतिक रिश्तों को मजबूत करने का एक माध्यम बनेगा।

आजकल तो पूरा देश राममय है, राम जी की भक्ति में सराबोर है। लेकिन, प्रभु श्री राम का जीवन विस्तार, उनकी प्रेरणा, आस्था... भक्ति के दायरे से कहीं ज्यादा है। प्रभु राम, गवर्नेंस के, समाज जीवन में सुशासन के ऐसे प्रतीक हैं जो आपके संस्थान के लिए भी बहुत बड़ी प्रेरणा बन सकते हैं।

सुर्खियां

शिविर की शक्ति दंतेवाड़ा में सुकमा और बीजापुर जिलों की सीमा के बीच अग्रिम मोर्चे पर सुरक्षाकर्मी

सुरक्षा बलों का शिकंजा

छत्तीसगढ़ में वामपंथी उग्रवाद या माओवादियों से निपटने के लिए पिछली कांग्रेस सरकार की रणनीति 'विश्वास, विकास और सुरक्षा' पर आधारित थी, लेकिन राज्य की नई 'डबल इंजन' सरकार ने खुली जंग का ऐलान कर दिया है. उसका मानना है कि यह देश में माओवाद के ताबूत में आखिरी कील होगी.

केंद्र की गर्मियों में आम चुनाव से पहले ऑपरेशन शुरू करने की मंशा शायद कुछ ज्यादा ही महत्वाकांक्षी थी, इसीलिए 21 जनवरी को रायपुर में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुई बैठक में राज्य में माओवाद के खात्मे के लिए तीन साल का लक्ष्य रखा गया. बैठक में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, डीजीपी और सीआरपीएफ डीजी उपस्थित थे. लेकिन मौजूदा मुठभेड़ों, गिरफ्तारियों और आत्मसमर्पणों को देखा जाए तो इसमें संदेह नहीं कि माओवाद का वित्तपोषण करने वालों और उनको शह देने वाले पूरे तंत्र को नष्ट करने में लंबा वक्त लग सकता है. गृह मंत्रालय ने यह भी कहा है कि वह रकम के आवंटन और उसके इस्तेमाल में लचीला रुख अपनाएगा.

नए ऑपरेशन को सूर्य शक्ति नाम दिया गया है. शायद यह नाम तकरीबन 4,000 वर्ग किलोमीटर के घने जंगल के इलाके अबूझमाड़ के अंधियारे में रोशनी पहुंचाने के प्रतीक के तौर पर रखा गया है, जिसे माओवादियों की आखिरी पनाहगाह माना जाता है. यहां के 237 गांवों में तकरीबन 35,000 आबादी हैं, जिनमें ज्यादातर आदिवासी हैं, जहां सरकार लगभग पूरी तरह गैर-मौजूद है. स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ), जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के पांच दिवसीय (12-16 जनवरी) साझा अभियान

ऑपरेशन सूर्य शक्ति के दौरान बरामद हथियार

में कई हथियार कारखाने नष्ट किए गए और एक बैरल ग्रेनेड लांचर, दो एयर राइफलें, एक 12-बोर बंदूक, तीन इंसास मैगजीन, एक दूरबीन, दो जनरेटर, नौ बेंच क्लैंपिंग, ड्रिलिंग और पंचिंग मशीनें तथा माओवादी वर्दी व साहित्य बरामद किया गया. 16 जनवरी को कांकेर जिले में एक मुठभेड़ के बाद चार संदिग्ध माओवादियों—आयतु नुरेटी, सुरेश नुरेटी, बुधुराम पद्दा और मनोज हिचामी को गिरफ्तार किया गया था. उसी दिन बस्तर जिले के पंगनार जंगलों में एक अन्य डिप्टी कमांडर स्तर का माओवादी रतन कश्यप उर्फ सलाम एक अलग मुठभेड़ में मारा गया.

छत्तीसगढ़, खासकर बस्तर क्षेत्र में माओवादियों के खिलाफ केंद्र की कड़ी कार्रवाई में सूर्य शक्ति तो महज पहला ऑपरेशन है. इसी इलाके में राज्य में माओवाद से ग्रस्त 14 जिलों में से सात—बस्तर, कांकेर, कोंडागांव, दंतेवाड़ा, नारायणपुर, बीजापुर और सुकमा स्थित हैं. कथित तौर पर फील्ड कमांडरों को ऑपरेशन तेज करने की हरी झंडी दे दी गई है. बीएसएफ की तीन बटालियनों को ओडिशा के मलकानगिरी से छत्तीसगढ़ में भेजा जाएगा और इतनी ही तादाद में आइटीबीपी (भारत-तिब्बत पुलिस बल) के जवानों को अबूझमाड़ में तैनात किया जाएगा. खबरों के मुताबिक, बीएसएफ की एक बटालियन को पहले ही नारायणपुर जिले में छह नए ठिकाने बनाने का निर्देश दिया जा चुका है. आइटीबीपी की फिलहाल नारायणपुर, राजनांदगांव और कोंडागांव जिलों में लगभग आठ बटालियन हैं. इनमें एक बटालियन को उस कोर क्षेत्र में आगे बढ़ने को कहा गया है, जहां हथियारबंद माओवादी फिर एकजुट हुए हैं. पिछले कुछ महीनों में दक्षिण बस्तर में नौ नए सुरक्षा शिविर स्थापित किए गए हैं, और सुरक्षा बल बीजापुर, सुकमा और नारायणपुर मोर्चों पर माओवादियों से टकरा रहे हैं.

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, पिछले 10 वर्षों में नक्सली हिंसा की घटनाओं में 52 फीसद, मौतों में 70 फीसद और कुल नक्सल ग्रस्त जिलों की संख्या 96 से घटकर 45 हो गई है. केंद्र का यह भी मानना है कि माओवादी नेतृत्व बूढ़ा हो रहा है और लगातार कमजोर हो रहा है, इसीलिए आखिरी जोर के धक्के से माओवाद का खात्मा हो सकता है.

हालांकि, कुछ दूसरे लोग ऐसी खुशफहमी से खबरदार करेंगे. दरअसल शीर्ष सीपीआइ (माओवादी) नेतृत्व की दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी दूसरे राज्यों में काडर और वरिष्ठ और मध्यम पांत के नेताओं को लगातार भेजती है, चाहे वह तेलंगाना राज्य समिति हो या आंध्र-ओडिशा सीमा विशेष जोनल कमेटी. अबूझमाड़ पूरी तरह पुलिस-प्रशासन से शून्य इलाका है, जिसमें माओवादी काडरों को छत्तीसगढ़-ओडिशा सीमाई इलाके में प्रशिक्षण दिया जाता है. साथ ही, बस्तर में सुरक्षा बलों के बढ़ते फोकस के कारण माओवादियों ने ऑपरेशन के नए जोन बनाए हैं, जिनमें प्रमुख हैं एमएमसी यानी महाराष्ट्र मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ जोन और केकेटी यानी केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु क्षेत्र.

ऑपरेशन सूर्यशक्ति

- **उरपापाल, परेची, पांगुर, टेकरमेता, मुसपार्से और कुकुर समेत कई अन्य गांवों में 12 से 16 जनवरी के बीच चलाया गया**
- **यह स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ), जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) का एक संयुक्त ऑपरेशन था**
- **कांकेर जिले में 16 जनवरी को मुठभेड़ में 4 माओवादी आयतु नुरेटी (26 वर्ष), सुरेश नुरेटी (25 वर्ष), बुधुराम पद्दा (25 वर्ष) और मनोज हिचामी (22 वर्ष) गिरफ्तार**
- **टोडमा मिलिशिया प्लाटून का डिप्टी कमांडर रतन कश्यप उर्फ सलाम (31 वर्ष) बस्तर जिले में मुठभेड़ में मारा गया**

माओवादी घात लगाकर या गुरिल्ला हमले में माहिर हैं. वे आइईडी या बारूदी सुरंगें बिछाकर सुरक्षा बलों को भारी नुक्सान पहुंचा देते हैं और नतीजतन बड़ी संख्या में जवान हताहत हो जाते हैं. आइइडी का पता लगाने की अभी कोई टेक्नोलॉजी नहीं है. वे अपनी विध्वंसक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए आदिवासियों को भर्ती करते हैं.

यही वजह है कि ऑपरेशन की कामयाबी का दावा करने से बचा जाता है. क्या नई सरकार के आने के बाद माओवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ों में बढ़ोतरी हुई है? इस पर दक्षिण छत्तीसगढ़ में एक पुलिस अधिकारी सिर्फ यही कहते हैं, ''मुठभेड़ों में बढ़ोतरी की साधारण वजह है कि सुरक्षा बल ज्यादा ऑपरेशन की योजना बना रहे हैं. जितना ऑपरेशन होगा, मुठभेड़ों की संभावना उतनी ही अधिक होगी.''

हालांकि, औपचारिक तौर पर सुरक्षा बल ऑपरेशन थमने की बात से इनकार करते हैं. बस्तर के पुलिस महानिरीक्षक (आइजीपी) सुंदर राज पी. कहते हैं, ''सुरक्षा के नजरिए से मानसून के महीनों में नदियों के उफान और जंगलों में दुर्गम रास्तों के कारण ऑपरेशन में कमी आती है. मानसून के बाद के महीनों में, ऑपरेशन में तेजी आती है और गिरफ्तारी तथा मुठभेड़ दोनों में बढ़ोतरी होती है.''

आंकड़े भी इसकी गवाही देते हैं. जुलाई 2023 में बस्तर में माओवादियों और सुरक्षा बलों के बीच चार मुठभेड़ हुईं, और अगस्त, सितंबर और अक्तूबर में क्रमशः चार, दो और दो मुठभेड़ हुईं, तो नवंबर में मुठभेड़ों की संख्या तेजी से बढ़कर 12 और दिसंबर में नौ हो गई. बेशक, माओवादियों के जब-तब हमले चिंता का सबब बने हुए हैं, खासकर वे बारूदी सुरंगों में फंसकर मरने वाले सुरक्षा बलों के हथियार उठा ले जाते हैं. लेकिन अत्याधुनिक हमले की रणनीतियों के साथ बस्तर में मुठभेड़ माओवाद के खिलाफ जंग में महत्वपूर्ण हो सकती है, जो उसे अंतिम और निर्णायक चरण में ले जाएगी.■

बर्फबारी का सपना
गुलमर्ग की बर्फरहित ढलानों पर घुड़सवारी का आनंद लेते पर्यटक

कश्मीर

बिना बर्फ की सर्दी

चारों तरफ बर्फ की मोटी परत से ढंके ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और हरे-भरे ढलानों के बीच बहती जलधाराएं... धरती के स्वर्ग कश्मीर की कल्पना करते हुए किसी के भी जेहन में यही तस्वीर उभरती है. लेकिन जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों ने दुनिया के अन्य हिस्सों की तरह इन नजारों को भी कुछ धूमिल कर दिया है. इस वर्ष इसका सबसे ज्यादा असर नजर आया... भीषण ठंड में बिना बर्फ के पहाड़ों की चोटियां एकदम सूनी नजर आ रही हैं और घाटियां भी बर्फ की परत से वंचित हैं जबकि यही ज्यादातर लोगों की आजीविका का साधन है.

जलवायु परिवर्तन के कारण बदला परिदृश्य 8,500 फुट की ऊंचाई पर स्थित दुनिया के सबसे ऊंचे स्की रिजॉर्ट्स में एक गुलमर्ग में कहीं ज्यादा साफ तरीके से नजर आ रहा है. देवदार के जंगलों के बीच मखमली बर्फ से घिरा एक लंबा-चौड़ा और प्राकृतिक सुंदरता से भरा यह क्षेत्र स्कीइंग के शौकीनों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है. सर्दियों के समय तो यहां का नजारा अद्भुत होता है. नवंबर से मध्य अप्रैल तक यह बर्फ से पूरी तरह ढंका रहता है और फिर जून तक ऊपरी इलाकों में हर तरफ बर्फ की एक मोटी चादर बिछी रहती है. लेकिन इस बार यह नजारा नदारद है. ढलानों पर बर्फ का नामो-निशान नहीं है और ऊंची चोटियों पर भी महज पतली-सी परत ही नजर आ रही है. आमतौर पर शून्य से नीचे रहने वाला तापमान भी अब 5 डिग्री सेल्सियस के आसपास ठहरकर हैरान कर रहा है.

गुलमर्ग के पास नीलवार तकिया यूसुफ शाह गांव के गुलजार अहमद चोपन कहते हैं, ''बर्फ की हमारे लिए वही अहमियत है जो कृषि क्षेत्रों के लिए सिंचाई की है. यह सूखे जैसी स्थिति है.'' आसपास के गांवों के अन्य लोगों की तरह चोपन भी गर्मियों में पर्यटकों को घोड़े पर बैठाकर आजीविका चलाते हैं. सर्दियों में वे पर्यटकों को स्लेज की सवारी कराते हैं. पांच बच्चों के पिता चोपन कहते हैं, ''यह पहली बार है जब हम जनवरी के मध्य में आजीविका के लिए घोड़ों पर निर्भर हैं.'' चोपन के लिए इस समय बच्चों की ट्यूशन फीस भर पाना भी दूभर हो गया है. उनका स्लेज एक तरफ लोहे की बाड़ से बंधा पड़ा है. उनके मुताबिक, ''मैं सुबह 9 बजे से पर्यटकों का इंतजार कर रहा हूं. अब घूमने आने वालों की संख्या भी बहुत कम हो गई है. पहले तो मैं हर साल पर्यटकों को स्लेज की सवारी कराकर हर रोज 1,500-2,000 रुपए कमा लेता था. अब मुश्किल से 350-400 रुपए की कमाई हो पाती है.''

पर्यटकों ने गुलमर्ग के लगभग सभी होटल फरवरी अंत तक बुक करा रखे थे, जिनमें अधिकांश स्कीइंग करने वाले थे. लेकिन बिना बर्फबारी वाली सर्दी के कारण कई लोगों ने यात्रा रद्द कर दी. कोलाहोई ग्रीन हाइट्स में बर्फ के बीच बना देश का पहला ग्लास इग्लू कैफे पर्यटकों के बीच खासा लोकप्रिय रहा है. अब, खाली ग्लास इग्लू कयूम्बिकल्प होटल के महाप्रबंधक हामिद मसूदी की चिंता बढ़ा रहे हैं. वे स्कीइंग के लिए स्की, बूट, चश्मे और स्नोबोर्ड जैसे सामान किराए पर देने वाली दुकानों की दुर्दशा के बारे में भी बताते हैं. मसूदी कहते हैं, ''हमारे पास तो फिर भी कुछ पर्यटक हैं लेकिन इन दुकानों में काम करने वाले लोगों और स्की प्रशिक्षकों का क्या होगा जो सर्दियों के महीनों में होने वाली कमाई पर निर्भर हैं.''

बर्फबारी न होने के कारण खेलो इंडिया विंटर गेम बाधित होने से प्रशासन को भी नुक्सान हो रहा है. पिछली तीन सर्दियों में पर्यटकों की भारी भीड़ ने कश्मीर पर्यटन विभाग को खेल और अन्य गतिविधियों जैसे आयोजनों के लिए प्रेरित किया था. गोल्फ क्लब परिसर में मौजूद सहायक निदेशक, गुलमर्ग पर्यटन जाहिद-उर-रहमान कहते हैं कि स्की लिफ्ट से लेकर होटल तक सब कुछ पर्यटकों की मेजबानी के लिए तैयार है बस एकमात्र अभाव यही है कि बर्फ नहीं है.

मौसम विज्ञान के नजरिये से पश्चिमी विक्षोभ की कमी के कारण जनवरी में लंबे समय तक शुष्क मौसम रहा, जबकि यही बर्फबारी का चरम मौसम होता है. कश्मीर में सर्दियों की सबसे कठिन अवधि को चिल्ले कलां कहा जाता है, जिसमें 21 दिसंबर के आसपास से अगले 40 दिनों तक तापमान अक्सर शून्य से 15 डिग्री सेल्सियस तक नीचे चला जाता है. साथ ही काफी बर्फबारी और बारिश होती है. श्रीनगर में भारतीय मौसम विभाग के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. मुख्तार अहमद का कहना है कि बर्फबारी में कमी की वजह से कश्मीर में कृषि, बिजली, पेयजल, सिंचाई और पहले से ही घट रहे ग्लेशियरों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है. वे शुष्क मौसम को ग्लोबल वार्मिंग और अल नीनो का नतीजा बताते हैं. वे बताते हैं, ''पहले तो बारिश बर्फीले फाहों के रूप में होती थी और अक्तूबर से मार्च तक होती थी. लेकिन अब बेहद सर्द अवधि दिसंबर-जनवरी तक ही सीमित हो गई है. इस वर्ष तो अल नीनो की वजह से जनवरी ही शुष्क बीत रही है.''

मुश्किल समय

- इस बार सर्दियों में कश्मीर में बस नाममात्र की ही बर्फबारी हुई है
- मौसम विभाग का कहना है कि यह सब पश्चिमी विक्षोभ की कमी का नतीजा है, जिसकी वजह ग्लोबल वार्मिंग और अल नीनो है
- गुलमर्ग के स्की रिजॉर्ट में पर्यटन बुरी तरह प्रभावित होने से कई लोगों के लिए आजीविका का संकट उत्पन्न हो गया है
- सर्दियों में पर्याप्त बर्फबारी न होने से कश्मीर में सिंचाई, बिजली और पेयजल आपूर्ति पर भी खासा असर पड़ रहा है

पहली चाल से जीत की जुगत

पिछले साल चुनाव आयोग ने 9 अक्तूबर को चार राज्यों के विधानसभा चुनाव की तारीखें घोषित की थीं. लेकिन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इसके काफी पहले चुनावी राज्यों-मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के लिए कई उम्मीदवारों के नामों पर मुहर लगा चुकी थी. तब इसे भाजपा की ओर से एक नया चुनावी प्रयोग माना गया. हालांकि जब 3 दिसंबर, 2023 को इन राज्यों के चुनाव परिणाम आए तो मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा ने जीत हासिल करके यह साबित कर दिया कि उसका यह प्रयोग पूरी तरह सफल रहा. इससे उत्साहित भाजपा 2024 के लोकसभा चुनावों में भी इस प्रयोग को दोहराने की योजना बना रही है. पार्टी के रणनीतिकारों में से एक मजबूत धड़ा ऐसा है जो यह चाहता है कि फरवरी के पहले पखवाड़े में कुछ सीटों पर भाजपा अपने लोकसभा उम्मीदवारों के नामों की घोषणा कर दे.

बीते साल के विधानसभा चुनाव की तारीख घोषित किए जाने से पहले भाजपा ने मध्य प्रदेश की 230 में से 79 विधानसभा सीटों और छत्तीसगढ़ की 90 में से 21 विधानसभा सीटों पर अपने उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर दी थी. इनमें से अधिकांश सीटें ऐसी थीं, जिन पर भाजपा को कमजोर माना जाता था. कुछ सीटें तो ऐसी भी थीं, जहां पिछले कुछ चुनावों से पार्टी लगातार हार रही थी. लेकिन इनमें से ज्यादातर पर इस बार उसका प्रदर्शन अच्छा रहा.

मध्य प्रदेश की 79 में से 53 यानी तकरीबन 70 प्रतिशत सीटों पर पार्टी को जीत मिली. छत्तीसगढ़ में भाजपा इस दर पर सफलता हासिल नहीं कर पाई. पार्टी 21 सीटों में से 10 ही जीत पाई. हालांकि, सफलता की दर के 50 प्रतिशत से भी कम रहने के बावजूद पार्टी ने इसे अपने लिए अच्छा प्रदर्शन इस वजह से माना कि इन सीटों में से ज्यादातर पर वह 2018 के चुनाव में

पुख्ता योजना
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा

हारे थी. ये तथ्य बताते हैं कि चुनाव की घोषणा से पहले मुश्किल सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित करने की भाजपा की रणनीति मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों में काफी हद तक उसके पक्ष में गई.

यही वजह है कि लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा अपनी पहली सूची जनवरी के अंत तक या फरवरी के पहले पखवाड़े में जारी कर सकती है. पार्टी को चुनावी रणनीति बनाने में लगे नेताओं से अनौपचारिक बातचीत में पता चलता है कि पहली सूची में उन सीटों पर उम्मीदवारों के नाम का ऐलान करने की योजना है जिन्हें भाजपा अपने लिए अपेक्षाकृत मुश्किल मानती है.

भाजपा ने 2023 की शुरुआत में पूरे देश में ऐसी 160 सीटों की पहचान की थी और इन पर तैयारी तब से ही शुरू कर दी गई थी. बाद में इस सूची में चार सीटों को और जोड़ा गया. अब इनकी संख्या 164 है. पार्टी ने इन सीटों को क्लस्टर में बांटकर हर केंद्रीय मंत्री या पार्टी के प्रमुख नेता को 2 से 3 सीटों की जिम्मेदारी दी थी. इन सीटों के प्रभारी मंत्री पिछले एक साल में कई बार इन निर्वाचन क्षेत्रों में गए और वहां के स्थानीय कार्यकर्ताओं और नेताओं से बातचीत की. साथ ही इन क्षेत्रों में पार्टी ने विस्तारकों को भी लगाया है. पार्टी ने अलग-अलग चरण में बाकायदा इन्हें प्रशिक्षित करके लोकसभा क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजा है.

इन सीटों पर केंद्रीय मंत्री समेत पार्टी के वरिष्ठ नेता जाएं और स्थानीय कार्यकर्ताओं-नेताओं से उनका संवाद हो, यह सब सुनिश्चित करने के लिए भाजपा ने एक संयोजन समिति बनाई है. राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े इसके संयोजक हैं. उनके अलावा केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, भूपेंद्र यादव, जी. किशन रेड्डी, राष्ट्रीय महासचिव सुनील बंसल और राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा समिति के सदस्य हैं.

इन मुश्किल सीटों को चार श्रेणियों में बांटा गया है-सर्वोत्तम, अच्छी, सुधार योग्य और बेहद खराब. सर्वोत्तम के तहत वे सीटें हैं, जहां भाजपा ने पिछले चुनाव में जीत भले न हासिल की हो लेकिन अगर थोड़ी मेहनत करे तो जीतने की स्थिति में आ सकती है. अत्यंत खराब श्रेणी में वे सीटें हैं, जहां पार्टी या तो कभी नहीं जीती या फिर बहुत लंबे समय से इन सीटों पर जीत नहीं हासिल कर पाई है.

इस बारे में सीएसडीएस के प्रोफेसर और लोकनीति के सह-निदेशक संजय कुमार कहते हैं, ''भाजपा के लिए चुनौती वाली इन सीटों की सूची में सोनिया गांधी की रायबरेली, कमलनाथ के प्रभुत्व वाली छिंदवाड़ा और शरद पवार के असर वाली बारामती जैसी 20-25 सीटें शामिल हैं. 2019 में भाजपा ने राहुल गांधी की सीट अमेठी से जीत हासिल की. यह सिर्फ एक सीट नहीं होती बल्कि इनके जीतने से यह संदेश जाता है कि भाजपा ने विपक्षी दलों का एक मजबूत किला ढहा दिया है.''

भाजपा अपने लिए जिन सीटों को मुश्किल मान रही है, उनमें सबसे ज्यादा 24-24 सीटें पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश में हैं. वहीं केरल में ऐसी सीटों की संख्या 18 है और उत्तर प्रदेश में 16 और महाराष्ट्र में इतनी ही संख्या में सीटें हैं.

साथ ही भाजपा की पहली सूची में पार्टी के शीर्ष उम्मीदवारों के नामों की घोषणा भी संभव है. इनमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की सीटों की घोषणा भी हो सकती है. पार्टी का मानना है कि बड़े नामों की उम्मीदवारी पहले घोषित करने से आसपास की मुश्किल सीटों पर उसे लाभ मिल सकता है.

पार्टी की चुनावी रणनीतियां तैयार करने में जुटे भाजपा के एक राष्ट्रीय पदाधिकारी बताते हैं, ''वैसे तो हर चुनाव अलग होता है और उसकी रणनीतियां भी अलग होती हैं लेकिन किसी चुनाव के कुछ सफल प्रयोग दूसरे चुनावों में भी आजमाए जाते हैं. मुश्किल सीटों पर थोड़ा समय रहते उम्मीदवारों की घोषणा ऐसी ही एक रणनीति है. हालांकि, पार्टी के अंदर इस प्रस्ताव पर कुछ लोग अलग राय रखते हैं लेकिन अभी जो हम सेंटरेट सर्वे करा रहे हैं, उसका काम पूरा होने वाला है. इसके बाद संभव है कि मुश्किल सीटों पर उम्मीदवारों के नामों की घोषणा हो जाए.''

भाजपा के लिए 2024 के लोकसभा चुनाव में एक चुनौती यह भी है कि उसे 2019 के मुकाबले अधिक सीटों पर चुनाव लड़ना पड़ेगा. दरअसल, पार्टी 2019 में 436 सीटों पर चुनाव लड़ी थी. इनमें से 303 पर उसे जीत हासिल हुई थी. 2024 में पार्टी जिन सीटों पर चुनाव लड़ेगी, उनकी संख्या 450 से ज्यादा होगी. इस बार पार्टी ने आंतरिक स्तर पर 350 सीटों का आंकड़ा पार करने का लक्ष्य रखा है. इसके लिए पार्टी इस रणनीति के साथ जमीनी स्तर पर काम कर रही है कि उसे अपने सहयोगी दलों के साथ मिलकर हर बूथ पर 51 फीसद वोट हासिल करने हैं.

हालांकि यह काम आसान नहीं होने जा रहा. पिछले चुनाव में भाजपा के साथ बिहार में जद (यू), महाराष्ट्र में शिवसेना, पंजाब में शिरोमणि अकाली दल और तमिलनाडु में एआइएडीएमके जैसे दल थे. इस वजह से इन राज्यों में भाजपा ने अपेक्षाकृत कम सीटों पर चुनाव लड़ा था. 2024 में पार्टी को इन राज्यों में और अधिक सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने होंगे. यही वजह है कि पार्टी की मुश्किल सीटों की संख्या बढ़कर 164 हो गई है और 'मिशन 350' को पूरा करने के लिए इन सीटों पर बेहतर स्ट्राइक रेट हासिल करना पार्टी के लिए बेहद अहम है.

तो क्या मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में सफल रहा यह प्रयोग लोकसभा चुनाव में भी सफल रहेगा. इसके जवाब में भाजपा के चुनाव प्रबंधन में लगे एक केंद्रीय मंत्री कहते हैं, ''यह तो चुनाव परिणाम से ही पता चलेगा लेकिन आप इतना यकीन कीजिए कि भाजपा कई स्तर के सर्वे और विभिन्न माध्यमों से मिलने वाली जमीनी हकीकतों के आधार पर ही उम्मीदवारों के नामों की घोषणा करती है. वहीं, मुश्किल सीटों पर हम लगातार तकरीबन दो वर्षों से काम कर रहे हैं. इसलिए, पार्टी को पूरी उम्मीद है कि हमारा यह प्रयोग सफल रहेगा.'' ■

कितने काम की रणनीति

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के लिए 9 अक्तूबर, 2023 को विधानसभा चुनाव की तारीखें घोषित हुई थीं लेकिन भाजपा ने इससे पहले ही कुछ सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा कर दी थी

मध्य प्रदेश
कुल सीटें 230

पहली सूची (17 अगस्त, 2023)
घोषित उम्मीदवार 39
जीते 28

दूसरी सूची (25 सितंबर, 2023)
घोषित उम्मीदवार 39
जीते 24

तीसरी सूची (26 सितंबर)
घोषित उम्मीदवार 1
जीते 1

छत्तीसगढ़
कुल सीटें 90

पहली सूची (17 अगस्त, 2023)
घोषित उम्मीदवार 21
जीते 10

नहीं करना किसी से गठजोड़

अमीष अग्निहोत्री

लखनऊ के मॉल एवेन्यू इलाके में 400 मीटर के फासले पर मौजूद यूपी कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के प्रदेश कार्यालयों के भावी संबंधों पर 15 जनवरी को सबकी नजर थी. मौका बसपा की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती के 68वें जन्मदिन का था. हर बार की तरह 'बहन जी' मीडिया से मुखातिब थीं. हल्का गुलाबी सूट पहने मायावती अपने चिरपरिचित अंदाज में पार्टी दफ्तर में दाखिल हुईं. जैसे ही बसपा सुप्रीमो ने साथ में लाए कागजों को पढ़ना शुरू किया, यूपी में बसपा के इंडिया गठबंधन में शामिल होने की संभावना धूमिल होती चली गई. मायावती ने 1993 में सपा और 1996 में कांग्रेस से किए गए गठबंधनों का जिक्र करते हुए कहा कि इससे बसपा को फायदा कम, नुक्सान ज्यादा हुआ है. बसपा अध्यक्ष का तर्क था कि अकेले चुनाव लड़ने पर 2007 में बसपा ने बहुमत की सरकार बनाई थी. उन्होंने कहा, ''बसपा लोकसभा चुनाव गरीब, अति पिछड़े और उपेक्षित लोगों के बूते अकेले ही लड़ेगी और केंद्र की सत्ता में प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करेगी.''

जन्मदिन पर कार्यकर्ताओं को करीब आधा घंटे के संदेश में मायावती ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनकी पार्टी फिलहाल इंडिया गठबंधन में शामिल नहीं होने जा रही. बसपा के खिसकी गठबंधन में शामिल होने की अटकलें उस वक्त तेज हो गई थीं जब यूपी कांग्रेस के नवनियुक्त प्रभारी अविनाश पांडेय ने 7 जनवरी को अपने लखनऊ प्रवास के दौरान बसपा को साथ लेने की पुरजोर वकालत की थी. मायावती ने भाजपा के साथ कांग्रेस को भी जातिवादी, पूंजीवादी, सामंतवादी और सांप्रदायिक बताकर देश की सबसे पुरानी पार्टी के साथ अपने रुख को स्पष्ट कर दिया. उनका संबोधन समाप्त होते ही यह तय हो गया कि लोकसभा चुनाव के दौरान यूपी में त्रिकोणीय राजनीतिक संघर्ष का मैदान सजने जा रहा है.

असल में मायावती के सामने तीन विकल्प थे. पहला तो यह कि बसपा भाजपा विरोधी इंडिया गठबंधन का हिस्सा बने. यह स्थिति मायावती के लिए बहुत सहज नहीं थी. चूंकि सपा यूपी में इंडिया गठबंधन की अगुआ है इसलिए बसपा के समाजवादी पार्टी (सपा) के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव में जाना पार्टी के जनाधार को और कम कर सकता था. इसके अलावा, केवल कांग्रेस से चुनावी तालमेल करने पर बसपा को कोई लाभ नहीं मिलता. इसलिए मायावती ने अकेले चुनाव लड़ने के तीसरे विकल्प को चुना.

इंडिया गठबंधन में शामिल होकर पार्टियों के बीच आपसी खींचतान में फंसने की बजाय बसपा सुप्रीमो मायावती बहुजन समाज पार्टी को मजबूत करना चाहती हैं

लखनऊ के बाबा साहेब आंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्रोफेसर सुशील पांडेय बताते हैं, ''पिछले कुछ चुनावों से जिस तरह बसपा का जनाधार घटा है और उसकी सीटें कम हुई हैं उससे मायावती काफी चिंतित हैं. इस कारण से मायावती ने किसी गठबंधन में उलझने की बजाय संगठन को मजबूत करने की रणनीति अपनाई है. हालांकि लोकसभा चुनाव के बाद केंद्र में सरकार का समर्थन करने का विकल्प खुला रखकर उन्होंने अपने कैडर में भी जोश भरने की

हाथी न उठा पाया समझौते का बोझ

1991: बसपा के संस्थापक कांशीराम ने 1991 में मुलायम सिंह यादव के सहयोग से इटावा लोकसभा सीट पर एक लाख से अधिक वोटों के अंतर से जीत दर्ज की थी. इसके बाद कांशीराम और मुलायम सिंह यादव के बीच नजदीकियां बढ़ी थीं.

1993: बसपा और सपा ने 1993 का विधानसभा चुनाव गठबंधन करके लड़ा. सपा ने 256 और बसपा ने 164 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे. गठबंधन के 176 उम्मीदवार (सपा -109, बसपा-67) जीते और मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में सरकार बनी.

1995: मुलायम सरकार से समर्थन वापस लेने से गुस्साए सपा कार्यकर्ताओं ने 2 जून, 1995 को लखनऊ के मीराबाई गेस्ट हाउस में मायावती पर हमला किया. भाजपा ने समर्थन देकर मायावती के नेतृत्व में सरकार बनवाई. 17 अक्टूबर, 1995 को मायावती सरकार गिर गई.

1996: बसपा ने 1996 का विधानसभा चुनाव कांग्रेस से गठबंधन करके लड़ा. बसपा ने 296 और कांग्रेस ने 126 सीटों पर चुनाव लड़ा. बसपा ने 67 और कांग्रेस ने 33 सीटें जीतीं. चुनाव बाद बसपा ने कांग्रेस का साथ छोड़ दिया.

1997: मायावती ने भाजपा के साथ मिलकर एक बार फिर सरकार बना ली. लेकिन लेकिन छह महीने के बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया. भाजपा ने बसपा के विधायकों को तोड़कर अपने साथ मिला लिया और फिर सरकार बनाई.

2002: इस साल विधानसभा चुनाव के बाद बसपा और भाजपा ने एक बार फिर मिलकर सरकार बनाई. मायावती तीसरी बार मुख्यमंत्री बनीं. वर्ष 2003 में भाजपा से नाराजगी के चलते मायावती ने इस्तीफा दे दिया और सरकार गिर गई.

2019: सपा और बसपा ने पुरानी अदावत भुलाकर 2019 का लोकसभा चुनाव गठबंधन करके लड़ा. बसपा ने 38 और सपा ने 37 सीटों पर उम्मीदवार उतारे. बसपा ने 10 और सपा ने पांच सीटें जीतीं. चुनाव के बाद मायावती ने सपा से गठबंधन तोड़ लिया.

कोशिश की है.''

मायावती की सबसे बड़ी चिंता अपने उस वोट बैंक को लेकर है जो पिछले कुछ चुनावों से दूसरी पार्टियों के साथ जुड़ गया है. इसके चलते 2007 में अपने बूते पर सरकार बनाने वाली बसपा 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव में महज एक सीट पर सिमट गई. हालांकि बसपा ने 12.9 प्रतिशत वोट हासिल किए और यूपी की तीसरी सबसे बड़ी राजनैतिक ताकत बनी रही. मायावती को सबसे ज्यादा नाराजगी सपा से है जिसके साथ मिलकर पार्टी ने 2019 का लोकसभा चुनाव लड़ा था और 10 सीटें (सपा ने पांच) जीती थीं. 2019 के बाद जिस तरह सपा ने बसपा के वोट बैंक और नेताओं में सेंध लगाई है, उससे मायावती काफी खफा हैं. इंडिया गठबंधन में बसपा को शामिल न करने को लेकर सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बयान दिया और बाद में सपा कार्यकर्ताओं से बसपा प्रमुख का सम्मान करने की नसीहत दी थी. इस पर मायावती का कहना था, ''सोची-समझी रणनीति के तहत बसपा के लोगों को गुमराह करने के लिए अखिलेश ने गिरगिट की तरह रंग बदला. इनसे सावधान रहें.'' अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जिस तरह से भगवा खेमे ने प्रतीकों के जरिए दलित मतदाताओं को साधने की कोशिश की है, उससे भी मायावती सतर्क हो गई हैं. इसलिए मायावती ने 22 जनवरी को अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह का स्वागत तो किया लेकिन इसमें शामिल होने का निर्णय चालाकी से टाल दिया.

मायावती ने फिलहाल लोकसभा चुनाव की तैयारियों पर फोकस किया है. पार्टी ने यूपी के हर कोऑर्डिनेटर से उनके संबंधित जिलों में संभावित उम्मीदवारों की सूची तलब की है. बसपा के 10 सांसदों में ज्यादातर पार्टी से अलग राह पकड़े दिखाई दे रहे हैं. अमरोहा से सांसद दानिश अली को कांग्रेस में नजदीकियों के चलते पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है. जौनपुर से सांसद श्याम सिंह यादव कई मौकों पर भाजपा नेताओं की तारीफ कर चुके हैं. बिजनौर से सांसद मलूक नागर पिछले वर्ष भाजपा सरकार के बजट की तारीफ कर चर्चा में आए थे तो श्रावस्ती के सांसद रामशिरोमणि वर्मा को भी अपना दल और भाजपा से नजदीकियों की चर्चा है. लालगंज सांसद संगीता आजाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कर चर्चा बटोर चुकी हैं. गाजीपुर से सांसद अफजाल अंसारी और अंबेडकर नगर के सांसद रितेश पांडेय समय-समय पर सपा से करीबी दिखा चुके हैं. मायावती अब अपने मौजूदा सांसदों की जगह नए उम्मीदवारों की तलाश में जुटी हैं. इसी क्रम में बसपा ने सहारनपुर से मौजूदा सांसद हाजी फजलुर्रहमान वर्क को नजरअंदाज करते हुए इस सीट पर माजिद अली को लोकसभा प्रभारी घोषित किया है. भतीजे आकाश आनंद को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने के साथ मायावती ने खुद को उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड का प्रभारी बनाए रखा.

अब मायावती लोकसभा चुनाव से पहले पूरे यूपी का दौरा करने की योजना को अंतिम रूप देने में व्यस्त हैं. बसपा के लगातार गिरते ग्राफ को संभालकर मायावती इसे किस तरह ऊपर उठा पाएंगी ? यह लोकसभा चुनाव के नतीजे ही बताएंगे.■

परम्परा की डोर

भौगोलिक संकेतकों के ज़रिए भारतीय हस्तशिल्प विरासत को नई ऊंचाई देना

भौगोलिक संकेतक (जीआई) उत्पादों पर लगा एक ऐसा लेबल या संकेत है, जिससे पता चलता है कि संबंधित उत्पाद किसी खास भौगोलिक क्षेत्र का है। जिसमें उस क्षेत्र के विशिष्ट गुण, खूबियां और ख्याति समाहित हैं। जीआई की अवधारणा एक ट्रेडमार्क या ब्रांड से कहीं अधिक व्यापक हैं। यह एक ऐसा प्रमाण है जिससे पता चलता है कि कोई उत्पाद अपनी उत्पत्ति के भौगोलिक स्थान की वजह से कुछ विशिष्टताएं रखता है। ऐसे उत्पादों का स्रोत कोई शहर, क्षेत्र या देश हो सकता है। जीआई टैग का मूल तत्व विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र और उत्पाद के बीच आपसी संबंध में निहित है। इसमें संबंधित उत्पाद के गुण, विशेषताएं या ख्याति अनिवार्य रूप से उसके मूल स्थान से संबंधित होती है।

भारत की विशाल सांस्कृतिक और कारीगरी संबंधी विविधता की झलक इसके भौगोलिक संकेतकों (जीआई) के मजबूत पोर्टफोलियो में दिखती है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी मार्गदर्शन और केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण, वस्त्र मंत्री श्री पीयूष गोयल के नेतृत्व में सरकार जीआई टैग वाले उत्पादों को प्रोत्साहित और संरक्षित करने की दिशा में लगातार काम कर रही है। उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) की रणनीतिक पहलों और लगातार पूर्ण समर्पण के साथ काम करने की प्रतिबद्धता ने आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक मंच पर भारत के विशिष्ट उत्पादों को उभारने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जीआई टैग: कारीगरों का सशक्तिकरण, संस्कृति और भारतीय हस्तशिल्प विरासत को समृद्ध करना

भारत के हथकरघा क्षेत्र में भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग को लागू करने से कारीगरों और बुनकरों की आर्थिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। विभिन्न क्षेत्रों के अनूठे उत्पादों को पहचानकर और उन्हें सुरक्षा प्रदान करके, जीआई टैग ने एक विशिष्ट बाजार बनाने में मदद की है, जहां इन उत्पादों की प्रामाणिकता की वजह से इनकी अधिक कीमत मिलती है। यह विशेष रूप से छोटे पैमाने पर काम करने वाले उन कारीगरों और स्थानीय समुदायों के लिए परिवर्तनकारी रहा है, जो पारंपरिक हथकरघा तकनीकों पर निर्भर रहते हैं। जीआई टैग ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए बाजार के अवसर खोले हैं, जिससे इन कारीगरों की आय और वित्तीय स्थिरता में वृद्धि हुई है। जीआई टैग के साथ मिलने वाली पहचान उत्पादों में महत्वपूर्ण मूल्य जोड़ती है। जीआई टैग द्वारा विशिष्टता और गुणवत्ता की गारंटी के बारे में ग्राहक तेजी से जागरूक हो रहे हैं और अधिक कीमत चुकाने को भी तैयार हैं। इससे उत्पादकों को सीधा लाभ होता है। इससे पारंपरिक शिल्प के प्रति लोगों में नए सिरे से रुचि पैदा हुई है। इससे उन कारीगरों को वित्तीय लाभ मिल रहा है जो बड़े पैमाने पर उत्पादित होने वाली वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। जीआई-टैग युक्त उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण ग्रामीण और कम विकसित क्षेत्रों में रोजगार के अधिक अवसर पैदा हुए हैं, जिससे इन क्षेत्रों के आर्थिक विकास में योगदान मिला है।

आर्थिक लाभ के अलावा जीआई टैग भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीआई टैग वाला प्रत्येक हथकरघा उत्पाद किसी क्षेत्र विशेष के विशिष्ट पारंपरिक कौशल, इतिहास और सांस्कृतिक पहचान की कहानी बयां करता है। तेजी से आधुनिक होती दुनिया में पारंपरिक शिल्प कौशल का संरक्षण महत्वपूर्ण है। जीआई टैग के

माध्यम से इन शिल्पों की रक्षा करके, भारत न केवल अपनी विविध सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण कर रहा है बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए सदियों पुराने कौशल और ज्ञान का हस्तांतरण भी सुनिश्चित करता है। यह सांस्कृतिक संरक्षण कई समुदायों के लिए निरंतरता और पहचान की भावना बनाए रखने में महत्वपूर्ण है। जीआई-टैग वाली वस्तुओं के उत्पादन से जुड़ा गौरव अवसर युवा पीढ़ी के बीच पारंपरिक शिल्प में रुचि और गौरव को पुनर्जीवित करता है। साथ ही जीआई टैग यह भी सुनिश्चित करता है कि ये अनमोल कौशल कहीं गुमनामी में न खो जाए। व्यापक अर्थ में देखा जाए तो जीआई संरक्षण वैश्विक मंच पर भारत की सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने, अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने और भारत की कलात्मक विरासत के प्रति प्रशंसा भाव विकसित करने में मदद करता है।

विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय जीआई-मान्यता प्राप्त हस्तशिल्प में भारत की समृद्ध विविधता

भारत में 514 से अधिक जीआई टैग वाले पंजीकृत उत्पाद हैं। इनमें 275 से अधिक हस्तशिल्प क्षेत्र से संबंधित हैं। इसमें हथकरघा वस्त्र शामिल हैं, जो देश की समृद्ध वस्त्र परंपराओं और कुशल शिल्प कौशल का प्रमाण है। ये जीआई टैग विभिन्न श्रेणियों को कवर करते हैं जो न केवल हथकरघा साड़ियों का प्रतिनिधित्व करते हैं बल्कि असंख्य अन्य हस्तशिल्पों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। ये उत्पाद हर भारतीय राज्य की भौगोलिक विविधता और अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं। उत्तर प्रदेश 39 जीआई टैग के साथ सबसे आगे है। यह बनारसी साड़ियों समेत जटिल हथकरघा में इसकी प्रमुखता का प्रतिबिंब है। इससे थोड़ा ही पीछे 35 जीआई टैग के साथ तमिलनाडु है। यह राज्य कांचीपुरम सिल्क जैसे उत्कृष्ट हथकरघा वस्त्रों के उत्पादन के लिए जाना जाता है। विविधताओं को समेटे भारत देश में कर्नाटक और राजस्थान जैसे राज्यों के पास क्रमशः 19 और 17 जीआई टैग हैं। यह उनके अद्वितीय क्षेत्रीय हस्तशिल्प और वस्त्र परंपरा के प्रतीक हैं।

गुजरात, केरल और ओडिशा में से हर राज्य के पास 15 जीआई टैग हैं। ये हथकरघा वस्त्र और अन्य हस्तशिल्पों में इन राज्यों की समृद्ध परंपरा की कहानी बयां कर रहे हैं। इस समृद्ध विरासत में योगदान देने वाले अन्य राज्यों में आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। इनमें से हर राज्य के पास 14 जीआई टैग हैं। ये पारंपरिक साड़ियों से लेकर धातु शिल्प जैसे उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रदर्शित करते हैं। अन्य राज्यों के साथ—साथ जम्मू और कश्मीर, बिहार और उत्तराखंड भी इस सूची में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये राज्य अपने अद्वितीय हथकरघा वस्त्र और कारीगरी वाले सामानों को जीआई टैग के संरक्षण के तहत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में लाते हैं। प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजार में जीआई टैग प्रामाणिकता और मौलिकता के प्रतीक के रूप में काम करते हैं। जीआई टैग वाले उत्पाद अपनी विशिष्ट पहचान की वजह से अधिक कीमत पाते हैं और इसके जरिए कारीगरों को सशक्त बनाते हैं जो पारंपरिक शिल्प और इस पर निर्भर समुदायों के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए:

- **बनारसी साड़ियां:** उत्तर प्रदेश का शहर बनारस, अपनी उत्कृष्ट हथकरघा साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। इन्हें बनारसी साड़ियों के रूप में जाना जाता है। ये साड़ियां अपनी समृद्ध कढ़ाई के लिए प्रख्यात हैं और अपने सोने—चांदी के ब्रोकेड या जरी, बढ़िया सिल्क और भव्य कढ़ाई के लिए प्रसिद्ध हैं। ये साड़ियां भारतीय हथकरघा शिल्प कौशल का प्रतीक हैं और अक्सर शादियों जैसे महत्वपूर्ण अवसरों का हिस्सा होती हैं। जीआई टैग ने बनारसी साड़ियों की विशिष्ट पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने मशीन-निर्मित नकली साड़ियों से प्रामाणिक, हस्तनिर्मित साड़ियों को अलग करने में मदद की है, जिससे स्थानीय कारीगरों की आजीविका की रक्षा हुई है। इस मान्यता से घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मांग में भी वृद्धि हुई है, जिसने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **चंदेरी कपड़ा:** मध्य प्रदेश के चंदेरी का यह कपड़ा अपने हल्के वजन, स्पष्ट बनावट और शानदार अहसास के लिए जाना जाता है। पारंपरिक रूप से रेशम और कपास से बुने गए चंदेरी कपड़े अपने बढ़िया जरी के काम और सुरुचिपूर्ण आकृतियों के लिए जाने जाते हैं।
- **कांचीपुरम सिल्क:** तमिलनाडु के कांचीपुरम शहर का यह सिल्क अपने स्थायित्व और चमकीली सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। जीवंत रंगों और मंदिर-प्रेरित आकृतियों की विशेषता की वजह से कांचीपुरम सिल्क साड़ियों को शुभ माना जाता है और औपचारिक अवसरों पर पहनने के लिए इसे पसंद किया जाता है।
- **कश्मीर पश्मीना:** कश्मीर पश्मीना जीआई के प्रभाव का एक और शानदार उदाहरण है। अपनी बेहतरीन कश्मीरी ऊन के लिए मशहूर, कश्मीर घाटी के हाथ से काते और बुने हुए इस कपड़े ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति हासिल की है। जीआई टैग यह सुनिश्चित करता है कि केवल कश्मीर में पारंपरिक तरीकों से बने पश्मीना को ही इस तरह का लेबल दिया जाए। इससे न केवल उत्पाद की कलात्मक शुद्धता और प्रामाणिकता को संरक्षित किया गया है, बल्कि नकली उत्पादों से लड़ने में भी मदद मिली है, जिससे कारीगरों के आर्थिक हितों की सुरक्षा हुई है।

भारत के भौगोलिक संकेतकों (जीआई) की सुरक्षा: एक मजबूत कानूनी ढांचा

भौगोलिक संकेतकों (जीआई) की सुरक्षा के लिए भारत का कानूनी ढांचा व्यापक है। इसमें अंतरराष्ट्रीय समझौते और राष्ट्रीय कानून दोनों शामिल हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधित पहलुओं (ट्रिप्स) पर समझौते का एक हस्ताक्षरकर्ता है। यह समझौता विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) द्वारा प्रशासित किया जाता है। ट्रिप्स जीआई सहित बौद्धिक संपदा के विभिन्न रूपों की सुरक्षा और प्रवर्तन के लिए न्यूनतम मानक निर्धारित करता है। इस अंतरराष्ट्रीय समझौते के तहत भारत की यह जिम्मेदारी है कि जीआई की सुरक्षा के लिए कानूनी साधन प्रदान करे और वह सुनिश्चित करे कि जीआई टैग जनता को गुमराह नहीं कर रहे हैं या उनके असली मालिकों के लिए हानिकारक तरीके से उपयोग नहीं किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भारत में जीआई संरक्षण की आधारशिला माल का भौगोलिक उपदर्शन (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 है। यह अधिनियम ट्रिप्स समझौते के अनुसार भारत के बौद्धिक संपदा कानूनों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। यह जीआई की संरचना, इसके पंजीकरण की प्रक्रिया और प्रदान की गई सुरक्षा के लिए मानदंड निर्धारित करता है। यह अधिनियम जीआई-टैग वाले सामान के उत्पादकों को दूसरों द्वारा पंजीकृत जीआई के अनधिकृत उपयोग को रोकने में सक्षम बनाता है। यह उत्पाद की प्रामाणिकता और विशिष्टता को बनाए रखने के लिहाज से महत्वपूर्ण है।

यह उत्पाद और उसके मूल स्थान के बीच के संबंध को कानूनी मान्यता भी प्रदान करता है। यह

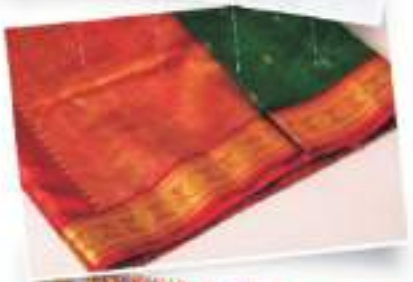

काम ऐसा सुनिश्चित करते हुए किया जाता है कि केवल निर्दिष्ट क्षेत्र में वास्तविक रूप से उत्पादित उत्पाद ही संरक्षित नाम के तहत बेचे जाए। यह कानून विशेषकर हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्रों के कारीगरों और उत्पादकों के हितों की रक्षा करने में सहायक है। भारत के हथकरघा क्षेत्र में जीआई संरक्षण की सबसे उल्लेखनीय सफलताओं में से एक बनारसी साड़ी है। 2007 में बनारसी साड़ियों को जीआई टैग मिला। इन साड़ियों ने इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दिया है और स्थानीय बुनकरों को सशक्त बनाया है। इस मान्यता ने वाराणसी की विशिष्ट बुनाई तकनीकों और डिजाइनों को संरक्षित करने में मदद की है, जिससे प्रामाणिक बनारसी साड़ियों की मांग बढ़ी है और इनकी कीमतें भी बढ़ी हैं। इसने बाजार में नकली उत्पादों की घुसपैठ को रोकने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे पारंपरिक बुनकरों की आजीविका की रक्षा हुई है। जीआई टैग ने न केवल स्थानीय हथकरघा उद्योग को पुनर्जीवित किया है बल्कि कारीगरों के बीच गर्व और सांस्कृतिक पहचान की भावना को भी बढ़ावा दिया है।

नकली वस्तुओं, बड़े पैमाने पर उत्पादन और आधुनिकीकरण से मुकाबला

इन सफलताओं के बावजूद जीआई प्रणाली को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से जीआई अधिकारों के क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने और उपभोक्ताओं एवं उत्पादकों को जीआई-टैग उत्पादों के मूल्य और महत्व के बारे में शिक्षित करने में। पारंपरिक हथकरघा वस्त्रों के डिजाइन और पैटर्न की नकल करके बनाए गए सस्ते उत्पादों से बाजार भरा पड़ा है। ये नकली उत्पाद बड़े पैमाने पर बनाकर कम कीमतों पर बेचे जाते हैं। इससे पारंपरिक कारीगरों द्वारा तैयार किए गए प्रामाणिक उत्पादों की कीमत कम हो जाती है। यह न केवल कुशल बुनकरों की आजीविका को प्रभावित करता है बल्कि इन वस्त्रों के अद्वितीय सांस्कृतिक महत्व को भी कम करता है। एक और गंभीर चुनौती बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा है। औद्योगीकरण के आगमन के साथ कपड़ा उत्पादन में मशीनीकरण बहुत तेजी से बढ़ा। पोचमपल्ली इकत या चंदेरी फैब्रिक के मामले में देखा जाए तो जीआई टैग ने इन्हें पहचान तो दिला दी लेकिन इससे नकल की आमद में कोई खास कमी नहीं आई और न ही कारीगरों की आर्थिक स्थिति सुधरी।

इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि कई कारीगर जीआई टैगिंग के लाभों और बेहतर बाजार पहुंच और मूल्य निर्धारण के लिए इसका लाभ उठाने के बारे में अनजान रहते हैं। यह प्रभावी संचार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यापक कमी का संकेत देता है। इसके अलावा मशीन-निर्मित वस्त्रों से जुड़ी दक्षता और कम लागत हथकरघा बुनाई की समय लेने वाली और श्रम साध्य प्रक्रिया के बिल्कुल विपरीत है। हथकरघा उत्पाद अधिक शारीरिक श्रम और आवश्यक कौशल के कारण स्वाभाविक रूप से अधिक महंगे होते हैं। ये उत्पाद मूल्य-संवेदनशील बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए संघर्ष करते हैं। इसके अलावा आधुनिकीकरण का प्रभाव हथकरघा वस्त्रों की प्रामाणिकता पर दबाव डालता है। 'हथकरघा शैली' के वस्त्रों के उत्पादन में पावरलूम और आधुनिक तकनीकों का बढ़ता उपयोग हथकरघा के मूल तत्वों विशिष्टता और प्रामाणिकता को चुनौती देता है। यह विशिष्टता और प्रामाणिकता हस्तनिर्मित होने से आती है। इसलिए, सरकार मशीनीकरण और बड़े पैमाने पर उत्पादन के इस ज्वार के बीच हथकरघा वस्त्रों की प्रामाणिकता को संरक्षित करने, भारत की सांस्कृतिक विरासत के इस अमूल्य धरोहर की रक्षा करने और इसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से ठोस प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध है।

भौगोलिक संकेतक जागरूकता और कारीगर समृद्धि को बढ़ावा

कारीगरों के बीच भौगोलिक संकेतकों (जीआई) के लाभों के बारे में जानकारियों का प्रसार करने में शैक्षिक कार्यक्रम महत्वपूर्ण हैं। ये कार्यक्रम कारीगरों को जीआई टैग के कानूनी, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक लाभों के बारे में शिक्षित करने पर केंद्रित होते हैं। कार्यशालाएं और प्रशिक्षण सत्र कारीगरों को जीआई आवेदन प्रक्रिया के बारे में बताते हैं। इनके माध्यम से जीआई टैग से जुड़ी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए पारंपरिक तरीकों और गुणवत्ता को बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया जाता है। कारीगर सीखते हैं कि वे कैसे जीआई टैग बाजार में अपने उत्पादों को अलग कर सकते हैं, इनका अधिक मूल्य निर्धारित कर सकते हैं और अपने उत्पाद को नकल से बचा सकते हैं। ऐसा करके उनकी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया जा सकता है। सरकारें और गैर सरकारी संगठन जागरूकता बढ़ाने और जीआई

उत्पादों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत सरकार ने, विशेष रूप से उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) के माध्यम से, कारीगरों और जनता को जीआई टैग के महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए अभियान शुरू किया है। इन प्रयासों में आम तौर पर स्थानीय संगठनों के साथ सहयोग शामिल होता है और बड़ी संख्या में दर्शकों तक पहुंचने के लिए विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग किया जाता है।

एक जिला, एक उत्पाद (ओडीओपी) कार्यक्रम सरकारी पहल का एक प्रमुख उदाहरण है। यह प्रत्येक जिले के अद्वितीय उत्पादों को बढ़ावा देता है, जिनमें से कई जीआई-टैग वाले उत्पाद हैं। ओडीओपी इन उत्पादों की मार्केटिंग में सहायता करता है। साथ ही क्षेत्रीय आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण में भी योगदान देता है। भारत में जी20 शिखर सम्मेलन ने वैश्विक स्तर पर जीआई-टैग हस्तशिल्प और हथकरघा को प्रदर्शित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में भी काम किया। जी20 शिखर सम्मेलन में शिल्प बाजार जैसे आयोजनों ने कारीगरों को अपने जीआई-टैग उत्पादों को प्रदर्शित करने और बेचने का अवसर प्रदान किया, जिससे अंतरराष्ट्रीय मान्यता और बाजार पहुंच बढ़ी। इसके अलावा, कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) जीआई उत्पादों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एपीडा की पहल में अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों, क्रेता-विक्रेता बैठकों और मार्केटिंग अभियानों का आयोजन शामिल है। इससे वैश्विक स्तर पर जीआई वस्तुओं की दृश्यता बढ़ाने में मदद मिलती है। इनोवेटिव पैकेजिंग, गुणवत्ता सुधार और बाजार संपर्क पर इसका अधिक जोर होता है। इससे जीआई-टैग वाले उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अधिक आकर्षक बनाने में सहायता मिलती है। गैर सरकारी संगठन जीआई पंजीकरण, संसाधनों की व्यवस्था और बाजार पहुंच सुविधा में कारीगर समुदायों की सहायता करके इन प्रयासों को पूरा करने में सहायक की भूमिका निभाते हैं। ये जीआई उत्पादों की व्यापक पहचान बनाने और मांग पैदा करने के लिए प्रदर्शनियों और प्रचार कार्यक्रमों का भी आयोजन करते हैं।

वैश्विक मान्यता और बाजार पहुंच

भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग ने भारतीय हस्तशिल्प वस्तुओं के अंतरराष्ट्रीय कद को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये टैग न केवल प्रामाणिकता और गुणवत्ता के प्रतीक के रूप में काम करते हैं बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक छवि के राजदूत की भूमिका भी निभाते हैं। उदाहरण के लिए बनारसी साड़ी और कांचीपुरम सिल्क। ये दोनों महज उत्पादों से आगे बढ़कर भारत की विरासत का प्रतीक बन गए हैं, जो अपनी शिल्प कौशल के लिए दुनिया भर में प्रशंसित हैं। जीआई टैग एक ऐसा विमर्श तैयार करने में मदद करते हैं जो वैश्विक स्तर पर लोगों के साथ जुड़ती है। ये लोग उत्पादों के पीछे की कहानी और परंपरा को अधिक महत्व देते हैं। यह बढ़ी हुई मान्यता इन वस्तों की विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ उन्हें नए बाजारों और पीढ़ियों से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये जिस सांस्कृतिक इतिहास को अपनाते हैं, उसके प्रति सराहना के भाव को बढ़ावा मिलता है।

भारतीय हस्तशिल्प के लिए बाजार पहुंच बढ़ाने में जीआई टैग की भूमिका बहुआयामी है। सबसे पहले ये अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से बढ़त प्रदान करते हैं, जिससे इन उत्पादों को बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्तुओं के समुद्र में खड़ा होने की शक्ति मिलती है। वैश्विक स्तर पर उपभोक्ता मूल और गुणवत्ता के लिए प्रमाणित चिह्न वाले उत्पादों पर खर्च करने के लिए अधिक इच्छुक दिखते हैं। जीआई टैग मूल और गुणवत्ता वाले उत्पाद की गारंटी देता है। इससे आकर्षक निर्यात के अवसर खुलते हैं। ये अवसर भारतीय हथकरघा क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसके अलावा जीआई टैग अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बेहतर व्यापार शर्तें हासिल करने में सहायता करते हैं क्योंकि वे विदेशों में नकल और दुरुपयोग के खिलाफ सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। यह सुरक्षा न केवल कानूनी है बल्कि प्रतिष्ठा का भी मामला है, जो इन उत्पादों के अनुमानित मूल्य को बढ़ाती है। इसका परिणाम यह होता है कि कारीगरों और बुनकरों को आर्थिक विकास के नए रास्ते मिलते हैं, क्योंकि उनके उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अधिक मूल्य पर बिकते हैं। इस प्रकार जीआई-टैग वाले भारतीय वस्त्र गुणवत्ता और विशिष्टता, मांग बढ़ाने और अपनी वैश्विक मौजूदगी का विस्तार करने का पर्याय बन गए हैं।

भौगोलिक संकेतक और हस्तशिल्प क्षेत्र के लिए सरकार का विजन

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) ने भारत के हथकरघा क्षेत्र में भौगोलिक संकेतक (जीआई) सुरक्षा बढ़ाने और कारीगरों का सहयोग करने के लिए एक मजबूत रणनीति अपनाई है। यह 'वोकल फॉर लोकल', 'लोकल टू ग्लोबल' और 'आत्मनिर्भर भारत' के मूल्यों के अनुरूप है।

डीपीआईआईटी ने 'इनोवेटिव फॉर प्रोमोशन ऑफ जीआई (आईपीजीआई)' की शुरुआत की है। वर्ष 2022—25 के लिए 75 करोड़ रुपये के आवंटन के साथ शुरू की गई इस पहल के माध्यम से जागरूकता फैलाने के साथ भारतीय भौगोलिक संकेतकों की सहायता की जाएगी। इस व्यापक पहल के माध्यम से विभिन्न स्तर पर जीआई के बारे में जागरूकता को बढ़ाया जाएगा। साथ ही भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहित करने और इसे सहेजने में डीपीआईआईटी की प्रभावी भूमिका भी रेखांकित की जाएगी। पात्र एजेंसियों को आर्थिक सहायता देने वाली इस पहल के लिए विभाग ने क्रियान्वयन दिशानिर्देश तैयार किए हैं। इसके माध्यम से केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों और जागरूकता प्रसार कार्यक्रमों में मदद की गई है। इससे जमीनी स्तर पर जीआई उत्पाद बनाने वालों के लिए कारोबार के नए अवसर पैदा हुए हैं क्योंकि इनके माध्यम से ग्राहक और विक्रेता आमने—सामने मिल पा रहे हैं। साथ ही इनके उत्पादों को लोगों के बीच ले जाने के लिए मेले आयोजित किए जा रहे हैं। इन कोशिश से अन्य लाभों के अलावा इनके उत्पादों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाने का काम भी किया जा रहा है। इस पहल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इससे जमीनी स्तर के उत्पादकों और बुनकरों का सीधा लाभ हो रहा है।

एक अन्य महत्वपूर्ण पहल जीआई के बारे में व्यापक जागरूकता लाने के लिए चलाया गया अभियान है। डीपीआईआईटी विविध कारीगर समुदायों में शैक्षिक कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कर रहा है। इन पहलों का उद्देश्य जीआई के महत्व की समझ को गहरा करना और इन टैग्स को प्राप्त करने और बनाए रखने की प्रक्रिया के माध्यम से कारीगरों का मार्गदर्शन करना है ताकि उन्हें अपनी अनूठी विरासत का लाभ उठाने के लिए सशक्त बनाया जा सके। जीआई-टैग उत्पादों की मार्केटिंग और ब्रांडिंग पर जोर देते हुए सरकार ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों के साथ सहयोग को बढ़ावा दे रही है और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों में भागीदारी सुनिश्चित कर रही है।

इसके अलावा सरकार भौगोलिक संकेतक (जीआई) उत्पादों की मूल्य श्रृंखला के भीतर ट्रेसेबिलिटी प्रौद्योगिकी को शामिल करने को काफी बढ़ावा दे रही है। इसके तहत एसएएस संगठन सोर्सट्रेस ने अपने ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म पर अत्याधुनिक तकनीकें तैयार की हैं। इनमें जियो मैपिंग, फसल प्रबंधन, उत्पाद ट्रांसफर और वेयरहाउस प्रबंधन के साथ-साथ दार्जिलिंग चाय सहित जीआई-टैग उत्पादों की प्रामाणिकता और गुणवत्ता गारंटी को बढ़ाने के लिए क्यूआर कोड और बारकोड लेबलिंग का उपयोग शामिल है। गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए जीआई टैग वाले उत्पादों की गुणवत्ता को बनाए रखने और इन्हें सत्यापित करने के लिए कई प्रयास किए गए हैं। इन कोशिशों में नियमों का पालन न करने पर सख्त कार्रवाई के अलावा हस्तशिल्प के लिए जीआई और गैर-जीआई क्यूआर कोड-आधारित लेबल के उपयोग के माध्यम से जम्मू कश्मीर में हस्तशिल्प गुणवत्ता नियंत्रण परिषद द्वारा जीआई-लेबल वाले उत्पादों को बढ़ावा देना शामिल है। इसके अलावा, श्रीनगर में भारतीय कालीन प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी) ने प्रसिद्ध जीआई उत्पाद कश्मीरी हैंड नॉटेड कालीन के लिए सूक्ष्मता से परीक्षण करने वाली एक प्रमाणन प्रक्रिया लागू की है। भौतिक निरीक्षण से लेकर प्रयोगशाला परीक्षण तक की पूरी प्रक्रिया में गुणवत्ता मानकों का पालन सुनिश्चित किया जाता है और प्रत्येक प्रमाणित कालीन को एक यूनिक क्यूआर लेबल सौंपा जाता है।

इसके अलावा, जीआई टैग का प्रतिनिधित्व करने वाले उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए नियमित निगरानी और ऑडिट किए जा रहे हैं जिससे उपभोक्ताओं में विश्वास का एक मजबूत आधार तैयार हो रहा है। कारीगरों का वित्तीय सशक्तिकरण एक और महत्वपूर्ण पहलू है। सरकार ऋण और वित्तीय सहायता तक आसान पहुंच की सुविधा प्रदान कर रही है। साथ ही पारंपरिक तरीकों को संरक्षित करते हुए कारीगरों को नवप्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। हथकरघा क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए यह कदम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इसके अलावा जाली और नकली उत्पादों से निपटने के लिए कानूनी ढांचे को और मजबूत किया जा रहा है। इसमें वैश्विक स्तर पर भारत की हथकरघा विरासत की रक्षा के लिए सख्त कानून प्रवर्तन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग शामिल है।

> इन व्यापक पहलों के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में डीपीआईआईटी न केवल कारीगरों की आजीविका की रक्षा कर रहा है बल्कि हथकरघा क्षेत्र की सतत वृद्धि भी सुनिश्चित कर रहा है। यह दृष्टिकोण एक सशक्त और आत्मनिर्भर भविष्य की ओर बढ़ते हुए अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अपनाने की भारत की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है।

न्याय : अनुच्छेद 370 पर प्रधानमंत्री का ब्लॉग

"सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 370 पर अपने फैसले में भारत की संप्रभुता और अखंडता को बरकरार रखा है"

राष्ट्र ने 5 अगस्त 2019 को नई सुबह देखी थी। छह दशकों से जो विषय लंबित थे, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने उसका स्थायी समाधान कर एक भारत-श्रेष्ठ भारत के सपने को साकार कर दिया। आज जम्मू-कश्मीर और लद्दाख राष्ट्र के साथ विकास में कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। इस क्षेत्र में नए युग का सूत्रपात हो चुका है। गरीब और वंचितों को न्याय मिला है तो अलगाववाद, पत्थरबाजी बीते दिनों की बात हो गई है। शांति के एक नए अध्याय के साथ नए कश्मीर बनने की शुरुआत हो गई है। केंद्र सरकार की संविधान के प्रति निष्ठा और नियत पर अब सुप्रीम कोर्ट ने भी मोहर लगा दी है। अनुच्छेद

370 के निष्प्रभावी होने के चार वर्ष बाद अपने ऐतिहासिक निर्णय में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया है कि केंद्र सरकार का उद्देश्य संवैधानिक था क्योंकि शुरुआत से अनुच्छेद 370 अस्थायी प्रावधान के रूप में था लेकिन उसे राजनीति ने स्थायी हिस्सा बना दिया था। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश की संसद ने जो निर्णय लिया उसे सुप्रीम कोर्ट ने अपने 11 दिसंबर 2023 के निर्णय में संवैधानिक रूप से बरकरार रखा है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस निर्णय पर अपनी त्वरित प्रतिक्रिया में कहा, "अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बारे में सर्वोच्च न्यायालय का आज का फैसला ऐतिहासिक है जो संवैधानिक रूप से 5 अगस्त 2019 को भारत की संसद द्वारा लिए गए निर्णय को बरकरार रखता है। यह जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में हमारी बहनों और भाइयों की उम्मीद, प्रगति और एकता की एक शानदार घोषणा है। न्यायालय ने अपने गहन ज्ञान से एकता के उस मूल सार को मजबूत किया है जिसे हम भारतीय होने के नाते बाकी सभी से ऊपर मानते हैं और उसे संजोते हैं। मैं जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के सशक्त लोगों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि आपके सपनों को पूरा करने के लिए हमारी प्रतिबद्धता अटल है। हम यह सुनिश्चित करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं कि विकास का लाभ न केवल आप तक पहुंचे, बल्कि हमारे समाज के उन सबसे कमजोर और हाशिए पर रहने वाले वर्गों तक भी पहुंचे, जिन्होंने अनुच्छेद 370 के कारण पीड़ा झेली है। आज का यह निर्णय न केवल एक कानूनी फैसला है बल्कि यह आशा की एक किरण है, उज्ज्वल भविष्य का वादा है और एक मजबूत, अधिक एकजुट भारत का निर्माण करने के लिए हमारे सामूहिक संकल्प का प्रमाण भी है।"

राष्ट्र की एकता को बल देने वाले इस निर्णय के आलोक में प्रधानमंत्री मोदी ने एक ब्लॉग के जरिए बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय में देश की संप्रभुता-अखंडता को बरकरार रखा है। पेश है nareandramodi.in पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा लिखा गया ब्लॉग...

भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को निरस्त करने पर 11 दिसंबर को ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपने फैसले में भारत की संप्रभुता और अखंडता को बरकरार रखा है, जिसे प्रत्येक भारतीय द्वारा सदैव संजोया जाता रहा है। सुप्रीम कोर्ट का यह कहना पूरी तरह से उचित है कि 5 अगस्त 2019 को हुआ निर्णय संवैधानिक एकीकरण को बढ़ाने के उद्देश्य से लिया गया था, न कि इसका उद्देश्य विघटन था। सर्वोच्च न्यायालय ने इस तथ्य को भी भलीभांति माना है कि अनुच्छेद 370 का स्वरूप स्थायी नहीं था।

जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की खूबसूरत और शांत वादियां, बर्फ से ढके पहाड़, पीढ़ियों से कवियों, कलाकारों और हर भारतीय के दिल को मंत्रमुग्ध करते रहे हैं। यह एक ऐसा अद्भुत क्षेत्र है जो हर दृष्टि से अभूतपूर्व है, जहां हिमालय आकाश को स्पर्श करता हुआ नजर आता है और जहां इसकी झीलों एवं नदियों का निर्मल जल स्वर्ग का दर्पण प्रतीत होता है। लेकिन पिछले कई दशकों से जम्मू-कश्मीर के अनेक स्थानों पर ऐसी हिंसा और अस्थिरता देखी गई, जिसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। वहां के हालात कुछ ऐसे थे, जिससे जम्मू-कश्मीर के परिश्रमी, प्रकृति प्रेमी और स्नेह से भरे लोगों को कभी भी रू-ब-रू नहीं होना चाहिए था।

लेकिन दुर्भाग्यवश, सदियों तक उपनिवेश बने रहने, विशेषकर आर्थिक और मानसिक रूप से पराधीन रहने के कारण, तब का समाज एक प्रकार से भ्रमित हो गया। अत्यंत बुनियादी विषयों पर स्पष्ट नजरिया अपनाने के बजाय दुविधा की स्थिति बनी रही जिससे और ज्यादा भ्रम उत्पन्न हुआ। अफसोस की बात यह है कि जम्मू-कश्मीर को इस तरह की मानसिकता से व्यापक नुकसान हुआ।

देश की आजादी के समय तब के राजनीतिक नेतृत्व के पास

राष्ट्रीय एकता के लिए एक नई शुरुआत करने का विकल्प था। लेकिन तब इसके बजाय उसी भ्रमित समाज का दृष्टिकोण जारी रखने का निर्णय लिया गया, भले ही इस वजह से दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों की अनदेखी करनी पड़ी।

मुझे अपने जीवन के शुरुआती दौर से ही जम्मू-कश्मीर आंदोलन से जुड़े रहने का अवसर मिला है। मेरी अवधारणा सदैव ही ऐसी रही है जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर महज एक राजनीतिक मुद्दा नहीं था बल्कि यह विषय समाज की आकांक्षाओं को पूरा करने के बारे में था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को नेहरू मंत्रिमंडल में एक महत्वपूर्ण विभाग मिला हुआ था और वे काफी लंबे समय तक सरकार में बने रह सकते थे। फिर भी, उन्होंने कश्मीर मुद्दे पर मंत्रिमंडल छोड़ दिया और आगे का कठिन रास्ता चुना, भले ही इसकी कीमत उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। लेकिन उनके अथक प्रयासों और बलिदान से करोड़ों भारतीय कश्मीर मुद्दे से भावनात्मक रूप से जुड़ गए।

कई वर्षों बाद अटल जी ने श्रीनगर में एक सार्वजनिक बैठक में 'इंसानियत', 'जम्हूरियत' और 'कश्मीरियत' का प्रभावशाली संदेश दिया, जो सदैव ही प्रेरणा का महान स्रोत भी रहा है।

मेरा हमेशा से दृढ़ विश्वास रहा है कि जम्मू-कश्मीर में जो कुछ हुआ था, वह हमारे राष्ट्र और वहां के लोगों के साथ एक बड़ा विश्वासघात था। मेरी यह भी प्रबल इच्छा थी कि मैं इस कलंक को, लोगों पर हुए इस अन्याय को मिटाने के लिए जो कुछ भी कर सकता हूं, उसे जरूर करूं। मैं हमेशा से जम्मू-कश्मीर के लोगों की पीड़ा को कम करने के लिए काम करना चाहता था।

सरल शब्दों में कहें तो, अनुच्छेद 370 और 35 (ए) जम्मू, कश्मीर और लद्दाख के सामने बड़ी बाधाओं की तरह थे। ये अनुच्छेद एक अटूट दीवार की तरह थे तथा गरीब,वंचित,

कई वर्षों बाद अटल जी ने श्रीनगर में एक सार्वजनिक बैठक में 'इंसानियत', 'जम्हूरियत' और 'कश्मीरियत' का प्रभावशाली संदेश दिया, जो सदैव ही प्रेरणा का महान स्रोत भी रहा है।

दलितों-पिछड़ों-महिलाओं के लिए पीड़ादायक थे। अनुच्छेद 370 और 35(ए) के कारण जम्मू-कश्मीर के लोगों को वह अधिकार और विकास कभी नहीं मिल पाया जो उनके साथी देशवासियों को मिला। इन अनुच्छेदों के कारण, एक ही राष्ट्र के लोगों के बीच दूरियां पैदा हो गईं। इस दूरी के कारण, हमारे देश के कई लोग, जो जम्मू-कश्मीर की समस्याओं को हल करने के लिए काम करना चाहते थे, ऐसा करने में असमर्थ थे,भले ही उन लोगों ने वहां के लोगों के दर्द को स्पष्ट रूप से महसूस किया हो।

एक कार्यकर्ता के रूप में, जिसने पिछले कई दशकों से इस मुद्दे को करीब से देखा हो, वो इस मुद्दे की बारीकियों और जटिलताओं से भली-भांति परिचित था। मैं एक बात को लेकर बिल्कुल स्पष्ट था- जम्मू-कश्मीर के लोग विकास चाहते हैं तथा वे अपनी ताकत और कौशल के आधार पर भारत के विकास में योगदान देना चाहते हैं। वे अपने बच्चों के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता चाहते हैं, एक ऐसा जीवन जो हिंसा और अनिश्चितता से मुक्त हो।

इस प्रकार, जम्मू-कश्मीर के लोगों की सेवा करते समय, हमने तीन बातों को प्रमुखता दी- नागरिकों की चिंताओं को समझना, सरकार के कार्यों के माध्यम से आपसी-विश्वास का निर्माण करना तथा विकास, निरंतर विकास को प्राथमिकता देना।

मुझे याद है, 2014 में, हमारे सत्ता संभालने के तुरंत बाद, जम्मू-कश्मीर में विनाशकारी बाढ़ आई थी, जिससे कश्मीर घाटी में बहुत नुकसान हुआ था। सितंबर 2014 में, मैं स्थिति का आकलन करने के लिए श्रीनगर गया और पुनर्वास के लिए विशेष सहायता के रूप में 1,000 करोड़ रुपये की घोषणा भी की। इससे लोगों में ये संदेश भी गया कि संकट के दौरान हमारी सरकार वहां के लोगों की मदद के लिए कितनी संवेदनशील है। मुझे जम्मू-कश्मीर में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से मिलने का अवसर मिला है और इन संवादों में एक बात समान रूप से उभरती है - लोग न केवल विकास चाहते हैं, बल्कि वे दशकों से व्याप्त भ्रष्टाचार से भी मुक्ति चाहते हैं। उस साल मैंने जम्मू-कश्मीर में जान गंवाने वाले लोगों की याद में दीपावली नहीं मनाने का फैसला किया। मैंने दीपावली के दिन जम्मू-कश्मीर में मौजूद रहने का भी फैसला किया।

जम्मू एवं कश्मीर की विकास यात्रा को और मजबूती प्रदान करने के लिए हमने यह तय किया कि हमारी सरकार के मंत्री बार-बार वहां जाएंगे और वहां के लोगों से सीधे संवाद करेंगे। इन लगातार दौरों ने भी जम्मू एवं कश्मीर में सद्भावना कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मई 2014 से मार्च 2019 के दौरान 150 से अधिक मंत्रिस्तरीय दौरे हुए। यह अपने आप में एक कीर्तिमान है। वर्ष 2015 का विशेष पैकेज जम्मू एवं कश्मीर की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसमें बुनियादी ढांचे के विकास, रोजगार सृजन, पर्यटन को बढ़ावा देने और हस्तशिल्प उद्योग को सहायता प्रदान करने से जुड़ी पहल शामिल थीं।

हमने खेल शक्ति में युवाओं के सपनों को साकार करने की क्षमता को पहचानते हुए जम्मू एवं कश्मीर में इसका भरपूर सदुपयोग किया। विभिन्न खेलों के माध्यम से, हमने वहां के युवाओं की आकांक्षाओं और उनके भविष्य पर खेलों से जुड़ी गतिविधियों के परिवर्तनकारी प्रभाव को देखा। इस दौरान विभिन्न खेल स्थलों का आधुनिकीकरण किया गया, प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए और प्रशिक्षक उपलब्ध कराए गए। स्थानीय स्तर पर फुटबॉल क्लबों की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाना इन सबमें एक सबसे अनूठी बात रही। इसके परिणाम शानदार निकले। मुझे प्रतिभाशाली फुटबॉल खिलाड़ी अफशां आशिक का नाम याद आ रहा है। वो दिसंबर 2014 में श्रीनगर में पथराव करने वाले एक समूह का हिस्सा थी लेकिन सही प्रोत्साहन मिलने पर उसने फुटबॉल की ओर रुख किया। उसे प्रशिक्षण के लिए भेजा गया और उसने खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। मुझे 'फिट इंडिया डायलॉग्स' के एक कार्यक्रम के दौरान उसके साथ हुई बातचीत याद है, जिसमें मैंने कहा था कि अब 'बेंड इट लाइक बेकहम' से आगे बढ़ने का समय है क्योंकि अब यह 'ऐस इट लाइक अफशां' है। मुझे खुशी है कि अब तो अन्य युवाओं ने किकबॉक्सिंग, कराटे और अन्य खेलों में अपनी प्रतिभा दिखानी शुरू कर दी है।

पंचायत चुनाव भी इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ। एक बार फिर, हमारे सामने

या तो सत्ता में बने रहने या अपने सिद्धांतों पर अटल रहने का विकल्प था। हमारे लिए यह विकल्प कभी भी कठिन नहीं था और हमने सरकार को गंवाने के विकल्प को चुनकर उन आदर्शों को प्राथमिकता दी जिनके पक्ष में हम खड़े हैं। जम्मू एवं कश्मीर के लोगों की आकांक्षाएं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। पंचायत चुनावों की सफलता ने जम्मू एवं कश्मीर के लोगों की लोकतांत्रिक प्रकृति को इंगित किया। मुझे गांवों के प्रधानों के साथ हुई एक बातचीत याद आती है। अन्य मुद्दों के अलावा, मैंने उनसे एक अनुरोध किया कि किसी भी स्थिति में स्कूलों को नहीं जलाया जाना चाहिए और स्कूलों की सुरक्षा की जानी चाहिए। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि इसका पालन किया गया। आखिरकार, अगर स्कूल जलाए जाते हैं तो सबसे ज्यादा नुकसान छोटे बच्चों का होता है।

5 अगस्त का ऐतिहासिक दिन हर भारतीय के दिल और दिमाग में बसा हुआ है। हमारी संसद ने अनुच्छेद 370 को निरस्त करने का ऐतिहासिक निर्णय पारित किया और तब से जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में बहुत कुछ बदलाव आया है। न्यायिक अदालत

"5 अगस्त, 2019 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक दूरदर्शी निर्णय लेते हुए जम्मू और कश्मीर से धारा 370 को समाप्त कर दिया था। 370 समाप्त किए जाने के बाद जम्मू और कश्मीर में शांति लौटी है और हिंसा से प्रभावित हुई जिंदगियों को विकास ने एक नया अर्थ दिया है। पर्यटन, कृषि जैसे क्षेत्रों के विकास ने जम्मू और कश्मीर और लद्दाख के लोगों की आय में वृद्धि कर उन्हें समृद्ध बनाया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय ने यह सिद्ध कर दिया है कि धारा 370 को समाप्त करने का मोदी सरकार का निर्णय पूरी तरह संवैधानिक था।"

-अमित शाह, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

का फैसला दिसंबर 2023 में आया है लेकिन जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में विकास की गति को देखते हुए जनता की अदालत ने चार साल पहले अनुच्छेद 370 और 35 (ए) को निरस्त करने के संसद के फैसले का जोरदार समर्थन किया है।

राजनीतिक स्तर पर, पिछले 4 वर्षों को जमीनी स्तर पर लोकतंत्र में फिर से भरोसा जताने के रूप में देखा जाना चाहिए। महिला, आदिवासी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और समाज के वंचित वर्गों को उनका हक नहीं मिल रहा था। वहीं, लद्दाख की आकांक्षाओं को भी पूरी तरह से नजरअंदाज किया जाता था। लेकिन, 5 अगस्त 2019 ने सब कुछ बदल दिया। सभी केंद्रीय कानून अब बिना किसी डर या पक्षपात के लागू होते हैं, प्रतिनिधित्व भी पहले से अधिक व्यापक हो गया है। त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली लागू हो गई है, बीडीसी चुनाव हुए हैं और शरणार्थी समुदाय, जिन्हें लगभग भुला दिया गया था, उन्हें भी विकास का लाभ मिलना शुरू हो गया है।

केंद्र सरकार की प्रमुख योजनाओं ने शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया है, ऐसी योजनाओं में समाज के सभी वर्गों को शामिल किया गया है। इनमें सौभाग्य और उज्ज्वला योजनाएं शामिल हैं। आवास, नल से जल कनेक्शन और वित्तीय समावेशन में प्रगति हुई है। लोगों के लिए बड़ी चुनौती रही स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में भी बुनियादी ढांचे का विकास किया गया है। सभी गांवों ने खुले में शौच से मुक्त-ओडीएफ प्लस का दर्जा प्राप्त कर लिया है। सरकारी रिक्तियां, जो कभी भ्रष्टाचार और पक्षपात का शिकार होती थीं, पारदर्शी और सही प्रक्रिया के तहत भरी गई हैं। आईएमआर जैसे अन्य संकेतकों में सुधार दिखा है। बुनियादी ढांचे और पर्यटन में बढ़ावा सभी देख सकते हैं। इसका श्रेय स्वाभाविक रूप से जम्मू-कश्मीर के लोगों की दृढ़ता को जाता है, जिन्होंने बार-बार दिखाया है कि वे केवल विकास चाहते हैं और इस सकारात्मक बदलाव के वाहक बनने के इच्छुक हैं। इससे पहले जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की स्थिति पर सवालिया निशान लगा हुआ था। अब, रिकॉर्ड वृद्धि, रिकॉर्ड विकास, पर्यटकों के रिकॉर्ड आगमन के बारे में सुनकर लोगों को सुखद आश्चर्य होता है।

सुप्रीम कोर्ट ने 11 दिसंबर के अपने फैसले में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को मजबूत किया है। इसने हमें याद दिलाया कि एकता और सुशासन के लिए साझा प्रतिबद्धता ही हमारी पहचान है। आज जम्मू, कश्मीर और लद्दाख में जन्म लेने वाले प्रत्येक बच्चे को साफ-सुथरा माहौल मिलता है, जिसमें वह जीवंत आकांक्षाओं से भरे अपने भविष्य को साकार कर सकता है। आज लोगों के सपने बीते समय के मोहताज नहीं बल्कि भविष्य की संभावनाएं हैं। जम्मू और कश्मीर में मोहभंग, निराशा और हताशा की जगह अब विकास, लोकतंत्र और गरिमा ने ले ली है। ●

केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय

सूरत हवाई अड्डा को अंतरराष्ट्रीय दर्जा

पैकेजिंग में जूट के थैलों का प्रयोग अनिवार्य

तेजी से प्रगति करते गुजरात के सूरत शहर ने उल्लेखनीय आर्थिक कौशल एवं औद्योगिक विकास का प्रदर्शन किया है। आर्थिक विकास को गति देने, विदेशी निवेश को आकर्षित करने और राजनयिक संबंधों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से मंत्रिमंडल ने सूरत हवाई अड्डे को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। अंतरराष्ट्रीय दर्जा होने के बाद यहां से यात्रियों की संख्या और कार्गो संचालन में बढ़ोतरी होगी जो क्षेत्रीय विकास को महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करेगा। इसके साथ मंत्रिमंडल ने कई अन्य महत्वपूर्ण प्रस्तावों को भी मंजूरी दी है जिससे विकास के रफ्तार को लगेंगे पंख...

निर्णय : सूरत हवाई अड्डे को अंतरराष्ट्रीय विमान पत्तन घोषित करने के प्रस्ताव को मिली मंजूरी।

प्रभाव : अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित होने पर सूरत एयरपोर्ट न केवल अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार बनेगा बल्कि यह राज्य के समृद्ध हीरा एवं वस्त्र उद्योगों को भी निर्बाध निर्यात-आयात संचालन की उच्चस्तरीय सुविधा प्रदान करेगा। इससे सूरत शहर विमान पत्तन अंतरराष्ट्रीय विमानन परिदृश्य में एक प्रमुख हवाई अड्डा बन जाएगा और इस क्षेत्र में समृद्धि के एक नए युग का सूत्रपात भी होगा।

निर्णय : जूट वर्ष 2023-24 के लिए जूट पैकेजिंग सामग्री अधिनियम, 1987 के तहत जूट पैकेजिंग सामग्री आरक्षण के निर्धारित मानदंड को मंजूरी।

प्रभाव : इस निर्णय से जूट मिलों और सहायक इकाइयों में कार्यरत 4 लाख श्रमिकों को राहत मिलेगी। इससे लगभग 40 लाख किसान परिवारों की आजीविका को बढ़ावा मिलेगा। यह पर्यावरण की रक्षा करने में मदद करेगा क्योंकि जूट प्राकृतिक, जैव-अपघटनीय, नवीकरणीय और फिर से उपयोग योग्य रेशा है। निर्णय के अनुसार 100% खाद्यान्न एवं 20% चीनी को अनिवार्य रूप से जूट के थैलों में पैक किया जाएगा।

निर्णय : इनोवेशन हैंडशेक के माध्यम से नवाचार इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) के मसौदे को मंजूरी।

प्रभाव : यह समझौता ज्ञापन उच्च तकनीकी क्षेत्र में वाणिज्यिक अवसरों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

निर्णय : भारत और इटली के बीच औद्योगिक संपत्ति अधिकार के क्षेत्र में सहयोग के बारे में समझौता ज्ञापन को स्वीकृति।

प्रभाव : समझौता ज्ञापन प्रतिभागियों के बीच एक व्यवस्था की स्थापना को प्रोत्साहन देगा जो उन्हें औद्योगिक संपत्ति और इस क्षेत्र से संबंधित सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं के क्षेत्र में सहयोग गतिविधियों को विकसित करने में मदद करेगा।

निर्णय : डिजिटलीकरण और इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण के क्षेत्र में सहयोग पर भारत और सऊदी अरब के बीच हस्ताक्षरित सहयोग ज्ञापन को मंजूरी।

प्रभाव : इस सहयोग ज्ञापन के तहत सहयोग गतिविधियां, डिजिटलीकरण और इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण के क्षेत्र में सहभागिता को बढ़ावा देंगी जो आत्मनिर्भर भारत के परिकल्पित उद्देश्यों का अभिन्न हिस्सा है। ●

2014 में संकल्प 2024 की सिद्धि

जब 2014-24 के दशक को हम संपूर्णता में देखते हैं तो हमें निश्चय ही एक सोचे-समझे विजन के दर्शन होते हैं जो भारतीय परिप्रेक्ष्य की वास्तविकताओं के आधार पर पहले तो एक पृष्ठभूमि बनाता है, फिर सुदृढ़ता के साथ नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करता है और अंततः उनको प्रगति में छलांग लगाने के अवसर प्रदान करता है...

आइए इस दशक की सिद्धि के साक्षी नववर्ष 2024 में जानते हैं कि किस तरह देश ने विकास के आयाम और प्रतिमान बदल दिए हैं और परिवर्तनकारी सुधारों ने नए भारत के निर्माण की लिख दी है पटकथा...

यह दशक है विकास का। विकसित भारत के संकल्प का। 2014 से 2024 बन गया है आजाद भारत में जनभागीदारी का सबसे सशक्त दशक। अगर लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दृष्टिकोण से देखा जाए तो 2014 से 2024 का दशक उस विकसित भारत के विराट संकल्प का आधारस्तंभ बन गया है, जिसने एक सुविचारित लक्ष्य के साथ अमृत काल की यात्रा प्रारंभ कर दी है। राष्ट्रवाद को प्रेरणा, अंत्योदय को दर्शन और सुशासन को मंत्र बनाकर देश को नई ऊंचाईयों पर ले जाने और निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने की सोच के साथ पहली बार किसी केंद्र सरकार ने समयबद्ध तरीके से अंतिम छोर तक विकास की पहुंच सुनिश्चित की। सही मायने में आजादी का अहसास कराने की ठानी और उसे साकार करके दिखाया है।

ऐसे में जब वर्ष 2024 का आगाज हुआ है, देश एक नया सूरज देख रहा है। इसका आधारस्तंभ बीते 10 वर्षों में तैयार हुआ है उसकी बड़ी वजह है- जो कुछ किया इसकी अंतिम छोर तक डिलीवरी की कसौटी पर खरा उतरना। इसी सोच के साथ भारत की आजादी के बाद यह पहला अवसर और दशक होगा, जब कोई सरकार इस तरह से हर वक्त अपने रिपोर्ट कार्ड के साथ तैयार रहती हो। अमृत महोत्सव वर्ष के संदर्भ में 2019 में प्रधानमंत्री मोदी ने इसलिए कहा था, "हमने पहली बार साहस किया है कि हमसे अंतरिम हिसाब भी लिया जाए। 2022 में जब आजादी के 75 साल होंगे और देश के महापुरुषों ने जिन सपनों के लिए संघर्ष किया था, बलिदान दिया था तब हम उनके सपनों का भारत समर्पित करने के लिए 75 लक्ष्य तय किए हैं। 75 निश्चित कदम तय किए हैं।" दरअसल नए भारत की दिशा में कदम बढ़ाते हुए केंद्र सरकार ने आजादी के 75 साल पूरे होने पर 75 संकल्प को पूरा करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया था, वह पूरी तरह से साकार हो रहा है। नए भारत की नींव के रूप में स्थापित हो चुकी है। भारत को समृद्ध बनाने, सामान्य मानवीय जीवन को सशक्त करने, जनभागीदारी बढ़ाने और लोकतांत्रिक मूल्यों को महत्व देते हुए मौजूदा केंद्र सरकार अगले 25 वर्षों की रूपरेखा बनाकर काम कर रही है, ताकि 2047 में जब देश आजादी की सौंवी सालगिरह मना रहा हो, तब वह इतनी मजबूत स्थिति में आ सके कि विकासशील से विकसित देशों की श्रेणी में उसकी गिनती हो। किसी भी मजबूत इमारत के लिए मजबूत नींव की जरूरत होती है।

बेहतर कल की उम्मीद से भरा था वर्ष- 2014

अपने पहले कार्यकाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को नया आयाम दिया। सुविचारित रूप से अल्पकालिक के साथ-साथ दीर्घकालिक रणनीति पर काम शुरू हुआ। इसी का परिणाम हुआ कि 2019 में एक बेहतर कल यानी नए भारत के सपनों को सींचने में देश का जन-जन जुट गया। देश की जनता ने प्रधानमंत्री मोदी के मजबूत नेतृत्व पर भरोसा जताया और विकास एक गारंटी के रूप में स्थापित हो गई। अब जब विकसित भारत के विराट संकल्प के साथ 2024 में प्रवेश हो रहा है, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार अपना दूसरा कार्यकाल भी पूरा करने की ओर है। ऐसे में तमाम चुनौतियों और बाधाओं को पार करते हुए भारत दुनिया के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण पेश कर रहा है। इस दौरान भारत ने धरती से अंतरिक्ष तक अपना परचम लहराया है, जिसका संदेश स्पष्ट है कि नया भारत अब न रूकेगा, न थमेगा, बल्कि हर चुनौतियों को परास्त कर एक दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ विकसित भारत के संकल्प को साकार करेगा। इसलिए हाल ही में एक समिट में प्रधानमंत्री मोदी ने भरोसा भी जताया, "मैं जनता के बीच रहने, जीने वाला इंसान हूं, पॉलिटिकल आदमी हूं और जनप्रतिनिधि हूं तो मुझे उसमें कुछ एक संदेश दिखता है। आम तौर पर ओपिनियन पोल, चुनावों के

कुछ हफ्तों पहले आते हैं और बताते हैं, क्या होने वाला है। लेकिन आपने साफ संकेत दे दिया है कि देश की जनता इस बार सारे बैरियर तोड़कर हमारा समर्थन करने वाली है।" इस भरोसे की वजह है बीता एक दशक, क्योंकि बीते दशक भर में नए भारत की ओर बढ़ती यात्रा ने उज्ज्वल भविष्य की नींव गढ़ दी है। इसी नींव पर भव्य, समृद्ध और विकसित भारत का निर्माण होगा।

जब चुनौतियां होने लगीं परास्त

वर्ष 2014 के बाद से केंद्र सरकार ने अपने अटल इरादों के सामने चुनौतियों को परास्त करना शुरू किया। आज इसी का परिणाम है कि हर बाधा को तोड़ते हुए भारत चंद्रमा के उस छोर पर पहुंचा है, जहां आज तक दुनिया का कोई देश नहीं पहुंच सका। जी-20 के सफलतम आयोजनों से दुनिया में परचम लहरा दिया है। आज भारत हर चुनौती को पार करते हुए डिजिटल लेनदेन के मामले में पहले पायदान पर पहुंच गया है तो स्टार्टअप की दुनिया में शीर्ष तीन देशों में शामिल हो गया है। मोबाइल के निर्माण में दुनिया को नेतृत्व प्रदान कर रहा है। कौशल विकास के जरिए राष्ट्र और दुनिया के लिए भी सक्षम कार्यबल तैयार कर रहा है। जैसे महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा में एक चुटकी नमक उठाया तो पूरा देश आजादी को प्राप्त करने के लिए उठ खड़ा हो गया। उसी तरह चंद्रयान-3 की सफलता हो या जी-20 का आयोजन, 140 करोड़ देशवासी आत्मविश्वास से भरे वातावरण की अनुभूति कर पा रहे

हाल ही में शुरू की गई 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' शत-प्रतिशत लोगों तक योजनाओं को पहुंचाने की एक विराट संकल्पना है। चूंकि यह ग्रामीण भारत की जटिल वास्तविकताओं से गुजरती है, इसलिए इस यात्रा का उद्देश्य आखिरी छोर तक पहुंचना है और लोगों को उन विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक करना है जिनसे वे लाभान्वित हो सकते हैं। 26 जनवरी 2024 तक 2.55 लाख ग्राम पंचायतों और 3,600 शहरी स्थानीय निकायों को कवर करने की योजना के तहत यह पहल, एक तरह से इस देश के गरीबों, हमारी माता-बहनों, किसानों तथा इस देश के युवाओं के लिए 'मोदी की गारंटी' है।

संकल्प से सिद्धि कैसे बनी एक सोच

"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।" यह कहावत आपने खूब सुनी होगी। यह देश के जन-जन को और नेतृत्व को तय करना होता है कि अपनी पसंद बदले या फिर 21वीं सदी में 20वीं सदी की उदासी लेकर जीते रहें। 2014 में केंद्र सरकार की कमान संभालने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस संदेश के साथ कहा था, "ये नया भारत आगे बढ़ चला है। ये कर्तव्य पथ पर बढ़ चला है और कर्तव्य में ही सारे अधिकारों का सार है, यही तो महात्मा गांधीजी का संदेश है। आइए, हम गांधीजी के बताए कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते हुए, एक समृद्ध, समर्थ और संकल्पित नए भारत के निर्माण में जुट जाएं। हम सभी के सामूहिक प्रयासों से ही भारत की हर आकांक्षा, हर संकल्प सिद्ध होगा।" संकल्प कैसे सिद्धि में परिवर्तित होता है, वह एक सोच पर निर्भर करता है। प्रधानमंत्री मोदी की सोच को उन्हीं के द्वारा दिए गए उद्धरणों से समझिए : मेरे प्यारे देशवासियों, जब कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से ढेर सारे सवाल पूछे, तब कृष्ण ने अर्जुन से कहा था, जैसा मन का भाव होता है वैसा ही कार्य परिणाम होता है। और उन्होंने कहा है, मनुष्य जिस बात पर विश्वास करता है, वो ही उसको परिणाम भी नजर आता है, वही दिशा उसको नजर आती है। हमारे लिए भी, अगर मन का विश्वास पक्का होगा, उज्ज्वल भारत के लिए हम संकल्पबद्ध होंगे, तो मैं नहीं मानता हूं कि जो पहले से हम बार-बार निराशा में पले-बढ़े हैं, अब हमें आत्मविश्वास से आगे बढ़ना है, हमें निराशा को छोड़ना है। चलता है! ये तो ठीक है! अरे चलने दो! मैं समझता हूं, चलता है का जमाना चला गया, अब तो आवाज यही उठी कि बदलना है, बदल रहा है, बदल सकता है; यही विश्वास हमारे भीतर होगा, तो हम भी उस विश्वास के अनुसार साधक हो, साधन हो, सामर्थ्य हो, संसाधन हो, लेकिन जब ये त्याग और तपस्या से जुड़ जाते हैं, कुछ करने के इरादे से बन जाते हैं, तो अपने-आप बहुत बड़ा परिवर्तन आता है और संकल्प सिद्धि में परिवर्तित हो जाता है।

हैं। एक सोच बनी है- हम कर सकते हैं, हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। आज का भारत एक बुलंद हौसले से भरा है। कभी कोई सोच सकता था कि लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री स्वयं स्वच्छता, शौचालय, सैनिटिरी पैड की बात करेंगे। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ते हुए सोच में बदलाव का संकेत भर दिया और जन-जन की भागीदारी ने इसे जन आंदोलन बना दिया। स्वदेशी के रूप में खादी को इतना बढ़ावा मिला कि बीते 10 वर्षों में इसकी बिक्री चार गुना बढ़ गई और खादी फैशन बन गया है।

नीति-निर्माताओं से लेकर विशेषज्ञों तक की सोच किस तरह बदली, इसका एक बड़ा उदाहरण जनधन योजना है। जब प्रधानमंत्री ने 2014 में इसकी शुरुआत की तो इसे संसाधनों की बर्बादी कहा गया, गरीब के पास पैसा ही नहीं तो खाते में क्या डालेगा... जैसी आशंकाएं जताई गईं। लेकिन आज वही जनधन खाते गरीबों का अभिमान-स्वाभिमान बन गए हैं। केंद्र सरकार की योजनाओं के कारण 5 वर्षों में ही 13.5 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आकर नए मध्यम वर्ग के रूप में स्थापित हुए हैं जिनमें विकास को लेकर नई आकांक्षाएं हैं।

सकारात्मकता के साथ विकास बनी जन-जन की सोच

चाहे खेल हो, विज्ञान हो, राजनीति हो या पद्म सम्मान हों, देश के सामान्य मानवी को लगता था कि अगर उसकी बड़ी सिफारिश नहीं है तो उसके लिए सफल होने की संभावना बहुत कम है। लेकिन बीते कुछ सालों में इन सभी क्षेत्रों में देश का सामान्य नागरिक, अब सशक्त, प्रोत्साहित महसूस कर रहा है।

पहले आतंकी हमले होते थे तो दुनिया से अपील करनी पड़ती थी, ताकि आतंक को रोक सके। लेकिन अब नए भारत की कार्यशैली से आतंकी हमले का जिम्मेदार देश दुनिया से खुद को बचाने की गुहार लगाता है। भारत की कार्रवाई ने पुरानी सोच को बदल दिया है। आज का भारत जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का समाधान भी पेश कर रहा है और उसका नेतृत्व भी कर रहा है। खेल-खिलाड़ियों को लेकर समाज की सोच बदली है क्योंकि केंद्र सरकार की ओर से इंफ्रास्ट्रक्चर और योजनाओं ने बाधाओं को दूर कर दिया है। आज मेडल जीतने के मामले में भारत शतक लगा रहा है। इतना ही नहीं, भारत में वर्षों तक आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी विकास के रास्ते में एक बड़ी बाधा बनी हुई थी। लेकिन 2014 से भारत में दुनिया की सबसे बड़ी इंफ्रास्ट्रक्चर बिल्डिंग ड्राइव से अभूतपूर्व इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित हो रहे हैं। भारत की स्पीड और स्केल का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि वर्ष

“

जनवरी, मैं इसे सामान्य 1 जनवरी नहीं मानता। जिन लोगों ने 21वीं शताब्दी में जन्म लिया है, उनके लिए यह महत्वपूर्ण वर्ष है। 21वीं शताब्दी में जन्मे हुए नौजवानों के लिए, ये वर्ष उनके जीवन का निर्णायक वर्ष है। वो 18 साल के जब-जब होंगे, वो 21वीं सदी के भाग्य-विधाता होने वाले हैं। 21वीं सदी का भाग्य ये नौजवान बनाएंगे जिनका जन्म 21वीं सदी में हुआ है, और अब 18 साल होने पर है। मैं इन सभी नौजवानों का हृदय से बहुत-बहुत स्वागत करता हूं, सम्मान करता हूं और उनका अभिनंदन करता हूं कि आइए, आप अब 18 साल की दहलीज पर आ कर खड़े हैं। देश का भाग्य निर्माण करने का आपको अवसर मिल रहा है। आप देश की विकास यात्रा में बहुत तेजी से भागीदार बनिए, देश आपको निमंत्रण देता है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

2013-14 में हर दिन 12 किलोमीटर राजमार्ग बनते थे। अब वर्ष 2022-23 में प्रतिदिन लगभग 28 किलोमीटर से अधिक राजमार्ग बन रहे हैं। 2014 में देश के 5 शहरों में मेट्रो रेल की कनेक्टिविटी थी। 2023 में देश के 22 शहरों में मेट्रो रेल कनेक्टिविटी है। 2014 में देश में करीब 70 ऑपरेशनल हवाई अड्डे थे, 2023

में यह संख्या लगभग 150 तक पहुंच गई है। 2014 में देश में लगभग 380 मेडिकल कॉलेज थे, 2023 में यह संख्या 700 से अधिक हो चुकी है। 2014 में ग्राम पंचायतों तक सिर्फ 350 किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर पहुंचा था, 2023 तक लगभग 6 लाख किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर बिछाकर ग्राम पंचायतों को जोड़ा गया है। 2014 में 55 प्रतिशत गांव ही पीएम ग्राम सड़क योजना से जुड़े थे, उसमें वर्तमान केंद्र सरकार ने 4 लाख किलोमीटर से ज्यादा सड़कें बनाकर यह आंकड़ा 99 प्रतिशत तक पहुंचा दिया है। 2014 तक भारत में लगभग 20 हजार किलोमीटर रेल लाइनों का विद्युतीकरण हुआ था। यानी आजादी के बाद के 70 वर्षों में केवल 20 हजार किमी। जबकि बीते 10 साल में करीब 40 हजार किलोमीटर रेल लाइनों का विद्युतीकरण हुआ है। यह आज के भारत की स्पीड, स्केल और सफलता का प्रतीक है।

पीएम आवास योजना के तहत 4 करोड़ से अधिक घरों को मंजूरी सभी के लिए आवास की दिशा में एक अनूठी गारंटी बन गई है। पीएम मोदी के अनुसार, आसान लक्ष्यों को चुनने की बजाय, लंबे समय से अटके मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने की सोच ने सरकार को, कल्याण को यथार्थ बनाने में मदद की है। जो गांव पहले गुमनामी में जीने को अभिशप्त थे, उनका शत-प्रतिशत विद्युतीकरण इस सोच का एक सटीक उदाहरण है। जीवन के लिए आवश्यक जरूरत पानी, भारत में करोड़ों परिवारों के लिए एक दूर की कल्पना बन गया था। आजादी के कई सालों बाद भी बीमारी और स्वास्थ्यगत मुश्किलों के दौरान पानी ढोने में महिलाएं सबसे आगे थीं। जबकि, प्रधानमंत्री ने हमेशा महिलाओं को भारत के विकास में समान भागीदार बनने के लिए प्रोत्साहित किया है। उनकी सरकार का जल-जीवन मिशन इसका प्रमाण है। आज 13.76 करोड़ से अधिक घरों में नल से जल मिल रहा है। इसकी वजह से कवरेज एक दशक पहले के केवल 17% से 70% से अधिक परिवारों तक पहुंच गई है। स्वच्छता संकट का खामियाजा भुगतने में भी महिलाएं सबसे आगे रही हैं। 2014 से पहले, गांवों में स्वच्छता कवरेज केवल 40% थी, जबकि 'स्वच्छ भारत मिशन' के रूप में सरकार के जीवंत प्रोत्साहन के बाद, देश 100% खुले में शौच मुक्त है। इसके अलावा, उज्ज्वला योजना के तहत 10 करोड़ एलपीजी कनेक्शन स्वीकृत होने के साथ धुआं रहित रसोई की सरकार की गारंटी सैचुरेशन के करीब है। आज भारत के लगभग 100% गांवों में एलपीजी कनेक्शन हैं, जबकि पहले यह संख्या 50-55% थी। जैसा कि बिजली, पानी, आवास- अन्य बुनियादी मानवीय अधिकारों के बारे में बात करते हैं जो अच्छे स्वास्थ्य को निर्धारित करते हैं-पीएम मोदी के नेतृत्व में

> **मैं एक गरीब परिवार से आया हूं, गरीबी को जीकर यहां आया हूं, इसलिए जानता हूं कि सरकार के इन प्रयासों ने कितने सारे बैरियर को तोड़ने का काम किया है। माइंडसेट में ये परिवर्तन देश के भीतर ही नहीं, बाहर भी आया है।**
>
> **–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

सरकार बनने के बाद से ही हेल्थकेयर की रूपरेखा को फिर से परिभाषित करने के लिए दृढ़ संकल्पित रही है। आज 'आयुष्मान भारत पीएम जन आरोग्य योजना' हर साल 55 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को 5 लाख रुपये तक मुफ्त स्वास्थ्य सेवाओं की गारंटी देती है। इस प्रभावशाली योजना के तहत लगभग 28.30 करोड़ आयुष्मान कार्ड जारी किए गए हैं। इसके अलावा, आउट-ऑफ-पॉकेट खर्च को कम करने की कड़ी में, जन औषधि केंद्र, 50-90% की छूट पर सस्ती लेकिन गुणवत्तापूर्ण दवाएं प्रदान करते हैं, जिससे 23,000 करोड़ रुपये की बचत हुई है। आज, चाइल्ड इम्यूनाइजेशन ने 6 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में लगभग 100% और 17 राज्यों में 90% तक अपनी पहुंच बढ़ा दी है।

दशकों से लंबित मुद्दे, एक दशक में ही समाधान

भारत की अर्थव्यवस्था फ्रेजाइल फाइव का हिस्सा मानी जाती थी, आज भारत दुनिया का पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। बेहतर आर्थिक नीतियों ने देश में तरक्की के नए रास्ते खोले हैं। इससे समाज के हर वर्ग का जीवन बदला है। चाहे जीएसटी हो, चाहे बैंकिंग संकट का समाधान हो, चाहे कोविड संकट से निकलने के लिए बनाई गईं नीतियां हों...देश ने सदैव उन नीतियों को चुना जो दीर्घकालिक समाधान दे और नागरिकों को लंबे समय तक लाभ की गारंटी। महिला आरक्षण बिल उसी तरह की अनुमानित बाधाओं का उदाहरण है। यह मान लिया गया था कि महिला आरक्षण बिल सर्वसम्मति से पारित नहीं हो सकता। लेकिन देश के नए संसद भवन का शुभारंभ ही नारी शक्ति के वंदन से हुआ और तीन दशकों से लटका यह बिल तीन दिन में

यथार्थ बन गया।

अनुच्छेद 370, 35 ए जैसे मुद्दों को हमेशा बढ़ा-चढ़ाकर बड़ी चुनौतियों के रूप में पेश किया गया। एक अलग तरह का मनोवैज्ञानिक दबाव बना दिया गया था, लेकिन 5 अगस्त 2019 की तारीख इस चुनौती को पार करने की ऐतिहासिक तारीख बन गई। अनुच्छेद 370 के निष्प्रभावी होने से जम्मू-कश्मीर-लद्दाख के पूरे इलाके में समृद्धि-शांति और विकास के नए रास्ते खुल गए हैं। 2013 से 2023 के बीच भले ही एक दशक का समय बीता हो, लेकिन इस दौरान आए बदलावों में जमीन और आसमान का अंतर है। तब रेटिंग एजेंसियां भारत की जीडीपी की भविष्यवाणी नीचे की ओर जाने वाली करती थी, लेकिन 2023-24 में विपरीत हो रहा है। पहले बैंकिंग खस्ताहाल थी, आज बैंकिंग सेक्टर बेहतरीन उपलब्धियों के साथ लाभांश दिखा रही है। पहले रक्षा हो या अन्य क्षेत्र, घोटाले की खबरें आती रहती थी, लेकिन आज रक्षा क्षेत्र आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है और निर्यात रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। रक्षा क्षेत्र में घोटाले से निर्यातक देश की छवि तक एक लंबा सफर तय किया है।

मध्यम वर्ग की बात की जाए, तो 2013 के दौरान आर्थिक स्थितियों के कारण मध्यम वर्ग की बदहाली की चर्चा होती थी। लेकिन 2023-24 आते-आते, चाहे खेल हो या स्टार्टअप, अंतरिक्ष हो या तकनीक, देश का मध्यम वर्ग विकास यात्रा में सबसे आगे खड़ा नजर आता है। बीते 10 वर्षों में मध्यम वर्ग ने तेजी से प्रगति की है, उनकी आय बढ़ी है और आकार बढ़ा है। 2013-14 में लगभग 4 करोड़ लोग इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करते थे। 2023-24 में यह संख्या डबल हो गई है और 7.5 करोड़ से अधिक लोगों ने इनकम टैक्स रिटर्न फाइल किए हैं। टैक्स सूचना से जुड़ा एक अध्ययन बताता है कि 2014 में जो औसत आय साढ़े चार लाख रुपये से भी कम थी, वो 2023 में 13 लाख रुपये तक बढ़ गई है। इसका मतलब है कि भारत में लाखों लोग निम्न आय वर्ग से उच्च आय वर्ग की ओर बढ़े हैं। भारत में बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग और कम होती हुई गरीबी, ये दो कारक एक बहुत बड़े आर्थिक चक्र का आधार बन रहे हैं। गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों की आकांक्षा और इच्छाशक्ति, आज देश के विकास को शक्ति दे रही है। इन लोगों की शक्ति ने ही भारत को 10वीं अर्थव्यवस्था से 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना दिया है। आने वाले समय में यही इच्छाशक्ति भारत को दुनिया की शीर्ष-3 अर्थव्यवस्था में शामिल कराने जा रही है।

नेतृत्व के साथ स्थिरता और निरंतर विकास बनी गारंटी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नए भारत में मजबूत और प्रभावी नेतृत्व का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो अपने वादों को पूरा कर सकते हैं। आज पीएम मोदी की गारंटी, आम जन की आकांक्षाओं के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह उनकी सरकार के आखिरी पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा करने के दृढ़ संकल्प को दर्शाती है। यह देश के जन-जन को एक ऐसी राजनीतिक घटना का साक्षी बनाती है, जिसका अब तक अभाव था, जहां वादों का अर्थ होता है, उन्हें सार्थक रूप से लागू करने की गारंटी। भारत आज उस परिवर्तन को महसूस कर रहा है। 1960 के दशक में खाद्यान्न का आयातक होने से, आज दुनिया के सबसे बड़े अनाज निर्यातकों में से एक बन गया है। हाल के वर्षों में, खाद्यान्न की पहुंच में सुधार और वंचित लोगों के लिए सुरक्षा कवच का विस्तार करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

निश्चित रूप से सितारों के आगे जहां और भी है। भारत, इतने पर ही रूकने वाला नहीं है। इस अमृत काल में देश 2047 तक विकसित भारत बनने के लिए काम कर रहा है। भारत के सामर्थ्य का लोहा दुनिया भी मानने लगा है और यह कहने लगे हैं कि यह भारत का समय है।

आइए आगे जानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन ने किस तरह से देश की दीर्घकालिक समस्याओं का समाधान कर 2014 से 2024 को विकास का दशक बना दिया है तो संकल्प से सिद्धि का मंत्र स्वर्णिम भारत के लिए अमृत यात्रा विकसित भारत का संकल्प बन चुका है...

प्रधानमंत्री जनधन योजना

28 अगस्त, 2014, नई दिल्ली से लॉन्च

विजन 'इस आजादी के पर्व पर मैं एक योजना को आगे बढ़ाने का संकल्प करने के लिए आपके पास आया हूं - 'प्रधानमंत्री जनधन योजना'। इस योजना से हम देश के गरीब से गरीब लोगों को बैंक अकाउंट की सुविधा से जोड़ना चाहते हैं। आज करोड़ों परिवार हैं, जिनके पास मोबाइल फोन तो हैं, लेकिन बैंक अकाउंट नहीं हैं। यह स्थिति हमें बदलनी है। देश के आर्थिक संसाधन गरीब के काम आएं, इसकी शुरुआत यहीं से होती है। इसलिए इस योजना में जो अकाउंट खुलेगा, उसको डेबिट कार्ड दिया जाएगा। उस डेबिट कार्ड के साथ हर गरीब परिवार को एक लाख रुपये का बीमा सुनिश्चित कर दिया जाएगा, ताकि अगर उसके जीवन में कोई संकट आया, तो उसके परिवारजनों को एक लाख रुपये का बीमा मिल सकता है।'
(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लॉन्च के समय)

संकल्प की सिद्धि

51.04 करोड़
खाते नवंबर, 2023 तक जनधन योजना में खोले।

28.29 करोड़
खाते महिलाओं के खोले गए

34.04 करोड़
खाते ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्रों में खुले।

34.63 करोड़
रुपे डेबिट कार्ड किए जा चुके जारी।

अगस्त, 2015 में 17.9 करोड़ जनधन खाते थे जो नवंबर, 2023 तक बढ़कर करीब 51 करोड़ हो गए यानी 3 गुना।

एक दिन में 1.5 करोड़ खाते के साथ शुरुआत

"कल्पना कीजिए अगर करोड़ों गरीब परिवारों के जनधन योजना के खाते न होते, उनके घर उज्ज्वला के गैस कनेक्शन न होते, डीबीटी की सुविधा न होती, पीएम किसान सम्मान योजना न होती तो, इतने कम समय में 30 हजार करोड़ रुपए से अधिक, सीधे लाभार्थियों के खाते में कैसे पहुंच पाते?

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

बदलते भारत में योगदान

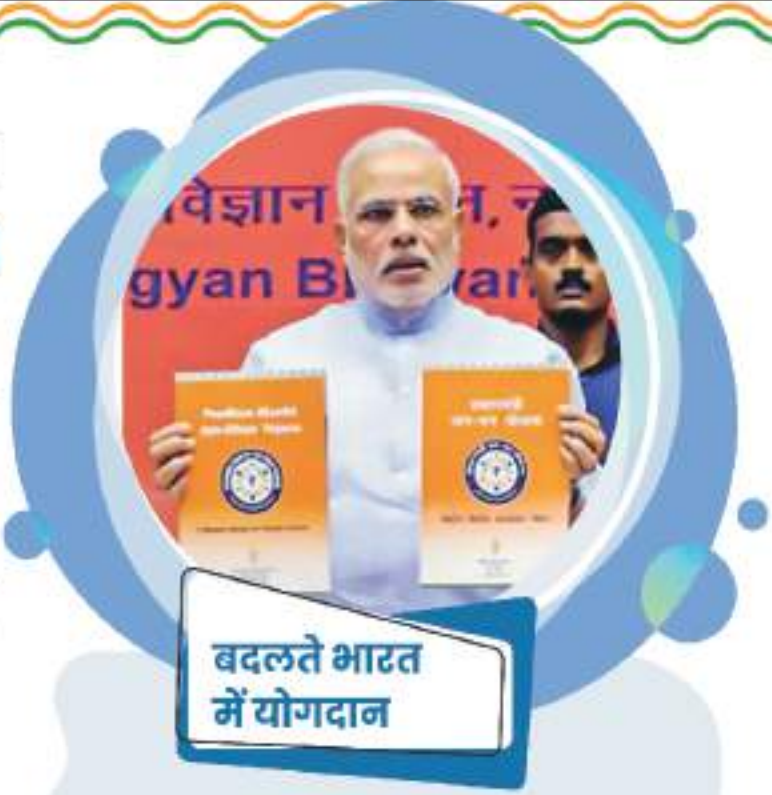

- आजादी के 68 साल बाद यानी 2014 तक देश की 68 फीसदी आबादी को बैंकिंग सुविधा नसीब नहीं हो पाई थी।
- अगस्त, 2014 में प्रत्येक परिवार को बैंक से जोड़ने के लक्ष्य के साथ योजना शुरू। 14 अगस्त 2018 को प्रत्येक वयस्क को जोड़ने के विजन के साथ विस्तार, करीब 51 करोड़ खाते खुले।
- जनधन योजना केंद्र सरकार की जन केंद्रित आर्थिक पहल के लिए आधारशिला बन गई है। मार्च 2014 से मार्च 2020 तक खुले प्रत्येक 2 खातों में एक खाता दरअसल पीएमजेडीवाई खाता ही था।
- कोविड काल में जनधन खाते की वजह से ही लोगों तक सीधा लाभ पहुंचा। गांवों का कोविड के विरुद्ध लड़ाई में सराहनीय योगदान।
- लॉकडाउन लगाए जाने के 10 दिन के भीतर लगभग 20 करोड़ महिलाओं के खाते में डीबीटी के माध्यम से मासिक 500 रुपये की वित्तीय सहायता भेजने की शुरुआत हुई।
- जनधन योजना के साथ जैम ट्रिनिटी यानी जनधन-आधार-मोबाइल के लिंक करने से फर्जीवाड़ा रुका और भ्रष्टाचार पर नकेल कस पात्र लाभार्थियों तक लाभ की योजनाएं पहुंची।
- डीबीटी के जरिये बैंक खातों में 32 लाख करोड़ रुपये से अधिक हस्तांतरित कर करोड़ों गरीब लाभार्थियों को दी आर्थिक ताकत। डीबीटी की वजह से सरकार ने 2.73 लाख करोड़ रुपये बचाए हैं।
- अक्टूबर, 2023 तक देश में 6,01,328 मैप किए गांव में से 5,99,791 (99.74%) यानी करीब-करीब शत-प्रतिशत गांव बैंकिंग सुविधाओं से जुड़ चुके हैं।
- सरकार ने खाते में बैलेंस अनिवार्यता नहीं रखी, लेकिन उन खातों में अगस्त, 2015 में 22,901 करोड़ रुपये जमा थे, वहीं आंकड़ा 2.09 लाख करोड़ पहुंचा। सिर्फ 8.2% खाते ही जीरो बैलेंस हैं।

स्टार्टअप इंडिया पहल

16 जनवरी, 2016, नई दिल्ली से लॉन्च

विजन "स्टार्टअप इंडिया एक पहल है न कि कोई योजना, जो देश में नवोन्मेषण, स्टार्टअप को बढ़ावा देने और निवेश को प्रोत्साहित करने को लेकर एक मजबूत इकोसिस्टम बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई। भारत के युवा नौकरी खोजने वाले के बजाय रोजगार पैदा करने वाले बनें। यदि एक स्टार्ट-अप सिर्फ 5 लोगों को भी रोजगार दे, तो यह भी राष्ट्र की बड़ी सेवा होगी।"
(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लॉन्च के समय)

संकल्प की सिद्धि

1.16 लाख
स्टार्टअप को दिसंबर, 2023 तक मिली मान्यता।

10 लाख
नौकरियां स्टार्टअप इंडिया की शुरुआत के बाद प्रत्यक्ष रूप से अर्जित की गई है।

26.5 हजार
से अधिक संस्थाओं को 2022 में मिली है मान्यता।

23 लाख
प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियां टेक स्टार्टअप ने 2017-2021 के बीच पैदा की हैं, गैसकॉन के अध्ययन में ऐसा कहा गया है।

> इस दशक में **Innovation, entrepreneurship** और **start-up** इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए सरकार जो तीन बदलाव कर रही है, उसमें पहला, **Entrepreneurship** को, इनोवेशन को सरकारी प्रक्रियाओं के जाल से मुक्त कराना। दूसरा, इनोवेशन को प्रमोट करने के लिए **institutional mechanism** का निर्माण करना। तीसरा, युवा **innovators**, युवा उद्यम की **handholding** करना।
>
> -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

बदलते भारत में योगदान

- 'भारत के लिए इनोवेशन' और 'भारत से इनोवेशन' का मंत्र लेकर भारत के स्टार्टअप दुनिया में न सिर्फ नेतृत्व कर रहे हैं बल्कि नए भारत के आधार स्तंभ भी बन रहे हैं।
- वर्ष 2014 में जब वर्तमान नेतृत्व ने काम करना शुरू किया तब देश में स्टार्टअप शब्द भी मुश्किल से सुनने को मिलता था। 500 से भी कम स्टार्टअप थे। परंतु एक दशक से भी कम समय में भारत में स्टार्टअप की दुनिया बदल चुकी है।
- विश्व स्तर पर 1.16 लाख स्टार्टअप के साथ भारत तीसरे सबसे बड़ा इकोसिस्टम बन गया है।
- वर्ष 2016-17 तक हर वर्ष लगभग एक यूनिकॉर्न भारत में जुड़ रहा था जो अब साल-दर-साल करीब 66% वृद्धि के साथ अतिरिक्त यूनिकॉर्न जुड़ रहे हैं।
- देश में यूनिकॉर्न की संख्या 115 तक पहुंच गई है जिनका मूल्यांकन 350 अरब डॉलर से अधिक है। विश्व में प्रत्येक 10 यूनिकॉर्न में से एक भारत में बन रहा है।
- भारत के स्टार्टअप आज 56 से अधिक अलग-अलग उद्योगों के साथ काम कर रहे हैं।
- स्टार्टअप इंडिया कार्य योजना को मूर्त रूप देने वाले स्टार्टअप के लिए फंड ऑफ फंड्स, स्टार्टअप इंडिया सीड फंड स्कीम और स्टार्टअप की सहायता के लिए क्रेडिट गारंटी स्कीम लागू की गई है।
- स्टार्टअप में बढ़ती तादाद और कार्य संस्कृति को हर हिस्से में पहुंचाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 16 जनवरी को राष्ट्रीय स्टार्टअप दिवस मनाने की घोषणा की।
- भारत की अध्यक्षता वाले जी-20 में एक सहभागी समूह स्टार्टअप-20 का पहली बार गठन किया गया।
- भारत के स्टार्टअप को दुनिया भविष्य के तौर पर देख रही है। देश में पहली बार इसरो द्वारा सफलतापूर्वक निजी रॉकेट लॉन्च किया जाना भारत में स्टार्टअप की उड़ान नीति का प्रमाण है।

आयुष्मान भारत मिशन

23 सितंबर 2018 को रांची से लॉन्च

विजन "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः'। हमारे इस सदियों पुराने संकल्प को इसी शताब्दी में हमें पूरा करना है और उसका आज एक बहुमूल्य आरंभ हो रहा है। समाज की आखिरी पंक्ति में जो इंसान खड़ा है। गरीब से गरीब को इलाज मिले, स्वास्थ्य की बेहतर सुविधा मिले। आज इस सपने को साकार करने का एक बहुत बड़ा अहम कदम इस बिरसा मुंडा की धरती से उठाया जा रहा है।" (प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लॉन्च के समय)

संकल्प की सिद्धि

55 करोड़
से अधिक लोगों को 5 लाख रु. तक की मुफ्त इलाज की सुविधा।

28.30 करोड़
आयुष्मान कार्ड आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत बनाए गए।

27,592
अस्पताल पंजीकृत।

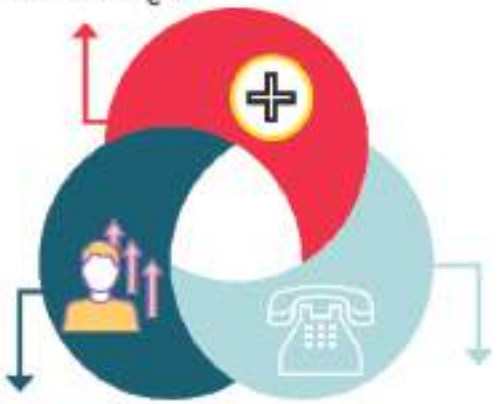

06 करोड़
लोग अस्पताल में हुए भर्ती।

14555
टोल फ्री नंबर पर योजना में अपनी पात्रता जानने के लिए कॉल करें।

बदलते भारत में योगदान

- पांच लाख रुपये तक का हेल्थ इंश्योरेंस देने वाली यह दुनिया की सबसे बड़ी योजना है। सरकारी पैसे से इतनी बड़ी योजना दुनिया के किसी भी देश में नहीं चल रही है।
- कैंसर, दिल की बीमारी, किडनी और लीवर समेत कई बीमारियों के इलाज को इस योजना में शामिल किया गया है।
- 1.60 लाख से अधिक आयुष्मान भारत स्वास्थ्य और आरोग्य केंद्र देश के गांवों तक बने।
- 10 हजार जन औषधि केंद्र बनाए गए, जहां 90 प्रतिशत तक सस्ती दवाएं उपलब्ध। 3 करोड़ से अधिक नागरिकों ने अमृत फार्मेसियों से सस्ती दवाएं खरीदकर बचत की।
- मिशन इंद्रधनुष द्वारा 5.65 करोड़ से अधिक माताओं और बच्चों को मिली टीके की सुरक्षा। कोविड में 220 करोड़ से अधिक वैक्सीन डोज दिए गए।
- 15 नए एम्स और करीब 300 मेडिकल कॉलेज जोड़े जा रहे हैं। 37 करोड़ से अधिक डिजिटल हेल्थ आईडी बनाए गए। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन से स्वास्थ्य रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण, 25 करोड़ से अधिक आभा यानी आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाते जोड़े गए।
- 2014 से अब तक लगभग 70 हजार मेडिकल सीटें जोड़ी गईं और टेली-परामर्श ने 15 करोड़ का आंकड़ा पार किया।
- लगभग 10 वर्षों में, देश में **MBBS** सीटें भी बढ़कर 1 लाख से अधिक हो चुकी हैं। इन वर्षों में, देश में मेडिकल की पीजी सीटों में भी 110 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।
- वर्ष 2023 के बजट में ढेढ़ सौ से अधिक नर्सिंग कॉलेज खोलने का ऐलान भी किया गया है।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

1 मई, 2016 को यूपी के बलिया से लॉन्च

विजन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद के केंद्रीय कक्ष में अपने पहले भाषण में स्पष्ट किया था कि उनकी सरकार गरीबों को समर्पित है। ये सरकार जो भी करेगी, गरीबों की भलाई और कल्याण के लिए करेगी। ऐसे में रसोई में मां-बेटी-बहू धुएं से मुक्त हों, उनका समय बचे, पर्यावरण की रक्षा हो, गैस कनेक्शन की पहुंच अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक हो, इस विजन के साथ 25 करोड़ परिवार वाले देश में तीन साल में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों के घर रसोई गैस पहुंचाने की योजना शुरू की गई।

संकल्प की सिद्धि

लक्ष्यांक
10 करोड़
परिवारों को 5 दिसंबर, 2023 तक रसोई गैस कनेक्शन दिए गए।

75 लाख
गैस कनेक्शन 2025-26 तक दिए जाने को मंजूरी।

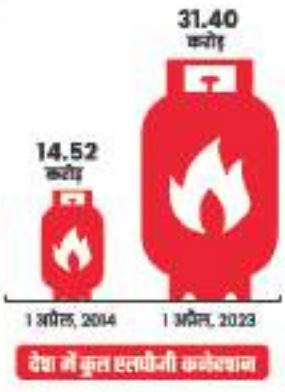

एक गरीब मां जब लकड़ी के चूल्हे से खाना पकाती है, तो वैज्ञानिकों का कहना है कि एक दिवस में उसके शरीर में 400 सिगरेट का धुआं चला जाता है। बच्चे घर में होते हैं और इसलिए उनको भी धुएं में ही गुजारा करना पड़ता है। खाना भी खाते हैं, तो धुआं ही धुआं होता है। आंख से पानी निकलता है और वो खाना खाता है। ये सारे हाल, बचपन में मैं जी चुका हूं... उस पीड़ा को जी कर आया हूं और इसलिए मुझे मेरी इन गरीब माताओं को इस कष्टदायक जिन्दगी से मुक्ति दिलानी है। इसलिए पांच करोड़ परिवारों में रसोई गैस देने का हमने उपक्रम किया है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, 1 मई 2016 को लॉन्च के समय

बदलते भारत में योगदान

- 1955 से 2014 तक देश में 14.52 करोड़ गैस कनेक्शन थे। उज्ज्वला योजना की शुरुआत से करीब आठ वर्ष से भी कम समय में लगभग 10 करोड़ कनेक्शन दिए जा चुके हैं।
- वर्ष 2022 तक 4.49 करोड़ डुप्लीकेट कनेक्शन की हुई छंटाई जिससे राष्ट्रीय खजाने में 71,301 करोड़ रुपये की हुई बचत।
- धुआं रहित रसोई की केंद्र सरकार की गारंटी सैचुरेशन के करीब है। आज भारत के लगभग हर-प्रतिशत गांवों में एलपीजी कनेक्शन है, जबकि पहले यह संख्या करीब 56% थी।
- खर्च में कमी आई, महिलाओं को स्वावलंबी बनने का समय मिला, शिक्षा के लिए परिवार को समय मिलने लगा। स्वास्थ्य में सुधार हुआ। समय की बचत हुई जिससे महिलाएं अन्य उपयोगी कार्य में समय देने लगीं।
- स्वेच्छा से सब्सिडी छोड़ने को प्रोत्साहित किया गया। पीएम मोदी के आह्वान पर करोड़ों लोगों ने सब्सिडी छोड़ी जो बन गया गरीबों तक मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन पहुंचाने का आधार।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक पारंपरिक ईंधन- लकड़ी, कोयला आदि से खाना पकाने से भारत में सालाना 5 लाख मौतें होती थीं। केंद्र सरकार के इस प्रयास से महिलाओं में सांस संबंधी बीमारी के मामलों में 20 फीसदी की कमी आई है।
- वर्ष 2018 में विश्व स्वास्थ्य संगठन, इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी ने उज्ज्वला योजना को अभूतपूर्व बताया। अब दुनिया के लिए उदाहरण बनी भारत की इस सफलता को यमन, बांग्लादेश जैसे देशों ने भी अपनाया।

जीएसटी

30 जून 2017, नई दिल्ली से लॉन्च

विजन "जिस प्रकार से सरदार वल्लभ भाई पटेल ने रियासतों को मिला कर एक राष्ट्रीय एकीकरण का बहुत बड़ा काम किया था, आज जीएसटी के द्वारा आर्थिक एकीकरण का एक महत्वपूर्ण काम हो रहा है। 29 राज्य, 7 केंद्र शासित प्रदेश, केंद्र के 7 टैक्स, राज्यों के 8 टैक्स और हर चीजों के अलग-अलग टैक्स का हिसाब लगाएं, तो 500 प्रकार के टैक्स कहीं न कहीं अपना रोल प्ले कर रहे थे। आज उन सबसे मुक्ति पाकर अब गंगानगर से ले कर ईटानगर तक, लेह से ले करके लक्षद्वीप तक वन नेशन-वन टैक्स, यह सपना हमारा साकार होकर रहेगा।"
(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लॉन्च के समय)

संकल्प की सिद्धि

1,67,929 लाख करोड़ रुपये नवंबर 2023 में जीएसटी राजस्व संग्रह, जिसमें सीजीएसटी 30,420 करोड़, एसजीएसटी 38,226 करोड़ रुपये सहित बाकी रकम अन्य मदों में हुए संग्रह।

1.60 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंचा सकल जीएसटी संग्रह वित्त वर्ष 2023-24 में छठी बार।

85,60,780 करोड़ रुपये सितंबर 2023 तक कुल कलेक्शन।

- नवंबर, 2023 में राजस्व पिछले साल के इसी महीने के जीएसटी राजस्व से 15 प्रतिशत अधिक है और 2023-24 के दौरान नवंबर 2023 तक सालाना आधार पर किसी भी महीने के लिए सर्वाधिक है, पिछले वर्ष के सकल जीएसटी संग्रह से 11.9% अधिक है।
- जुलाई 2017 से नवंबर 2023 के बीच लॉटरी वितरकों से 621.56 करोड़ रु. (ब्याज और जुर्माना सहित) की वसूली या प्राप्त की गई।

"

कानून भले ही कहता हो कि Goods and Service Tax, लेकिन हकीकत में ये Good and Simple Tax है और Good इसलिए कि Tax पर Tax, Tax पर Tax जो लगते थे, उससे मुक्ति मिल गई। Simple इसलिए है कि पूरे देश में एक ही Form होगा, एक ही व्यवस्था होगी। उसी व्यवस्था से चलने वाला है और इसलिए उसे हमें आगे बढ़ाना है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

बदलते भारत में योगदान

- जीएसटी सहकारी संघवाद को बढ़ावा देता है और भ्रष्टाचार तथा कर की चोरी में कमी लाता है।
- जीएसटी एक आधुनिक कर प्रशासन को बढ़ावा देता है जो अपेक्षाकृत आसान एवं अधिक पारदर्शी है। इससे भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने में मदद मिल रही है।
- जीएसटी ऐसी व्यवस्था है जिससे काले धन पर लगाम लगाने में मदद मिल रही है।
- इस व्यवस्था से ईमानदारी से व्यापार करने और नए गवर्नेंस की संस्कृति को भी बढ़ावा मिल रहा है।
- जीएसटी सिर्फ 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' नहीं है बल्कि जीएसटी 'वे ऑफ डूइंग बिजनेस' को भी एक दिशा दे रहा है। जीएसटी सिर्फ एक टैक्स रिफॉर्म नहीं है बल्कि वो आर्थिक रिफॉर्म का भी एक अहम कदम है।
- जीएसटी आर्थिक रिफार्म से भी आगे एक सामाजिक रिफार्म का नया तबका है जो एक ईमानदारी के उत्सव की ओर ले जाने वाला बन रहा है।
- जीएसटी एक ऐसा उत्प्रेरक है जो देश के व्यापार में असंतुलन को खत्म कर रहा है और इससे निर्यात प्रोत्साहन को भी बल मिल रहा है।
- जीएसटी एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें पहली बार केंद्र और राज्य के लोग मिल कर निश्चित दिशा में काम कर रहे हैं।
- 52वीं जीएसटी परिषद बैठक में परिषद ने प्रस्तावित जीएसटी अपीलीय न्यायाधिकरणों के अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति शर्तों में पात्रता एवं आयु के संबंध में संशोधन की सिफारिश की।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

22 जनवरी, 2015, पानीपत, हरियाणा

विजन "देश का प्रधानमंत्री एक भिक्षुक बनकर आपसे बेटियों की जिंदगी की भीख मांग रहा है। बेटियों को अपने परिवार का गर्व मानें, राष्ट्र का सम्मान मानें। आप देखिए इस असंतुलन में से हम बहुत तेजी से बाहर आ सकते हैं। बेटा और बेटी दोनों वो पंख है जीवन की ऊंचाईयों को पाने का उसके बिना कोई संभावना नहीं। ऊंची उड़ान भी भरनी है तो सपनों को बेटे और बेटी दोनों पंख चाहिए तभी तो सपने पूरे होंगे।" पूरा देश इस संदेश को समझेगा। हम सब मिलकर देश को भविष्य के संकट से बचाएंगे।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लॉन्च के समय)

संकल्प की सिद्धि

4 करोड़ से अधिक सुकन्या समृद्धि योजना खाते खुले, करीब 1.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक राशि जमा।

15% से अधिक की वृद्धि हुई है 10 वर्ष या उससे अधिक उम्र की शिक्षा प्राप्त लड़कियों में, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ लागू होने के बाद।

12.28 करोड़ लड़कियों का नामांकन स्कूली शिक्षा के लिए प्राथमिक से उच्चतर माध्यम कक्षाओं के लिए 2021-22 में रहा।

2.01 करोड़ से अधिक छात्राओं का नामांकन उच्च शिक्षा में पहली बार हुआ।

90 करोड़ से अधिक जन जागरूकता गतिविधियां राष्ट्रीय पोषण माह और पोषण पखवाड़े में आयोजित की गई हैं।

69.75 लाख से अधिक महिलाओं की सहायता अपील, 2015 से पूर्वकर्मी संचालित महिला हेल्पलाइन पर की गई है।

बदलते भारत में योगदान

- हमारी बेटियों की सामूहिक शक्ति, देश को नई ऊंचाई पर ले जाएगी। आज बेटियों का आर्थिक सशक्तीकरण हो रहा है। इसी को ध्यान में रखकर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना की शुरुआत हुई थी।
- महिलाओं को हर कदम, प्रत्येक निर्णय और हर अवस्था की चुनौतियों से मुक्ति के लिए समाधान मिला। जन्म से लेकर, पोषण, स्कूल, शिक्षा, रोजगार, सेवा में प्रवेश के जरिए राष्ट्र सेवा, उद्यमिता और परिवार में सुरक्षा की गारंटी मिली है।
- परिणाम है कि एनएफएचएस-5 के अनुसार संस्थागत प्रसव 88.6% हुआ। 2014-15 में लिंगानुपात 918 था जो 2021-22 में 934 हो गया है।
- 1876 में प्रथम राष्ट्रीय जनगणना के बाद से पहली बार प्रति 1,000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या अधिक हुई। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण में प्रति 1,000 पुरुषों पर 1,020 महिलाएं हैं।
- उज्ज्वला, नल से जल, स्वच्छ भारत मिशन, सौभाग्य जैसी योजना से महिलाओं को दैनिक जीवन की कठिनाईयों से मिली मुक्ति।
- तीन तलाक, जम्मू-कश्मीर से 35ए की समाप्ति से महिलाओं को मिला सुरक्षा का अधिकार।
- खेलो इंडिया स्कीम के 'महिलाओं के लिए खेल' घटक के तहत और टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम में खिलाड़ियों को सहायता दी जाती है। टॉप्स ने 104 महिला एथलीटों को सहायता।
- सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 के लिए पिछले दो वर्ष से लगातार 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक का बजट आवंटित। इसमें 2 लाख आंगनवाड़ी को उन्नत किया जा रहा है। पोषण अभियान के 10 करोड़ से अधिक लाभार्थी।
- अंतरिक्ष में नारी शक्ति का परचम, भारत में 15% महिला पायलट जो कि विश्व में है सर्वाधिक। नारी शक्ति वंदन कानून से लोकसभा और विधानसभाओं में 33% आरक्षण का अधिकार मिला।
- 10 करोड़ से अधिक महिलाएं स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं, 2 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का है संकल्प।

कोरोना ने तोड़ा अब कारोबारी

प्रवासी मजदूर कामयाब उद्यमी बनकर उभरे. उन्होंने बिजनेस के साथ रोजगार मुहैया कराने का ऐसा मॉडल खड़ा किया जिसे अब पूरे बिहार में अपनाया जा रहा

कंप्यूटर से जुड़ी हुई एक बड़ी-सी कढ़ाई मशीन के सामने से गुजरते हुए अर्चना कुशवाहा की नजरें मॉनिटर पर टिकी हैं. मशीन से कपड़े पर उभरते डिजाइन का मुआयना करने के साथ ही वे ऑटोमोबाइल सर्विस स्टेशन को कॉल करती हैं. उन्होंने एक दिन पहले ही अपनी कार ठीक होने के लिए भेजी थी. वे थोड़ी कड़क आवाज में पूछती हैं, "पिछले साल ही 17 लाख रुपए में खरीदी गई कार में इस तरह दिक्कत कैसे हो सकती है? वीकेंड से पहले यह ठीक हो जानी चाहिए." 32 वर्षीया अर्चना बिहार के पश्चिम चंपारण जिले में डिजाइनर साड़ियां और लहंगे तैयार करने वाली एक मैन्युफैक्चरिंग इकाई की मालकिन हैं.

अर्चना और उनके 38 वर्षीय पति नंदकिशोर कुशवाहा के लिए दिन काफी व्यस्तता भरा रहा. अर्चना 3,000 वर्ग फुट क्षेत्र में चलने वाले अपने इस वर्कशॉप में प्रोडक्शन की निगरानी की पूरी जिम्मेदारी संभाले हैं, वहीं नंद किशोर फोन पर खुदरा विक्रेताओं से ऑर्डर ले रहे हैं. वे बताते हैं, "शादियों का सीजन शुरू होने वाला है, इसलिए मांग काफी बढ़ गई है." इनकी कंपनी ने पिछले वित्त वर्ष में 2.38 करोड़ रुपए की कमाई की थी. इस साल तो इस दंपती को और ज्यादा रिटर्न की उम्मीद है. इनकी जोड़ी न सिर्फ एक सफल व्यवसायी की सुखद तस्वीर पेश करती है बल्कि अर्चना और नंद किशोर के जीवन में आए एक बेहतरीन बदलाव की कहानी भी बयान करती है.

मार्च 2020 तक दोनों मिलकर सूरत में महीने में महज 20,000 रुपए कमा पाते थे. नंद किशोर औद्योगिक सिलाई मशीनों के संचालन की देख-रेख से जुड़े थे, जबकि अर्चना एक सिलाई कारीगर यानी दर्जी का काम किया करती थीं. कोविड-19 महामारी शुरू होने के कुछ ही समय बाद यह काम भी उनके हाथ से निकल गया और वे बेरोजगार हो गए. चुनौतियों से जूझता यह दंपती कुछ महीनों तक बिना किसी आमदनी के गुजारा करता रहा. फिर पश्चिम चंपारण जिले में अपने गांव लौटने का फैसला किया.

मोहम्मद अय्यूब अंसारी (एकदम बाएं). वे उन कुशल कारीगरों में से थे जो कोविड के दौरान अपने घर लौट आए. चनपटिया में उन्होंने जीशान जींस ट्रेडर्स नाम से उपक्रम शुरू किया, जहां से अब 20 लाख रु. सालाना की बिक्री हो रही

चनपटिया स्टार्टअप क्लस्टर

पश्चिमी चंपारण, बिहार

मई 2020 में श्रमिक विशेष ट्रेन पकड़कर ये लोग बिहार सरकार के बनाए क्वारंटीन सेंटर पहुंचे. इस दौरान सबसे बड़ी बात यह रही कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के साथ-साथ निजी तौर पर दौरे करके मजदूरों से जुड़े रहे. पश्चिम चंपारण सुविधा केंद्र में ऐसी ही एक कॉन्फ्रेंस के दौरान नीतीश ने तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट कुंदन कुमार को प्रवासियों को संभावित रोजगार देने के उद्देश्य से उनके हुनर को ध्यान में रखकर एक रोडमैप तैयार करने का निर्देश दिया. नतीजा यह रहा कि मजदूरों को कशीदाकारी, चमड़े का सामान बनाने, जींस, वर्तन, काष्ठ शिल्प, मार्केटिंग, तकनीकी और ऐसे ही अन्य हुनर के बारे में जानकारी मिल पाई.

डीएम ने श्रमिकों के साथ एक के बाद एक कई बैठकें कीं और खुद का व्यवसाय स्थापित करने की उनकी इच्छा के बारे में जाना. हालांकि, सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि पैसे का इंतजाम कैसे होगा. प्रशासन ऐसी सहायता देने में सक्षम नहीं था और बैंक बिना पुख्ता गारंटी कर्ज देने में हिचकिचा रहे थे. आखिरकार, कुंदन कुमार ने उपाय सोचा. बैंक अधिकारियों के साथ कई दौर की बैठकें कीं और आखिरकार 59 श्रमिकों को कुल 11 करोड़ रुपए का कर्ज मिलना मुमकिन हो पाया. इस धनराशि से वे पावरलूम, कंप्यूटर-चालित कढ़ाई मशीनें और दूसरी तरह की मशीनें खरीदने में सक्षम हो सके. जिला मुख्यालय से करीब 17 किमी दूर चनपटिया में राज्य खाद्य निगम के गोदामों को खाली कर दिया गया और इस जगह पर एक बिजनेस क्लस्टर स्थापित करने की अनुमति मिली. आज ये उद्यमी उच्च गुणवत्ता वाले जैकेट, साड़ी, शर्ट, वर्तन और अन्य सामान तैयार करते हैं, फिर उन्हें स्थानीय, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल तक के बाजारों में बेचते हैं. चनपटिया क्लस्टर करीब एक लाख वर्ग फुट में फैला है, और इसमें 1.25 रुपए प्रति वर्ग फुट जैसे किफायती किराए पर जगह उपलब्ध है.

अप्रैल 2021 से अब तक इन उद्यमियों ने करीब 22 करोड़ रुपए की कुल बिक्री की है और यहां 1,000 से ज्यादा श्रमिकों को रोजगार मिल रहा है. अर्चना और उनके पति ने 25 लाख रुपए के कर्ज के साथ साड़ी और लहंगे बनाने का कारखाना लगाया. उन्होंने पिछला कर्ज चुका दिया है और अब विस्तार के लिए अतिरिक्त धन चाहते हैं. लुधियाना की एक जींस फैक्ट्री में सुपरवाइजर रहे 39 वर्षीय सुदामा पटेल ने मार्च-दिसंबर 2023 के दौरान अपने उद्यम डीकेडी चंपारण डिएक्सन्स के जरिए 50 लाख रुपए का धंधा किया. श्रमिक रहे 45 वर्षीय आनंद कुमार भी अब उद्यमी बन चुके हैं. स्टील वर्तन उद्योग को उनकी बिक्री 'साल अंकों' में पहुंच चुकी है.

सफलता की ये कहानियां चनपटिया मॉडल को परिभाषित करती हैं, और बिहार सरकार को पूरे राज्य में इसे लागू करने के लिए प्रेरित करती हैं. इस विस्तार के सही मायने इसी बात से समझे जा सकते हैं कि मुजफ्फरपुर में 40 मैन्युफैक्चरिंग इकाइयों का क्लस्टर हर माह छह लाख से ज्यादा स्कूल बैग बनाने की क्षमता रखता है. कुंदन अब भले यहां के डीएम नहीं हैं लेकिन चनपटिया की सफलता दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई है. यही वजह है कि पश्चिम चंपारण जिले में इसी तरह के उद्यमों के लिए 141 प्रस्ताव आए हैं. उप-विकास आयुक्त अनिल कुमार प्रशासन की तरफ से सफलता की यह इबारत दोहराने की प्रतिबद्धता जाहिर करते हैं.■

खुशी की वजह

- बिहार सरकार ने कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान घर लौटने वाले कुशल प्रवासी श्रमिकों को 11 करोड़ रुपए का बैंक कर्ज उपलब्ध कराया है
- 59 प्रवासी श्रमिक सफल उद्यमी बन चुके हैं और उन्होंने 1,000 से ज्यादा लोगों को रोजगार दिया है. अप्रैल 2021 से अब तक इनकी कुल बिक्री 22 करोड़ रुपए के ऊपर रही है

खुशी की खोज

सहानुभूति से परोपकारिता तक

उत्तर प्रदेश के सुदूर इलाके में एक मुफ्त डायलिसिस केंद्र **उन हजारों लोगों के लिए वरदान साबित** हुआ है जो महंगा इलाज नहीं करा सकते

दान का सबसे बड़ा रूप कमजोर लोगों की मदद करना है. इसी तरह की सहायता गुरुग्राम निवासी 61 वर्षीय सेवानिवृत्त क्लर्क बलराम चंद्रा को हासिल हुई जो किडनी की गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं. दरअसल, इन्हें अपनी मेहनत की कमाई की अधिकांश भविष्य निधि एक

राम निवास सिंह (1948-2022) की स्मृति में बनाया गया है. एक किसान परिवार में जन्मे, राम निवास साल 1968 में बॉम्बे (अब मुंबई) चले गए थे और एक फैक्ट्री मजदूर के रूप में काम करने के बाद, साल 1976 में उन्होंने बॉम्बे इंटेलिजेंस सिक्युरिटी (बीआइएस) इंडिया लिमिटेड की स्थापना की थी. बीआइएस कुछ ही वर्षों में मुंबई की प्रमुख सुरक्षा एजेंसी बन गई. '90 के दशक में, बीआइएस का विस्तार एक दर्जन से अधिक राज्यों तक हुआ और अब इसमें 60,000 से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं. साल 2003 में बैकअप के साथ, बाबू आर.एन. सिंह डायलिसिस सेंटर में हर बिस्तर पर ऑक्सीजन की सुविधा उपलब्ध है. अस्पताल में मरीजों की देखरेख के लिए तीन डॉक्टरों और 15 पारामेडिकल स्टाफ की एक टीम है. मरीजों का इलाज 'पहले आओ, पहले पाओ' नीति के आधार पर किया जाता है. मरीजों से केवल एक रुपए रजिस्ट्रेशन शुल्क ही लिया जाता है. चूंकि यह सेंटर गोरखपुर के पिछड़े इलाके में स्थित है, इसलिए यहां आने वाले 90 प्रतिशत मरीज वहीं हैं जिन्हें मुफ्त डायलिसिस की सख्त जरूरत होती है. इस डायलिसिस केंद्र

खुशी की वजह

- बाबू आर.एन. सिंह डायलिसिस सेंटर पर उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों के गरीब मरीजों के लिए पूरी तरह निःशुल्क डायलिसिस होता है
- अब तक इस सेंटर से 2,000 से अधिक मरीज लाभान्वित हो चुके हैं
- नवंबर, 2023 तक इस सेंटर पर 5,000 डायलिसिस प्रक्रियाएं संपन्न हुईं
- इस सेंटर पर मरीजों का इलाज 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर होता है. यहां निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा भी उपलब्ध है

निजी अस्पताल में डायलिसिस करवाने पर खर्च करनी पड़ी. बलराम बताते हैं, ''दो साल में मैंने पांच-पांच लाख रुपए खर्च किए. जब पैसे नहीं बचे तो डायलिसिस करवाना छोड़ दिया.'' उसके बाद अप्रैल 2023 में, बलराम ने एक रिश्तेदार के माध्यम से उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के बड़हलगंज इलाके में एक मुफ्त डायलिसिस केंद्र के बारे में सुना. पिछले सात महीनों से बलराम वहीं पर मुफ्त डायलिसिस करा रहे हैं.

असल में, गोरखपुर शहर से 75 किमी दूर सरयू नदी के तट पर बड़हलगंज इलाके के भरौली गांव में खेतों से घिरा हुआ बाबू आर.एन. सिंह डायलिसिस सेंटर उन किडनी रोग पीड़ितों के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है जो नियमित डायलिसिस का खर्च उठाने में असक्षम हैं. इस डायलिसिस सेंटर का उद्घाटन 29 मार्च, 2023 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया था. तब से, 2,000 लाभार्थियों के लिए 5,000 से अधिक डायलिसिस प्रक्रियाएं मुफ्त में की जा चुकी हैं. इनमें से आधे से अधिक उत्तर प्रदेश से बाहर के राज्यों से हैं. यह अनोखा डायलिसिस सेंटर भरौली गांव के रहने वाले राम निवास को किडनी की गंभीर बीमारी का पता चला. उनके बेटे संतोष सिंह कहते हैं, ''पिताजी को डायलिसिस के दौरान बहुत दर्द होता था. वे उन गांववालों की तकलीफ भी समझ रहे थे जिन्हें डायलिसिस के लिए शहरों के चक्कर लगाने पड़ते थे.''

साल 2022 में 1 जनवरी को अपने जन्मदिन पर गांव भरौली में, राम निवास ने गरीबों के लिए एक मुफ्त डायलिसिस केंद्र के निर्माण की घोषणा की. अगले दिन मुंबई में उनकी मृत्यु हो गई. उसके बाद संतोष ने अपने पिता के सपने को पूरा करने का संकल्प लिया. धीरे-धीरे भरौली में 20,000 वर्ग फुट पैतृक भूमि पर एक आधुनिक डायलिसिस केंद्र को आकार दिया. सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद, स्वास्थ्य विभाग में 10 बिस्तरों वाला डायलिसिस केंद्र पंजीकृत हुआ. उत्तर प्रदेश स्वास्थ्य विभाग के सेवानिवृत्त अतिरिक्त निदेशक आर.बी. अग्रवाल बताते हैं, ''उत्तर प्रदेश के कई जिलों में डायलिसिस की सुविधा नहीं है. ऐसी स्थिति में, गोरखपुर के एक पिछड़े गांव में डायलिसिस सेंटर की स्थापना समाज सेवा का एक अनूठा उदाहरण है.''

पूर्णतः वातानुकूलित और 24 घंटे पावर

डायलिसिस सेंटर की परिकल्पना बॉम्बे इंटेलिजेंस सिक्युरिटी (बीआइएस) के संस्थापक आर. एन. सिंह ने की थी जो किडनी की बीमारी से पीड़ित थे. सेंटर का पूरा खर्च बीआइएस के सीएसआर फंड के जरिये वहन किया जाता है

का पूरा खर्च बीआइएस के कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) फंड की ओर से वहन किया जा रहा है.

गोरखपुर में बीआइएस के प्रबंधक मनोज कुमार सिंह कहते हैं, ''हम किसी से चंदा नहीं लेते हैं. मरीज और उसके साथ आए तीमारदार को नाश्ता भी मुफ्त मिलता है.'' इस डायलिसिस सेंटर पर एक एम्बुलेंस भी तैयार रखी गई है, उन मरीजों के लिए जो गोरखपुर पहुंचने के बाद सेंटर आ पाने में असमर्थ होते हैं. इस तरह से गोरखपुर का भरौली गांव किडनी रोगियों के लिए वाकई वरदान साबित हो रहा है. ■

खुशी की खोज

इसे कहते हैं स्ट्रीट फूड

अपने ग्राहकों को सेहत के लिहाज से सुरक्षित स्ट्रीट फूड परोसने वाला अहमदाबाद का कांकरिया लेक फूड हब पूरे देश में **अनुकरणीय मॉडल बन रहा**

अहमदाबाद में 15वीं सदी की कांकरिया झील का किनारा 2018 में देश में पहला 'क्लीन स्ट्रीट फूड हब' बन गया, जिसे भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआइ) ने प्रमाणित किया है. इस पूरे क्षेत्र में करीब 60 वेंडर हैं, जो सालाना करीब 1.2 करोड़ लोगों को बेहद साफ-सुथरे तरीके से पाव भाजी, समोसा, ढोकला, पानीपुरी, भेलपुरी, दाबेली, खिचू, आइसक्रीम, कॉफी आदि व्यंजन परोसते हैं. उनमें से कई त्योहारों और दिसंबर के आखिरी हफ्ते में कांकरिया कार्निवल के दौरान आते हैं.

'क्लीन स्ट्रीट फूड हब' का प्रमाणपत्र मिलने पर सकारात्मक प्रतिक्रिया को देखते हुए कांकरिया झील से ही प्रेरणा लेते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय के साथ मिलकर पिछले साल सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को देशभर के 100 जिलों में ऐसी 100 फूड स्ट्रीट विकसित करने के लिए नाम मांगे. इन सड़कों को उचित तरीके से साफ-सफाई की जाएगी और सीवेज और कचरा निपटान व्यवस्था दुरुस्त की जाएगी. इनमें से प्रत्येक फूड स्ट्रीट को विकसित करने के लिए प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश को एक करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता मिलेगी. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की तरफ से यह धनराशि इसी शर्त पर मिलेगी कि इन फूड हब में मानक आधार पर एफएसएसएआइ के दिशानिर्देशों का पूरी तरह पालन किया जाएगा. सरकार ईट राइट इंडिया अभियान के तहत फेरीवालों को साफ-सफाई और खाद्य जोखिम से जुड़े दिशानिर्देशों के बारे में प्रशिक्षित करने, स्वतंत्र थर्ड पार्टी ऑडिट और विभिन्न फूड स्ट्रीट के प्रमाणन पर भी काम कर रही है.

स्ट्रीट फूड का असंगठित क्षेत्र न केवल आजीविका का एक बड़ा साधन है और लाखों लोगों को किफायती दामों पर खाना मुहैया कराता

★★★

खुशी की वजह

- भारत के पहले क्लीन स्ट्रीट फूड हब के रूप में प्रमाणित कांकरिया लेक में बढ़ी कोई 60 वेंडर हर साल करीब 1.2 करोड़ लोगों को साफ-सुथरे माहौल में शुद्ध खानपान मुहैया कर रहे
- फूड सेफ्टी ऐंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया 100 जिलों में ऐसे 100 फूड स्ट्रीट की योजना बना रहा है. केंद्र इनमें से हरेक को अपना ठीया बनाने के लिए 1-1 करोड़ रु. देगा

★★★

कांकरिया लेक फूड हब
अहमदाबाद

है, बल्कि हमारी समृद्ध पाककला की विरासत को भी आगे बढ़ा रहा है. स्ट्रीट फूड पर्यटकों को भी खूब लुभाता है. एक अनुमान के मुताबिक, भारत में रेहड़ी-पटरी वाले बाजार में करीब एक करोड़ विक्रेता शामिल हैं और इनमें से 20 फीसद स्ट्रीट फूड कारोबार से जुड़े हैं. एफएसएसएआइ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) जी. कमल वर्धन राव कहते हैं, ''इसमें कोई संदेह नहीं कि स्ट्रीट मार्केट भारत में खानपान, रोजगार और मन-बहलाने का एक प्रमुख साधन है लेकिन हम इसमें उस तरह निवेश करने में कामयाब नहीं रहे हैं जिस तरह विदेश में किया गया है.''

शहरीकरण और बढ़ते प्रदूषण के बीच स्ट्रीट फूड अक्सर संक्रामक रोगों की भी वजह बनता जा रहा है. गुजरात के फूड ऐंड ड्रग कंट्रोल एडमिनिस्ट्रेशन खाद्य एवं औषधि नियंत्रण प्रशासन ने एफएसएसएआइ और एक निजी फर्म के साथ मिलकर कांकरिया झील के आसपास शुरुआती प्री-ऑडिट किया था, जिसके पीछे उद्देश्य यह पता लगाना था कि कमियों को कैसे दूर किया जा सकता है. इसके बाद फूड सेफ्टी अलेयरनेस ऐंड ट्रेनिंग ऑर्गेनाइजेशन की तरफ से स्ट्रीट फूड विक्रेताओं को प्रशिक्षित किया गया. फिर, अंतिम चरण की मूल्यांकन प्रक्रिया अपनाई गई ताकि यह साफ हो सके कि कचरा निपटान, व्यक्तिगत स्वच्छता की क्या स्थिति है. साथ ही इसका सीमांकन हो सके कि कहां खाना पकाना है और कहां नहीं. इसके अलावा स्ट्रीट लाइट, कीट-पतंगों पर नियंत्रण और व्यापक स्तर पर साफ-सफाई की व्यवस्था दुरुस्त रहे.

अहमदाबाद में खाने-पीने के सभी ठिकानों पर नजर रखने वाले नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है, ''कांकरिया लेक फूड हब में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर प्रतिबंध है. हम ऐसे पैकेज्ड फूड को तरजीह देते हैं, जिस पर मैन्युफैक्चरिंग और एक्सपायरी की स्पष्ट तारीख हो.'' यह विभाग हर आउटलेट से चार महीने पर परीक्षण के लिए सैंपल लेता है. इस क्षेत्र की नियमित निगरानी होती है और वेंडरों को सैनिटाइज किया जाता है. उस अधिकारी का कहना है, ''साल में दो बार 'क्लीन स्ट्रीट फूड हब' सर्टिफिकेट को रिन्यू किया जाता है. कांकरिया को हालिया सर्टिफिकेट एक पखवाड़े पहले ही मिला है.''

ऐसा ही हब दिल्ली के चांदनी चौक में पराठे वाली गली में विकसित किया जा रहा है. राव का कहना है, ''फूड बाजार की दशा सुधारकर हम न केवल स्वस्थ भविष्य बल्कि पर्यटन और रोजगार सर्जन में भी निवेश कर रहे हैं.''

> **''गली-सड़क के मार्केट भारत में खानपान, रोजगार और मनोरंजन का अहम जरिया हैं. पर हमने इसमें उस तरह से निवेश नहीं किया जिस तरह से विदेशों में किया जाता है''**
>
> **जी. कमल वर्धन राव**, *सीईओ, एफएसएसएआइ*

- पीएम आवास ग्रामीण के लाभार्थियों में लगभग 70 प्रतिशत महिलाएं हैं। इसी तरह स्टैंडअप इंडिया के 81% लाभार्थी महिलाएं हैं। करीब 55 लाख स्टार्टअप में कम से कम एक महिला निदेशक है।

- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में महिलाओं के स्वामित्व वाले और संचालित उद्यमों को 10 लाख रुपये तक के 68% ऋण स्वीकृत किए गए। 27 करोड़ से अधिक महिलाओं को मुद्रा लोन मिले।
- केंद्र सरकार की महिला सशक्तीकरण और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस वाली नीतियों का ही परिणाम है कि देश में महिला स्वामित्व वाले सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की संख्या 84.07 लाख पहुंच गई है।
- महिला के नेतृत्व वाले स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए फंड ऑफ फंड में निधि का 10% महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप के लिए आरक्षित है।

- केंद्र सरकार ने सभी संघ राज्य क्षेत्रों के पुलिस बल में कांस्टेबल से एसआई तक के पदों की सीधी भर्ती में 33% आरक्षण दिया है।
- 33 सैनिक स्कूलों में सह-शिक्षा है। जुलाई 2023 तक यहां 1,299 छात्राएं पढ़ रही हैं। नए पैटर्न के सैनिक स्कूलों में 303 छात्राएं हैं।
- सरकार ने सशस्त्र सेनाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए लड़ाकू पायलटों की भूमिका सहित महिलाओं को स्थायी कमीशन देना, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में लड़कियों के प्रवेश की अनुमति भी दी है।

- देशभर के 250 जिलों में मेधावी छात्राओं के लिए विज्ञान ज्योति कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा रहा है।
- भारत में विज्ञान-तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में लड़कियों का पंजीकरण 43 प्रतिशत तक पहुंच चुका है जो समृद्ध और विकसित देश अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी के मुकाबले सबसे अधिक है।
- मिशन शक्ति दिशानिर्देश अप्रैल, 2022 से लागू है। इसमें दो उप स्कीम हैं। महिलाओं की सुरक्षा और संरक्षण के लिए 'संबल', जबकि 'सामर्थ्य' का उद्देश्य महिला सशक्तीकरण है। संबल में वन स्टॉप सेंटर जबकि सामर्थ्य में शक्ति सदन शामिल है।
- हिंसा और संकट से प्रभावित महिलाओं के लिए देश में 752 वन स्टॉप सेंटर हैं, जहां 8.01 लाख महिलाओं को सहायता मिली है।
- महिला सम्मान बचत पत्र योजना शुरू की गई है जिसमें 7.5 प्रतिशत ब्याज दर वार्षिक रखी गई है।
- दीन दयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत 9.93 करोड़ महिलाएं करीब 90 लाख महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं।

3.21 करोड़
महिलाएं पीएम मातृ वंदना योजना की लाभार्थी, 14 हजार करोड़ रुपये से अधिक दिए गए।

- प्रधानमंत्री मातृत्व सुरक्षित अभियान में लगभग 4 करोड़ से अधिक निःशुल्क प्रसव पूर्व जांच हुए।
- मिशन शक्ति के तहत सखी निवास योजना में बच्चों की डे केयर सुविधा के साथ 495 कामकाजी महिला छात्रावास देशभर में हैं।
- पेड मैटरनिटी लीव 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह किया गया।
- जन औषधि केंद्रों में 1 रुपये में सेनिटरी पैड। अभी तक 30 करोड़ से अधिक सैनिटरी पैड उपलब्ध कराए गए।
- 2018-20 में मातृ मृत्यु दर घटकर प्रति एक लाख पर 97 रह गई है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से पीएम का संवाद

हर व्यक्ति तक सरकारी लाभ पहुंचाने पर केंद्रित

विकसित भारत संकल्प यात्रा

विकसित भारत संकल्प यात्रा, ऐसे लोगों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बन रहा है जो अब तक सरकार की योजनाओं से नहीं जुड़ पाए हैं। यात्रा गाड़ी को महिला, युवा, किसान, गरीब सहित सभी वर्गों का समर्थन मिल रहा है। करीब एक महीने में यात्रा 3 करोड़ से अधिक प्रतिभागियों तक पहुंच चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 दिसंबर को एक बार फिर विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों के साथ बातचीत की। साथ ही युवाओं को एकीकृत कर विकसित भारत का निर्माण करने के लिए 11 दिसंबर को 'विकसित भारत @2047: युवाओं की आवाज' का किया शुभारंभ...

जम्मू-कश्मीर के शेखपुरा की रहने वाली नाजिया नजीर दूध बेचने और उनका पति ऑटो चलाने का काम करता है। वह विकसित भारत संकल्प यात्रा की लाभार्थी भी हैं। वह बताती हैं कि जल जीवन मिशन गेम चेंजर साबित हुआ है। जहां कभी पानी की समस्या हुआ करती थी, वहां नल से स्वच्छ और सुरक्षित पानी की आपूर्ति उनके घरों तक हो रही है। संवाद के दौरान उन्होंने उज्ज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन के लाभ, सरकारी स्कूलों में शिक्षा और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना को अगले 5 वर्ष बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद दिया।

वहीं विकसित भारत संकल्प यात्रा की एक अन्य लाभार्थी चंडीगढ़ की ट्रांसजेंडर मोना ने बताया कि पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से उन्हें 10,000 रुपये का ऋण मिला जिससे उन्होंने चाय की एक दुकान खोली। मोना की दुकान पर अधिकतम लेनदेन यूपीआई के माध्यम से होता है। कर्नाटक में तुमकुरु के मुकेश घरेलू उपकरणों की एक दुकान के मालिक हैं। वह विकसित भारत संकल्प यात्रा के भी लाभार्थी हैं। मुकेश बताते हैं कि उन्हें अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए पीएम मुद्रा योजना के तहत 4.5 लाख रुपये के ऋण का लाभ मिला। नौकरी चाहने वाले से नौकरी देने वाले बने मुकेश आज तीन लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं।

देश में आज नाजिया नजीर, ट्रांसजेंडर मोना और मुकेश जैसे अनगिनत लोग हैं जो केंद्र सरकार की कई योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। सरकार की प्रमुख योजनाओं को सभी तक पहुंचाने के लिए देश भर में विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू की गई है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन योजनाओं का

भारत के लिए यही समय है, सही समय है

विकसित भारत@2047 का उद्देश्य आजादी के 100वें वर्ष यानी 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। इस विजन में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलू शामिल हैं। विकसित भारत@2047: युवाओं की आवाज के शुभारंभ के अवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि हर देश को इतिहास एक ऐसा कालखंड देता है जब वो अपनी विकास यात्रा को कई गुना आगे बढ़ा लेता है। यह एक तरह से उस देश का अमृतकाल होता है। भारत के लिए यह अमृतकाल इसी समय आया है। यह भारत के इतिहास का वो कालखंड है जब देश, एक क्वांटम जंप लगाने जा रहा है। इसलिए मैं कहता हूं, भारत के लिए भी यही समय है, सही समय है। हमें इस अमृतकाल के पल-पल का लाभ उठाना है। एक भी पल गंवाना नहीं है।

युवाओं को मंच प्रदान करेगी विकसित भारत@2047: युवाओं की आवाज

देश की राष्ट्रीय योजना, प्राथमिकता और लक्ष्यों के निर्माण में देश के युवाओं को सक्रिय रूप से शामिल करने में 'विकसित भारत@2047: युवाओं की आवाज' पहल देश के युवाओं को एक मंच प्रदान करेगी। इसके जरिए वे विकसित भारत@2047 के दृष्टिकोण में अपने विचारों का योगदान कर सकेंगे। ये कार्यशालाएं विकसित भारत@2047 में अपने विचारों और सुझावों को साझा करने के लिए युवाओं को शामिल करने की प्रक्रिया शुरू करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

पीएम संवाद कार्यक्रम से जुड़े हजारों लाभार्थी

देश भर से हजारों विकसित भारत संकल्प यात्रा लाभार्थी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान देश भर से 2,000 से अधिक विकसित भारत संकल्प यात्रा वैन, हजारों कृषि विज्ञान केंद्र और सामान्य सेवा केंद्र भी जुड़े हुए थे। यह यात्रा 15 नवंबर, 2023 से शुरू हुई जो 26 जनवरी 2024 तक चलेगी।

लाभ सभी लक्षित लाभार्थियों तक समयबद्ध तरीके से पहुंचे। बहुत कम समय में ही यह यात्रा 3 करोड़ से अधिक लोगों तक पहुंच गई है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों के साथ बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि देशभर के गांवों में करोड़ों परिवारों को हमारी सरकार की किसी न किसी योजना का लाभ जरूर मिला है। जब यह लाभ मिलता है, तब विश्वास बढ़ता है। जब लाभ मिलने का विश्वास मिल जाता है तो जिंदगी जीने की एक नई ताकत आ जाती है। इसके लिए उन्हें किसी सरकारी दफ्तर में बार-बार चक्कर लगाने की जरूरत नहीं पड़ी। सरकार ने लाभार्थियों की पहचान की और फिर उन तक लाभ पहुंचाने के लिए कदम उठाए। तभी आज लोग कहते हैं कि मोदी की गारंटी यानि गारंटी पूरा होने की गारंटी। ●

विपक्ष

नैरेटिव की तलाश

कोई पार्टी आस्था को विमर्श से बाहर रखना गवारा नहीं कर सकती. विपक्ष पर राम की शक्ति के प्रचंड वेग से बढ़ती भाजपा का जवाब खोजने की जिम्मेदारी आन पड़ी है

बाईस जनवरी की सुबह तकरीबन सात बजे थे. कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा (बीजेएनवाइ) असम के नौगांव जिले में वैष्णव मठ बरदोवा थान की तरफ बढ़ रही थी, जो 15वीं सदी के संत और राज्य के सबसे श्रद्धेय समाज सुधारक श्रीमंत शंकरदेव का जन्मस्थान है. ठीक उसी दिन इस पुण्यस्थल की यात्रा करने का फैसला जब प्रधानमंत्री अयोध्या में राम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की अगुआई कर रहे थे, बहुत सोच-समझकर किया गया था. कांग्रेस ने भव्य आयोजन का न्योता ठुकरा दिया था, लेकिन इस बात के लिए तैयार नहीं थी कि नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली भाजपा ग्रैंड ओल्ड पार्टी को 'हिंदू विरोधी' के रूप में प्रचारित करे.

बरदोवा थान की यात्रा का मकसद मीडिया के लिए ऐसा अवसर पैदा करना था जिससे भारत भर के लोग यह जान जाएं कि कांग्रेस राम को लेकर भाजपा के तूफानी अभियान का हिस्सा भले न हो लेकिन वह भारत के हिंदू बहुसंख्यकों की धार्मिक पहचान के दावों का हिस्सा जरूर है. यही वजह है कि राहुल का कारवां सुबह अयोध्या में मोदी की कैमरे मुड़ने से पहले ही मंदिर जाना चाहता था. यात्रा के आयोजकों ने मठ के पदाधिकारियों के उस पत्र को अनदेखा कर दिया जो कथित तौर पर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के इशारे पर लिखा गया था, और जिसमें कांग्रेस नेता से दोपहर 3 बजे के बाद धर्मस्थल आने को कहा गया था (तब तक अयोध्या का समारोह खत्म हो गया होता). लिहाजा जब सरमा की पुलिस ने राहुल को मठ तक पहुंचने से पहले रोक दिया, तो वे और उनके संगी-साथी सड़क पर बैठकर महात्मा गांधी का प्रिय भजन 'रघुपति राघव राजा राम' गाने लगे.

राहुल और कांग्रेस ही नहीं, सारे विपक्षी दल राम मंदिर के उद्घाटन को लेकर भाजपा की अगुआई में पैदा किए जा रहे राष्ट्रीय जोश का असरदार जवाब खोजने के लिए हाथ-पांव मार रहे हैं. मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन ऐसे समय किया गया जिससे 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को फायदा मिल सके. बताया जाता है कि 1992 में बाबरी मस्जिद के गिरने से कुछ हफ्ते पहले तब प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने कहा था: ''हम भाजपा से तो लड़ सकते हैं, पर प्रभु राम से कैसे लड़ें?'' आज भी विपक्षी दल इसी दुविधा, इसी कशमकश में हैं. वे भाजपा की हिंदुत्व की राह के सहयात्री बनना नहीं

इंडिया गठबंधन में शामिल विपक्षी पार्टियों के लिए भी धर्मनिरपेक्षता कोई प्राथमिकता नहीं रह गई है. कुछ पार्टियां अलग समर्थन समूह बनाने की गरज से धर्म को दूसरी पहचानों से मिलाने की कोशिश कर रही हैं

असम
राहुल गांधी और भारत जोड़ो न्याय यात्रा के उनके सहयोगी 22 जनवरी को असम के नौगांव में धरना प्रदर्शन करते

पीटी इमेजेज

चाहो, लेकिन राम और धर्म के नाम पर देश के विशाल हिंदू वोट बैंक पर भगवा पार्टी की मजबूत होती पकड़ से भौचक और भयभीत भी हैं. चुनौती अब दो बिल्कुल विपरीत उद्देश्यों के बीच संतुलन साधते हुए ऐसा विश्वसनीय नैरेटिव लेकर आने की है जो मतदाताओं को लुभाकर राम की शक्ति से हांके जा रहे भाजपा के चुनावी रथ को रोक सके.

खेल के नए नियम

पहले भाजपा के बहुसंख्यकवादी राष्ट्रवाद के खिलाफ पहला जवाब पंथनिरपेक्षता के सिद्धांत को बचाए रखने के संवैधानिक दायित्व के इर्द-गिर्द एकजुट होकर दिया गया. वे राजनैतिक दल भी अब इस पर अड़े नहीं रहे जो इंडिया (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस) गुट में साथ आए हैं. कुछ पार्टियां अलग समर्थन समूह बनाने की गरज से धर्म को दूसरी पहचानों के साथ मिलाने की कोशिश कर रही हैं, तो कुछ अन्य पार्टियां धर्म को शासनकला से अलग रखने का दिखावा तक नहीं कर रही हैं. मसलन, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा का बहिष्कार किया, पर उसी दिन वे विभिन्न धर्म प्रमुखों के साथ सद्भाव जुलूस की अगुआई करने से पहले कोलकाता के कालीघाट मंदिर गईं. मोदी की राम परियोजना का जवाब उन्होंने बांग्ला सांस्कृतिक पहचान को सामने रखकर देने की कोशिश की. इसीलिए, राम मंदिर के उद्घाटन से एक हफ्ते पहले उन्होंने बांग्ला गौरव को दुहाई देते हुए प्रधानमंत्री से बांग्ला को ''शास्त्रीय भाषा'' के रूप में मान्यता देने को कहा. इसी तरह महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और शिवसेना (यूबीटी) के नेता उद्धव ठाकरे ने उसी दिन उस कालाराम मंदिर जाकर प्रार्थना की जहां बी.आर. आंबेडकर ने 1930 में दलितों को उस जमाने में परिसर में प्रवेश न करने देने के खिलाफ सत्याग्रह की अगुआई की थी. ऐसी प्रतीकात्मक भाव-भंगिमाएं उस राज्य में अहम हैं जहां अनुसूचित जातियों की 12 फीसद आबादी है.

दिल्ली में आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भाजपा की मूल ताकत—हिंदू पुनरुत्थान के इर्द-गिर्द निर्मित राष्ट्रवाद—का मुकाबला करने की कोशिश की. इसीलिए उनकी सरकार ने स्कूल पाठ्यक्रम में देशभक्ति का पाठ शामिल किया और हिंदू बुजुर्गों के लिए तीर्थयात्राएं आयोजित कर रहे हैं. अयोध्या में कार्यक्रम से पहले दिल्ली सरकार ने तीन दिवसीय रामलीला,

आस्था का केंद्र

श्रीअयोध्या धाम

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

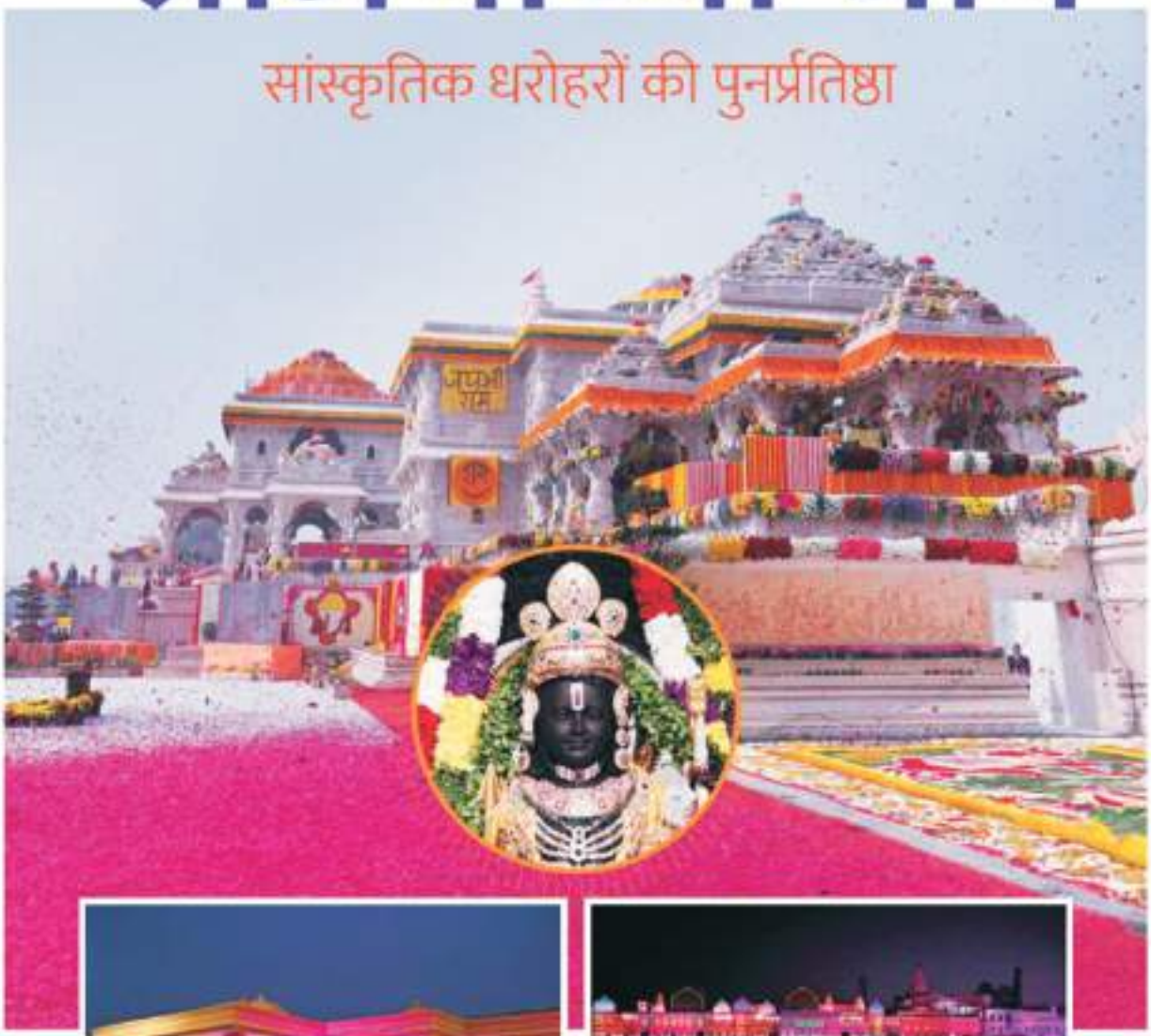

- ₹31 हजार करोड़ की विकास परियोजनाओं का क्रियान्वयन
- ₹85 हजार करोड़ से 10 वर्षों में अयोध्या बनेगी विश्व की सर्वोत्तम नगरी
- महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा अयोध्या धाम
- अयोध्या धाम जंक्शन रेलवे स्टेशन का कायाकल्प
- राजर्षि दशरथ स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय का निर्माण
- उत्तर प्रदेश श्री अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद का गठन
- दिव्य-भव्य दीपोत्सव में बन रहा विश्व कीर्तिमानों का कीर्तिमान
- चौरासी, चौदह एवं पंच कोसी परिक्रमा पथ का सुदृढ़ीकरण

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

मोक्षदायिनी

काशी

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

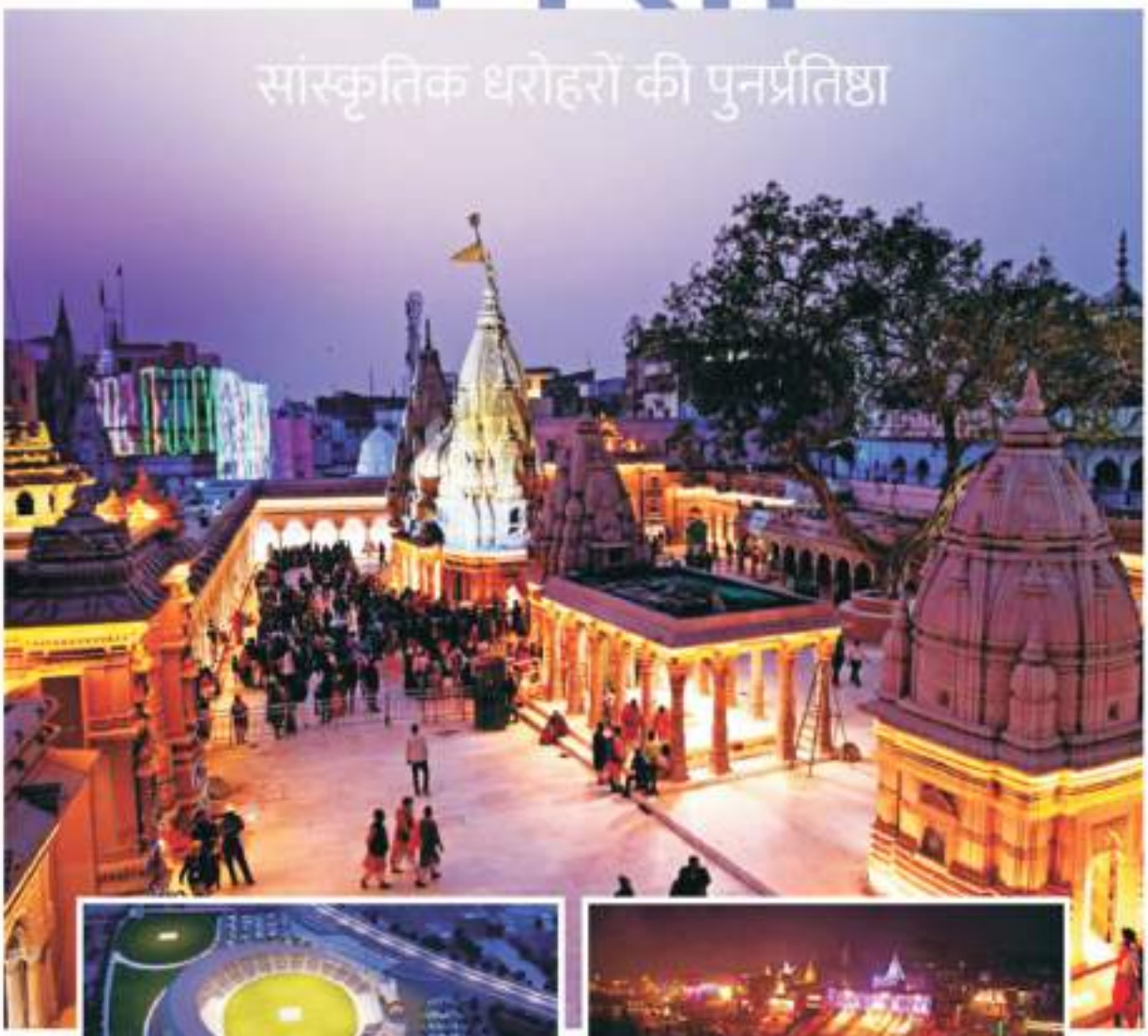

श्रीकाशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर का विकास
गंगा घाटों का सौंदर्यीकरण एवं देव-दीपावली का आयोजन
उत्तर प्रदेश के तीसरे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण
वाराणसी से हल्दिया के बीच कार्गो एवं क्रूज का परिवहन सेवा
देश की पहली नगरीय रोपवे परियोजना का निर्माण प्रगति पर
काशी में देश का पहले डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की स्थापना
अंतर्राष्ट्रीय रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर एवं अमूल प्लांट का निर्माण

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

इसे कहते हैं कायापलट

कनेक्टिविटी, आवास और अन्य सुविधाओं के साथ, यह एक बुनियादी ढांचा है जिस पर नई अयोध्या की परिकल्पना साकार हो रही है. अब तक सिर्फ 78,000 की आबादी वाला एक छोटा, खांटी उत्तर भारतीय शहर अब पूरी तरह से कायापलट देख रहा है. अयोध्या के जिला मजिस्ट्रेट नीतीश कुमार कहते हैं, ''अयोध्या शहर में अब लगभग वह हर सुविधा है जो किसी भी टियर-2 शहर में है. अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, पांच सितारा होटल, चौड़ी सड़कों से लेकर ऐप-आधारित टैक्सी सेवा तक, सभी लंबित परियोजनाएं अगले कुछ वर्षों में पूरी हो जाएंगी''

50,000
करोड़ रुपए
नई अयोध्या के लिए विकास परियोजनाओं की अनुमानित लागत

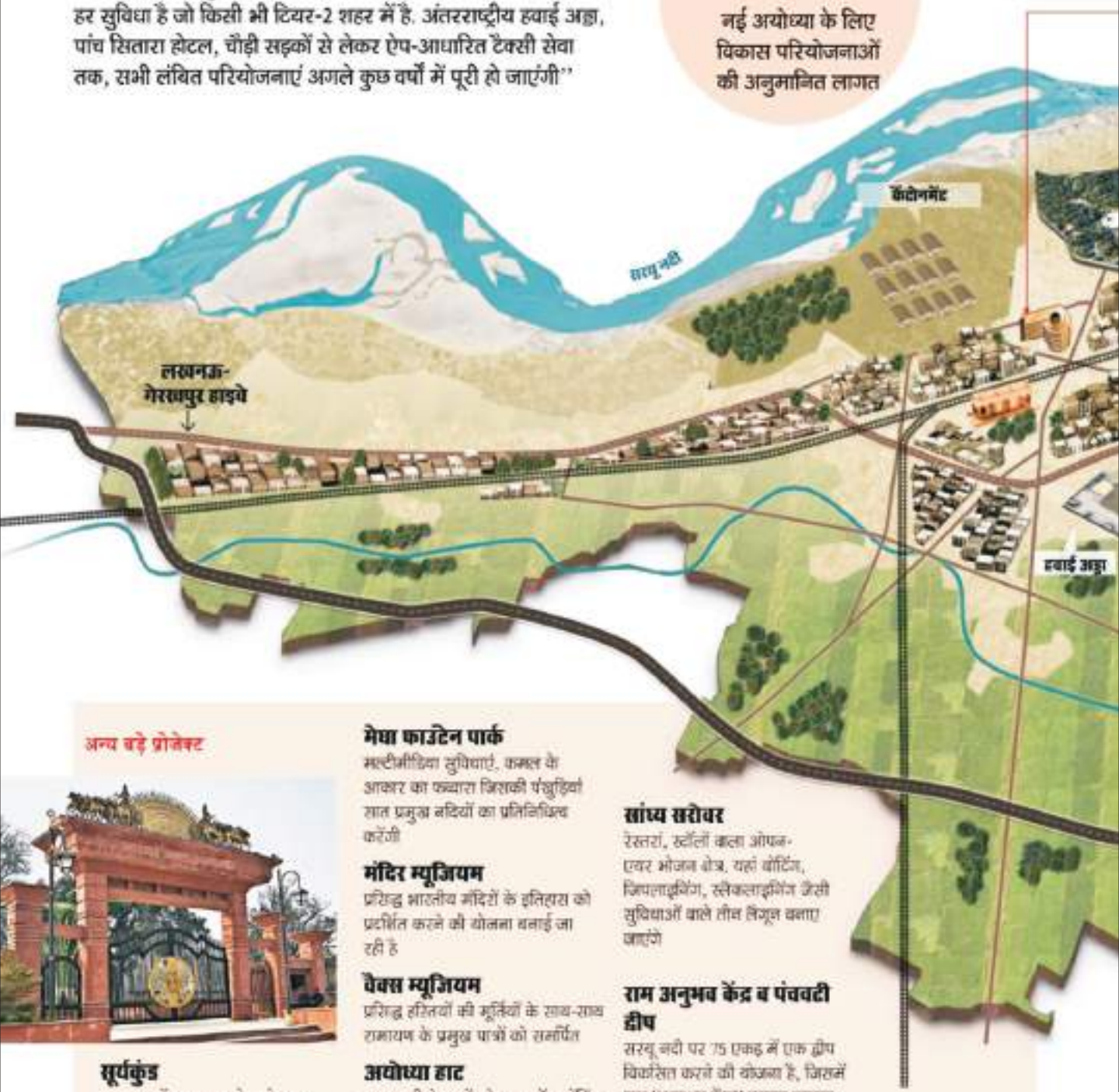

अन्य बड़े प्रोजेक्ट

सूर्यकुंड
रामायण में महत्व रखने वाले इस जलाशय का सौंदर्यीकरण किया गया है. हर शाम लेजर लाइट शो का आयोजन होता है

मेघा फाउंटेन पार्क
मल्टीमीडिया सुविधाएं, कमल के आकार का फव्वारा जिसकी पंखुड़ियां सात प्रमुख नदियों का प्रतिनिधित्व करेंगी

मंदिर म्यूजियम
प्रसिद्ध भारतीय मंदिरों के इतिहास को प्रदर्शित करने की योजना बनाई जा रही है

वैक्स म्यूजियम
प्रसिद्ध हस्तियों की मूर्तियों के साथ-साथ रामायण के प्रमुख पात्रों को समर्पित

अयोध्या हाट
सरयू नदी के घाटों को फूड स्टॉल, वेडिंग कार्ट के साथ इस तरह विकसित किया जाएगा, जिससे शून्य प्रदूषण आश्वस्त किया जा सके

सांध्य सरोवर
रेस्तरां, स्टॉलों वाला ओपन-एयर भोजन क्षेत्र, यहां बोटिंग, जिपलाइनिंग, स्केटबोर्डिंग जैसी सुविधाओं वाले तीन लिंगून बनाए जाएंगे

राम अनुभव केंद्र व पंचवटी द्वीप
सरयू नदी पर 75 एकड़ में एक द्वीप विकसित करने की योजना है, जिसमें एक ''अनुभव केंद्र'' बनाया जाएगा, जिसका उद्देश्य आगंतुकों को ''वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी'' देना होगा

जन सुविधाएं

चार जगहों पर नई मल्टी-लेवल पार्किंग, जिसमें 500 चार-पहिया वाहनों, 600 दोपहिया वाहनों, दुकानों और डॉरमिट्री के लिए जगह होगी

लंबाई: 150 करोड़ रुपए

स्थिति: चार तैयार, एक का काम चालू

अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन

तीन चरणों में योजनाबद्ध हुई इस परियोजना में यातायात को संभालने के लिए एलिवेटेड कॉन्कोर्स शामिल है. तीन मंजिला रेलवे स्टेशन की इमारत लिफ्ट, एस्केलेटर, फूड प्लाजा, पूजा सामग्री की दुकानें, क्लोकरूम, वाइल्ड फेयर रूम और वेटिंग हॉल जैसी सुविधाओं से सुसज्जित है. इसका डिजाइन पारंपरिक मंदिर वास्तुकला से प्रेरित है.

बजट: लगभग 250 करोड़ रु.

स्थिति: पूरा हुआ. प्रधानमंत्री मोदी ने 30 दिसंबर, 2023 को इसका उद्घाटन किया

टेंट सिटीज

पीपीपी मॉडल पर आधारित टेंट सिटीज में से कुछ को चालू कर दिया गया है. कई में तीर्थयात्रियों/पर्यटकों को लग्जरी और बजट- दोनों विकल्पों वाले स्टे देने की योजना बनाई है

बजट: तय नहीं

स्थिति: कुछ चालू

ग्रीनफील्ड टाउनशिप

लखनऊ-गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनों ओर यह परियोजना बनाई गई है. धार्मिक निकायों, गेस्ट हाउस, होटल, रिजॉर्ट्स को आवंटित आवासीय, वाणिज्यिक, मिश्रित उपयोग वाले प्लॉट्स के साथ 1,407 एकड़ में फैला हुआ; 1,543 वर्ग मीटर से लेकर 9,252 वर्ग मीटर तक के 12 कमर्शियल प्लॉट, खरीद के लिए उपलब्ध हैं. स्टेट गेस्ट हाउस के लिए गुजरात को 6,000 वर्ग मीटर का प्लॉट आवंटित किया गया. एक अधिकारी का कहना है कि अन्य राज्य भी इसके लिए उत्सुक हैं. इसके अतिरिक्त, लखनऊ-अयोध्या राजमार्ग के आसपास 300 करोड़ रुपए की लागत से वशिष्ठ कुंज आवासीय योजना विकसित की जाएगी.

बजट: लगभग. 3,000 करोड़ रु.

स्थिति: 30 दिसंबर, 2023 को आधारशिला रखी गई

महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा

821 एकड़ में फैले इस हवाई अड्डे ने पहले चरण में आठ विमानों के लिए दो एप्रन और हैंगर विकसित किए हैं. 6,250 वर्ग मीटर का टर्मिनल भवन– भगवान राम की कहानी को दर्शाने वाले चित्रों, कलाकृतियों और मंदिर-शैली के शिखरों से सुसज्जित–पीक-आवर में 600 यात्रियों को संभाला जा सकता है, जिसकी वार्षिक प्रबंधन क्षमता दस लाख यात्रियों की है. उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला की नागर शैली में बना हुआ.

बजट: लगभग 1,500 करोड़ रु.

स्थिति: कमर्शियल उड़ानें चालू

एयरोसिटी

हवाई अड्डे के निकट लगभग 150 एकड़ की परियोजना. इसमें होटल कॉम्प्लेक्स, आयुर्वेद रिजॉर्ट, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स शामिल होंगे.

बजट: 400 करोड़ रु.

स्थिति: प्लानिंग के चरण में

मीवर का नेटवर्क

शहर के लिए 133.5 किलोमीटर का सीवरेज नेटवर्क विकसित किया जाएगा, जो कम से कम 20,000 नए घरों को सेवा प्रदान करेगा

बजट: 245 करोड़ रु.

स्थिति: काम शुरू

श्रीकृष्ण की क्रीड़ास्थली

मथुरा

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

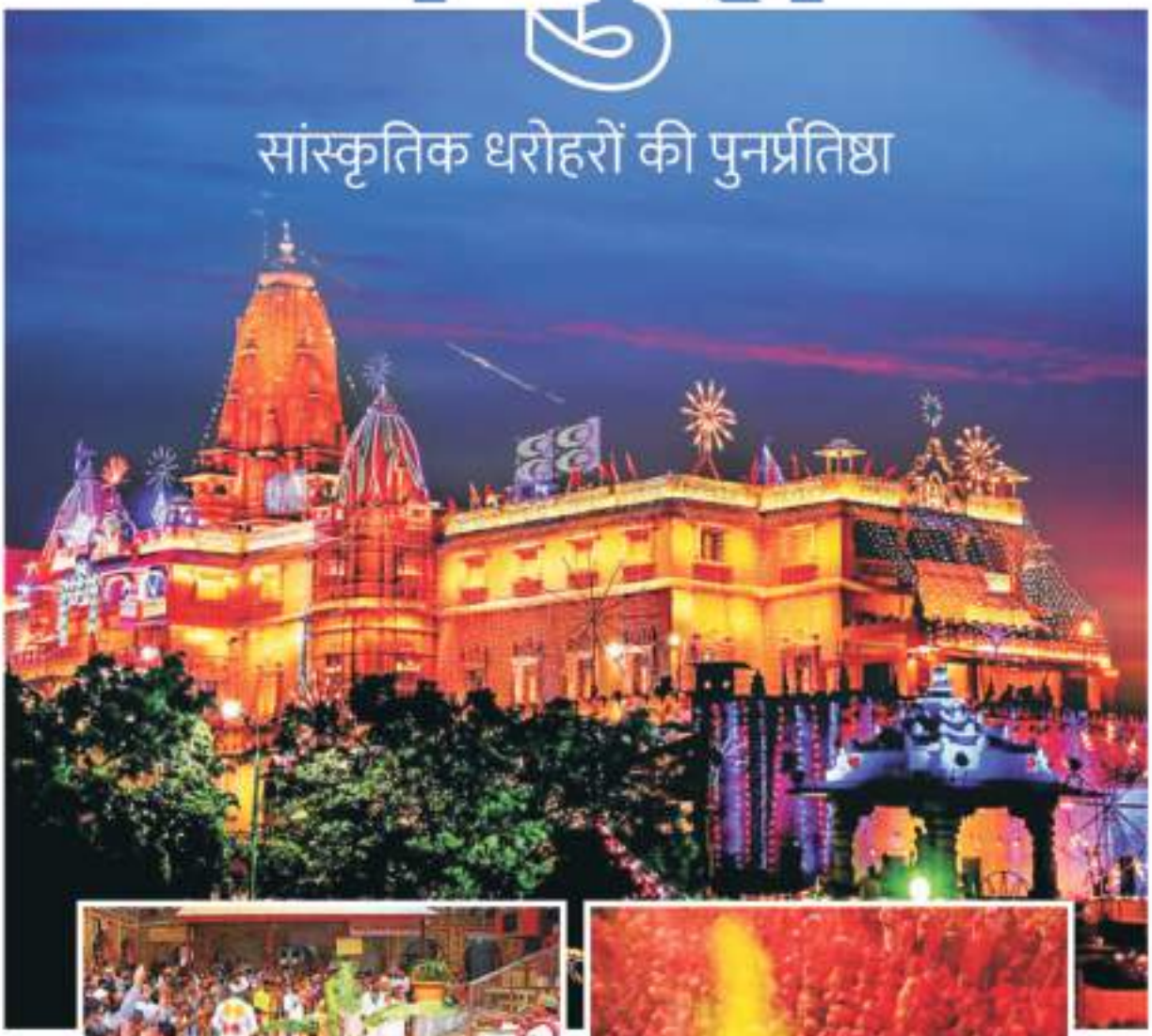

- रंगोत्सव, बृजरज उत्सव, श्रीकृष्णोत्सव का आयोजन
- उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद का गठन
- वृन्दावन में श्री बांके बिहारी धाम का कॉरिडोर
- श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर लाइट एंड साउंड शो की स्थापना
- गोवर्धन परिक्रमा के लिए हेलीपैड का निर्माण
- वृन्दावन शोध संस्थान के भवन का जीर्णोद्धार
- बरसाना में रोपवे की सुविधा, मुक्ताकाशी रंगमंच

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

अयोध्या

आध्यात्मिक रोशनी
सरयू के तट पर जगमगाती राम की पैड़ी

संदीप कुमार

दर्शाता है. फिर भी, यह रूपकों का एक संयुक्त रूप है, जिसे व्यापक स्तर पर अपनाया गया है. हिंदू पुनरुत्थानवाद की राजनीति में रुचि रखने वाले एक प्रमुख लेखक ने अयोध्या में अपेक्षित तीर्थयात्रियों की भीड़ की वजह से इसकी तुलना हज के साथ करके कहीं ज्यादा सही आकलन किया है, दूसरे शब्दों में यह इससे जुड़ी महत्वाकांक्षाओं का सटीक आकलन है. पहली नजर में ही यह वैचारिक प्रतिध्वनि का एक रूप लगता है. यह नई आस्था व्यवस्था पूरी तरह उसी चीज की विशेषताएं अपनाने और नकल करने की कोशिश में लगी है, जिसे यह शत्रु के तौर पर देखती है—यानी इब्राहिमी एकेश्वरवाद. यह अलग बात है कि यहां विलक्षणता के सूत्रधार राम हैं. भारत की स्व-परिभाषित दिव्यता से परिपूर्ण यह चरित्र हमें रामायण गाथा से मिला है और आधुनिक राष्ट्र की दशा-दिशा निर्धारित करने में एक अहम भूमिका निभा रहा है. रोम-रोम में गुंजायमान ध्वनियों में से एक की ओर इंगित करते हुए धर्म दर्शन में विशेषज्ञता रखने वाली ओटावा यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर सोन्जिया सिक्का ने एक्स पर लिखा, ''वेटिकन सिटी, मक्का. लगता है कि अंग्रेजों ने अपना काम बहुत अच्छी तरह किया था. हिंदू धर्म पूरी तरह सामीकरण की राह पर चल पड़ा है.''

ऐसा नहीं है कि सिर्फ एक शहर का पुनर्निर्माण हो रहा है, बल्कि यह तो संपूर्ण मानस को नए खांचे में ढालने का एक प्रयास है. अब जरा हिंदू धर्म के बारे में सोचिए, उसके मूल स्वरूप में, उसकी संपूर्ण खूबसूरती और छोटी-मोटी कमियों के साथ. यह एक ऐसे विशाल महाद्वीप की तरह है जिसमें घना जंगल भी सांसें लेता है. यह कोई ब्लॉकों से सजा शहर नहीं है. सारे रास्ते सिर्फ राम की तरफ ही नहीं जाते. इसका कोई चर्च नहीं है. कोई केंद्रीय प्राधिकारी नहीं. किसी एक धर्मग्रंथ को सर्वोपरि नहीं रखा जाता. मत-मतांतर इसके जीन में समाया है. इसके दर्शन एक-दूसरे का खंडन भी करते हैं—ये जितने भिन्न हैं, उतने ही समरूप भी हैं. आदि शंकराचार्य मूर्ति-आधारित भक्ति के पक्षधर नहीं थे, तो दूसरी तरफ रामानुज थे जो उनसे सहमत नहीं थे. ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे. कबीर के राम वेदांतिक अमूर्तन के प्रतीक हैं, लेकिन पौराणिक भक्ति के कालक्रम में तुलसीदास के सगुण राम अधिक प्रभावशाली साबित हुए और उन्होंने उत्तर में हिंदू धर्म को एक ऐसे चरण में पहुंचा दिया, जहां रामानंद वैष्णववाद ने संभाल लिया. इस तरह अयोध्या का मंदिर—जिसके चारों तरफ एक भव्य शहर बसा है—न केवल आधुनिक राजनैतिक परियोजना की परिणति है, बल्कि एक पुरानी प्रवृत्ति के मेल का प्रतिनिधित्व भी करता है. एकमात्र देवता के तौर पर राम के इर्द-गिर्द केंद्रित एकेश्वरवादी, गहन आस्थावादी हिंदू धर्म का मौजूदा विचार एकबारगी थोड़ा असंगत लग सकता है, लेकिन तथ्य यही है कि इसमें एक दिलचस्प बहुस्तरीय प्रतिध्वनि पैदा होती है.

जाने-माने शायर इकबाल ने 1908 में अपने 'धर्मनिरपेक्षता' वाले दौर—जिसे हिंदू दक्षिणपंथी नेतृत्व अक्सर उद्धृत करता है—में पूरी श्रद्धा के साथ अयोध्या के राजा भगवान राम को 'इमाम-ए-हिंद' बताया था, उनका यह वाक्यांश हमेशा के लिए अमर हो गया. ब्रिटिश उपनिवेशकाल के दौरान तुलसीदास को लेकर बढ़ी उत्सुकता ने इसे एक नया आयाम दिया. तकरीबन सभी इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि तुलसी कृत रामचरितमानस ने हिंदी/हिंदू-केंद्रित राष्ट्रवाद का खाका तैयार किया, और राम का नाम गांधी से लेकर जन-जन तक की जुबान पर चढ़ गया. इससे, अयोध्या को भी एक नया रुतबा मिला. 1930 में ओरिएंटलिस्ट विद्वान जे.एम. मैकफी ने इसे 'उत्तर भारत की बाइबिल' बताया था.

उससे दशकों पहले अनुवादक एफ.एस. ग्रोसे—जिन्होंने 19वीं सदी में बतौर सिविल सेवक उत्तर प्रदेश में दशकों बिताए थे—ने इसके बारे में लिखा कि यह ''दार्शनिक हिंदू विचार की वस्तुत: नास्तिकता के खिलाफ एक भावुक विरोध'' था, और इसमें ''नैतिक भावनाओं की शुद्धता पर तो जोर दिया गया लेकिन उद्दीनता से पूरी तरह परहेज'' किया गया. इसके संदर्भ में ग्रियर्सन ने अधिक स्पष्ट तौर पर कहा—तुलसीदास ने ''देश को शैववाद की तांत्रिक अश्लीलता से बचाया था.'' राम का चरित्र पवित्रता और शुद्धता का प्रतीक है, जिसमें अतिवाद कहीं नजर नहीं आता—स्पष्ट तौर पर इसमें ईसाइयत की एक गहरी छाप है. वैसे, ग्रियर्सन ने तो यहां तक कहा कि रामानुज का एकेश्वर वैष्णववाद मायलापुर में सेंट थॉमस माउंट से उनकी निकटता से प्रेरित था. हो सकता है कि यह कहना थोड़ा अजीब लगे? लेकिन मुद्दे की बात यह है कि लगभग सभी वैष्णव संप्रदायों में कृष्ण और राम की उपासना एक दृढ़ एकेश्वरवाद की प्रतीक है—वे स्वयं भगवान, स्व-जन्मे और सर्वोच्च देवता बने. अचरज की बात है कि जो लोग उपनिवेशवादियों पर आडंबरपूर्ण होने का सबसे अधिक आरोप लगाते हैं, वही वास्तव में उनका अनुसरण कर रहे हैं. बहुत संभव है कि इस सीजन में अयोध्या पहुंचने वाले लाखों लोगों में भी आस्था इसी तरह उबाल मार रही हो. ■

को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ

प्रयागराज

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

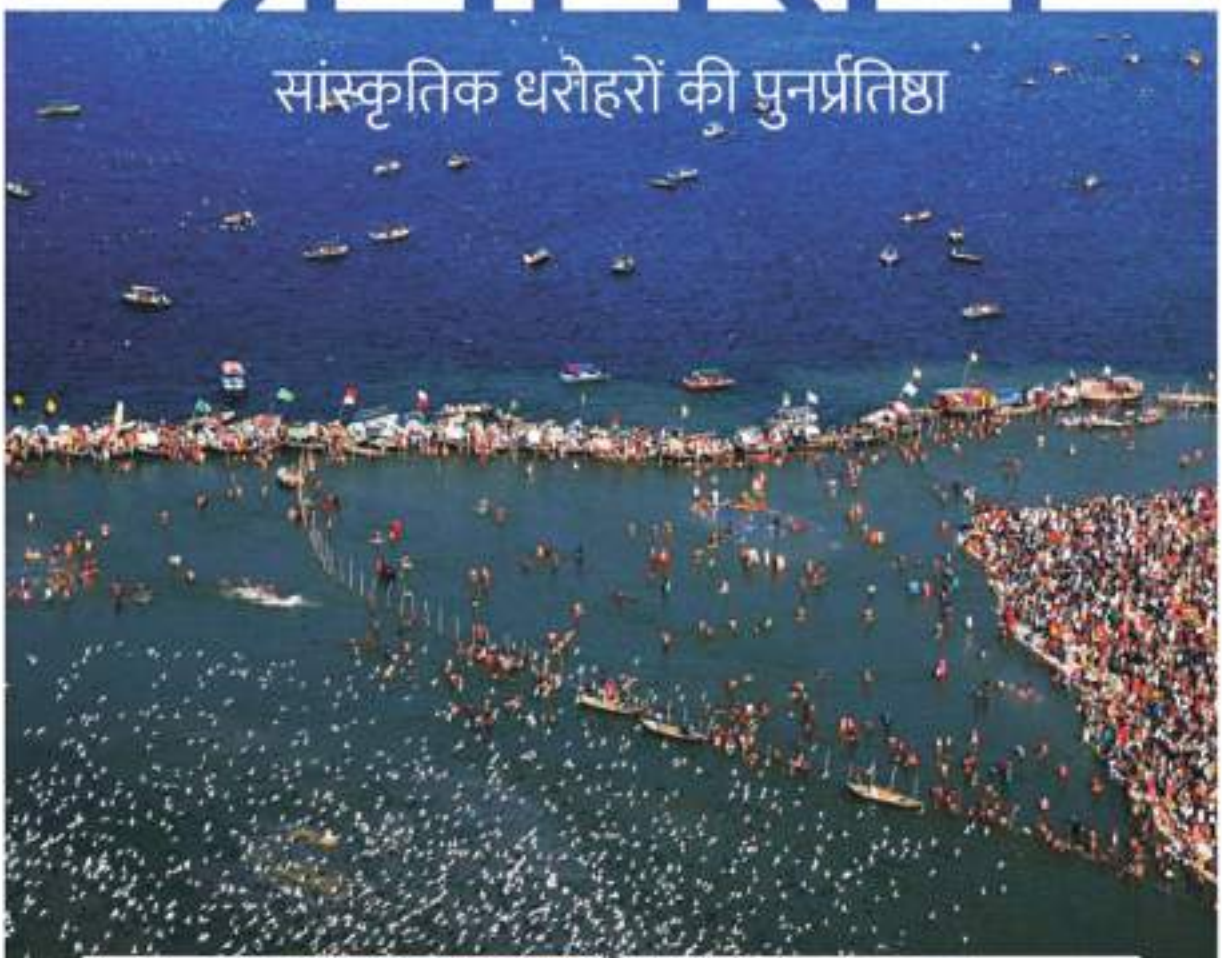

कुम्भ-19 में रिकॉर्ड 24 करोड़ श्रद्धालुओं/पर्यटकों का आगमन
महाकुंभ-2025 के भव्य आयोजन के लिए ₹2,500 करोड़ का प्रावधान
नैनी में 1,138.78 एकड़ में सरस्वती हाईटेक सिटी का विकास
प्रयागराज में सॉफ्टवेयर पार्क की स्थापना का कार्य प्रगति पर
प्रयागराज किले में स्थित पौराणिक अक्षयवट की परिक्रमा सुविधा
भारद्वाज आश्रम के द्वार एवं गलियारे का विकास, सौंदर्यीकरण
'द्वादश माधव' सर्किट के तहत 'द्वादश माधव' मंदिरों का कायाकल्प

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

खुशियों का गणतंत्र

दुनिया में युद्ध, आपदा और विभीषिकाओं से भारी तबाही के दौर में **देशभर में कुछ लोगों और संस्थाओं की लाजवाब पहलकदमी** से बहुतों को सुख-चैन मयस्सर हो रहा

खुशी की तलाश हमेशा सामूहिक आकांक्षा रही है. खुशी को हम जिस तरह देखते-समझते हैं, उसमें सभ्यतागत फर्क भले हों, पर आनंद, संतोष और खुशहाली के एहसास की ललक हमेशा ही सार्वभौमिक मामला है. फिर भी, जिस दौर में अभी हम महामारी के बाद की विश्व व्यवस्था से तालमेल बिठाने की कोशिशों में लगे ही हुए थे कि दो अवांछित युद्ध सिर पर आन पड़े—पूर्वी यूरोप में रूस और यूक्रेन के बीच और पश्चिम एशिया में फलस्तीन का युद्ध. दुख और पीड़ा के इस दौर का कोई अंत दिखाई नहीं देता.

अलबत्ता अप्रत्याशित अकाल मौतें और तबाही हमें एक बार फिर यह सोचने को मजबूर करती हैं कि क्या गलत है और इसका क्या हल है. यह खासकर उस प्राचीन भारतीय ज्ञान से निकलता है—*'सर्वे भवंतु सुखिनः* (सब सुखी हों)'. इस दृष्टि को अपना कर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2011 में एक संकल्प के जरिए खुशी को 'बुनियादी मानवीय लक्ष्य' घोषित किया. 2015 में संयुक्त राष्ट्र ने 17 सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) का ऐलान किया, जो गरीबी दूर करने, गैर-बराबरी घटाने और धरती की रक्षा के उद्देश्य को स्थापित करते हैं—यही वे तीन प्रमुख स्तंभ हैं जो हमारी खुशहाली और खुशी के लिए अनिवार्य हैं.

सामूहिक खुशी की हमारी तलाश अलबत्ता अक्सर छोटी-छोटी कोशिशों से शुरू होती है, जो बढ़ते-बढ़ते अंततः कइयों की खुशहाली और खुशी तक पहुंच जाती है. 2016 से *इंडिया टुडे* उम्मीद जगाने और आनंद देने वाली दास्तानों को जुटाकर तैयार किए विशेषांक के जरिए ऐसी कोशिशों का जश्न मनाता रहा है. आगे के पन्नों में आप उन व्यक्तियों, पहलकदमियों और समूहों के बारे में पढ़ेंगे, जिन्होंने समाज में सकारात्मक फर्क लाने के लिए ऐसे रास्तों को खोज निकाला जिन पर पहले कभी कोई न चला था. वे आम परोपकारी या सुधारक नहीं हैं, बल्कि ऐसे लोग और संस्थाएं हैं जिन्होंने खैरात पैदा करने की संभावनाओं से भरी टिकाऊ, समावेशी और व्यावहारिक योजनाएं विकसित कीं. पश्चिम बंगाल के उन प्रशासनिक अधिकारी को ही लीजिए, जिन्होंने सरकारी योजना में थोड़ा-सा हेरफेर करके किसानों को विविध स्रोतों से आमदनी बढ़ाने में मदद की. या ओडिशा की महिलाओं के स्व-सहायता समूह को लीजिए, जिसने राज्य के मिशन एसएचजी से जुड़कर आत्मनिर्भरता हासिल की. फिर हुनरमंद प्रवासी मजदूरों की कहानी भी है जो महामारी के दौरान काम-धंधे गंवाकर बिहार में गांव लौट गए, आज वे कपड़ा उद्यमी हैं, अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं और कइयों को रोजगार दे रहे हैं.

इन सभी कहानियों में एक साझा कड़ी है—खुशी की तलाश उनकी अपनी तरक्की तक सिमटी नहीं रही. ये सभी सामूहिक यात्रा पर निकले. ये ऐसे काम हैं जो हमारी दुनिया को बेहतर जगह बनाते हैं.■

अपने लिए बड़ा लक्ष्य तय कर रहा है
आज का भारत

छत्रपति वीर शिवाजी महाराज जानते थे कि किसी भी देश के लिए समुद्री सामर्थ्य कितना जरूरी होता है। उनका उद्घोष था- जलमेव यस्य, बलमेव तस्य। यानि 'जो समुद्र पर नियंत्रण रखता है वह सर्वशक्तिमान है।' इसी सोच के साथ उन्होंने एक शक्तिशाली नौसेना बनाई। आज का भारत शिवाजी महाराज से प्रेरणा लेते हुए गुलामी की मानसिकता को पीछे छोड़कर आगे बढ़ रहा है और अपनी विरासत पर गर्व कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के उस ऐतिहासिक सिंधुदुर्ग किले में 4 दिसंबर को नौसेना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया जिसे देख हर भारतीय गर्व से भर जाता है...

सेना दिवस, वायुसेना दिवस, नौसेना दिवस जैसे कार्यक्रम आमतौर पर दिल्ली में मनाए जाते रहे हैं। ऐसे में दिल्ली और आसपास के लोग ही इसका हिस्सा बन पाते थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने इस परंपरा को बदला और उनकी कोशिश है कि सेना दिवस, नौसेना दिवस और वायुसेना दिवस देश के अलग-अलग हिस्सों में आयोजित हो। उसी विजन के तहत इस बार का नौसेना दिवस महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग की उस पवित्र भूमि पर आयोजित किया गया, जहां पर नौसेना का जन्म हुआ था। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि अब देश के लोगों का इस भूमि के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। सिंधुदुर्ग के प्रति एक तीर्थ का भाव पैदा होगा। जिस नौसेना के लिए हम गर्व करते हैं उसकी मूल धारा छत्रपति शिवाजी महाराज से शुरू होती है। इसका गर्व आप देशवासी करेंगे।

छत्रपति शिवाजी महाराज की समृद्ध समुद्री विरासत को श्रद्धांजलि

नौसेना दिवस हर साल 4 दिसंबर को मनाया जाता है। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग में 'नौसेना दिवस 2023' समारोह मनाया गया जो छत्रपति शिवाजी महाराज की समृद्ध समुद्री विरासत को दर्शाता है। शिवाजी महाराज के जलव्याघ्र से नौसेना का नया ध्वज प्रेरित है। नौसेना के इस ध्वज को पिछले साल तब अपनाया गया जब प्रधानमंत्री मोदी ने पहले स्वदेशी विमान वाहक आईएनएस विक्रांत को नौसेना में शामिल कराया था। नौसेना दिवस के अवसर पर हर साल भारतीय नौसेना के जहाजों, पनडुब्बियों, विमानों और विशेष बलों द्वारा 'परिचालन प्रदर्शन' आयोजित करने की परंपरा रही है। इस परिचालन प्रदर्शन से लोगों को भारतीय नौसेना के मल्टी डोमेन ऑपरेशन के विभिन्न पहलुओं को देखने और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति उनके योगदान के बारे में जानकारी मिलती है।

राजकोट किला में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग स्थित राजकोट किला में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर उन्होंने उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की और फोटो गैलरी का अवलोकन किया। राजकोट किला में अनावरित किए गए छत्रपति शिवाजी महाराज की यह शानदार प्रतिमा 43 फीट ऊंची है। इस प्रतिमा की कल्पना और संकल्पना भारतीय नौसेना ने की और महाराष्ट्र सरकार ने इसके लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई। समारोह में पीएम मोदी ने कहा कि सिंधुदुर्ग का ऐतिहासिक किला, मालवण-तारकरली का ये खूबसूरत किनारा, चारों ओर फैला छत्रपति वीर शिवाजी महाराज का प्रताप, राजकोट किला पर उनकी विशाल प्रतिमा का अनावरण और आपकी ये हुंकार हर भारतवासी को जोश से भर रही है।

"अपनी विरासत पर गर्व करने की भावना के साथ, मुझे यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि भारतीय नौसेना अब अपने रैंक का नाम भारतीय परंपराओं के अनुरूप रखने जा रही है।"
– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारत के सामुद्रिक सामर्थ्य का इतिहास

हजारों वर्ष पहले जब ऐसी टेक्नोलॉजी और संसाधन नहीं थे, तब उस जमाने में समुद्र को चीरकर भारत के वीरों ने सिंधुदुर्ग जैसे कई किले बनवाए। भारत का सामुद्रिक सामर्थ्य हजारों साल पुराना है। गुजरात के लोथल में मिला सिंधु घाटी सभ्यता का पोर्ट, आज हमारी बहुत बड़ी विरासत है। एक समय में सूरत के बंदरगाह पर 80 से ज्यादा देशों के जहाज लंगर डालकर रहा करते थे। चोल साम्राज्य ने भारत के इसी सामर्थ्य के बलबूते, दक्षिण पूर्व एशिया के कितने ही देशों तक अपना व्यापार फैलाया।

भारत का इतिहास रहा है...

- विजय का।
- शौर्य का।
- ज्ञान और विज्ञान का।
- हमारी कला और सृजन कौशल का।
- हमारे समुद्री सामर्थ्य का।

विरासत भी और विकास भी, यही विकसित भारत का रास्ता है और आज अपनी गौरवशाली विरासत के संरक्षण का प्रयास हो रहा है। छत्रपति वीर शिवाजी महाराज के कालखंड में जो दुर्ग और किले बने हैं, उनको संरक्षित रखने के लिए सरकार संकल्पित है। कोंकण सहित पूरे महाराष्ट्र में इन धरोहरों के संरक्षण पर सैकड़ों करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमारा प्रयास है कि पूरे देश से लोग अपनी इस गौरवशाली विरासत को देखने आएं। इससे पर्यटन भी बढ़ेगा और रोजगार-स्वरोजगार के नए अवसर भी बनेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सिंधुदुर्ग में 'नौसेना दिवस 2023' समारोह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में शामिल हुए। उन्होंने तारकरली समुद्र तट, सिंधुदुर्ग से भारतीय नौसेना के जहाजों, पनडुब्बियों, विमानों और विशेष बलों के 'सामरिक प्रदर्शनों' को देखा। उन्होंने गार्ड ऑफ ऑनर का भी निरीक्षण किया। ●

वैश्विक आंदोलन बनता आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में टेक्नोलॉजी को जिम्मेदार तरीके से उपयोग करने की जरूरत है। पूरी दुनिया में AI के नकारात्मक इस्तेमाल को लेकर चिंता बढ़ रही है और डिबेट चल रही है। AI के वैश्विक रेगुलेशन को लेकर भारत विश्व समुदाय के साथ मिलकर काम करना चाहता है। डीपफेक की गंभीरता को समझते हुए AI को लोगों तक सुरक्षित, संरक्षित और भरोसेमंद तरीके से पहुंचाया जाए। इसी अप्रोच के साथ भारत की सह-अध्यक्षता में नई दिल्ली में ग्लोबल पार्टनर्शिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जीपीएआई) शिखर सम्मेलन 2023 आयोजित किया गया जिसके उद्घाटन सत्र को 12 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया संबोधित...

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रभाव से वर्तमान और आने वाली पीढियां, कोई भी छूटी नहीं हैं। दुनिया को बहुत सतर्कता के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। भारत AI के जिम्मेदार और नैतिक उपयोग के लिए न सिर्फ प्रतिबद्ध है बल्कि इसके लिए गठित ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जीपीएआई) का संस्थापक सदस्य भी है। भारत ने स्पष्ट किया है कि AI के नैतिक इस्तेमाल के लिए मिलकर ग्लोबल फ्रेमवर्क तैयार करना होगा। इसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए आयोजित तीन दिवसीय जीपीएआई 2023 का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में उद्घाटन किया।

जीपीएआई 28 देश और यूरोपियन यूनियन की बहु-हितधारक पहल है। भारत 2024 में जीपीएआई की अध्यक्षता करने जा रहा है। जीपीएआई का उद्देश्य AI से संबंधित प्राथमिकताओं पर अत्याधुनिक अनुसंधान और व्यावहारिक गतिविधियों का समर्थन कर AI पर सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर को पाटना है। जीपीएआई सम्मेलन में सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनिधि, 150 से अधिक वैश्विक AI विशेषज्ञों शामिल हुए तो 22,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। जीपीएआई की अध्यक्षता में वैश्विक स्तर पर AI के सुरक्षित और विश्वसनीय इस्तेमाल सुनिश्चित करना भारत की प्रतिबद्धता है। 2025 में क्लाइमेट एक्शन, हेल्थ केयर, आत्मनिर्भर समाज और सतत कृषि के लिए ग्लोबल पार्टनरशिप बढ़ाने का लक्ष्य रखा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सम्मेलन में कहा कि AI के साथ हम नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। AI का विस्तार टेक्नोलॉजी के एक

शिखर सम्मेलन के महत्वपूर्ण परिणाम

- जीपीएआई सदस्यों के बीच सुरक्षित, संरक्षित और भरोसेमंद AI को आगे बढ़ाने और इस परियोजनाओं की स्थिरता का समर्थन करने की प्रतिबद्धता पर आम सहमति।
- पीएम नरेंद्र मोदी ने AI के नैतिक उपयोग के लिए एक वैश्विक ढांचा तैयार करने के लिए मिलकर काम करने का आह्वान किया। AI प्रतिभा और AI-संबंधित विचारों के क्षेत्र में मुख्य खिलाड़ी के रूप में भारत पर फोकस किया गया।
- भारत ने जीपीएआई नई दिल्ली शिखर सम्मेलन के एक कार्यक्रम में AI के लिए रूमी प्रमुख पहल - AI पर संयुक्त राष्ट्र सलाहकार समूह, यूके AI सुरक्षा शिखर सम्मेलन को एक जगह लाने में सफलता पाई।
- AI रिसर्च एनालिटिक्स एंड नॉलेज डिसेमिनेशन प्लेटफॉर्म (एआईआरएडब्ल्यूएस), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर राष्ट्रीय कार्यक्रम और भारत में AI इकोसिस्टम को आकार देने में इसकी भूमिका पर प्रमुखता से जोर दिया।
- ग्लोबल AI एक्सपो में 150 स्टार्टअप सहित प्रमुख तकनीकी कंपनियों ने अपने AI उत्पाद और सेवाएं प्रदर्शित की।
- शिखर सम्मेलन ने AI को आम जनता, विशेषकर युवाओं और छात्रों के बीच ले जाने के लिए बहु-हितधारक दृष्टिकोण को सामने रखा। प्रौद्योगिकी, नीति, ढांचे, औद्योगिक, नैतिक, व्यावसायिक और शैक्षणिक दृष्टिकोण से AI पर नवीनतम प्रगति को पेश किया गया।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

- भारत AI के साथ नए युग में प्रवेश कर रहा है। AI के सही इस्तेमाल से सिर्फ देश की आर्थिक प्रगति ही सुनिश्चित नहीं होती बल्कि ये समानता और सामाजिक न्याय को भी पक्का करता है।
- आज भारत AI और AI से जुड़े नए आईडिया का सबसे प्रमुख प्लेयर है। भारत के युवा टेक एक्सपर्ट, अनुसंधानकर्ता, AI की लिमिट्स को एक्सप्लोर कर रहे हैं।
- भारत में AI से जुड़े समाधान की चर्चा तो अब गांव-गांव तक पहुंच रही है। हाल ही में भारत ने कृषि में AI 'पैट बोट' लॉन्च किया। इससे किसानों को अपने आवेदन की स्थिति, भुगतान विवरण और सरकारी योजनाओं की नवीनतम जानकारी में मदद मिलेगी।
- AI की मदद से भारत अपने स्वास्थ्य क्षेत्र को भी पूरी तरह से ट्रांसफॉर्म करने की दिशा में काम कर रहा है।
- भारत ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया है। भारत के पास नेशनल AI पोर्टल है जो देश में AI पहल को बढ़ावा देता है।
- जल्द ही एक 'एरावत' पहल प्लेटफॉर्म का उपयोग रूमी रिसर्च लैब इंडस्ट्री और स्टार्ट-अप कर सकेंगे।
- भारत जल्द आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मिशन भी लॉन्च करने की तैयारी में है। इस मिशन का लक्ष्य, भारत में AI गणना शक्ति की पर्याप्त क्षमता स्थापित करना है। इससे भारत के स्टार्टअप एवं इनोवेटर को और बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मिशन के तहत कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसे क्षेत्र में AI एप्लीकेशन को प्रमोट किया जाएगा।
- भारत अपने आईटीआई के माध्यम से AI स्किल को टीयर-2 और टीयर-3 शहरों तक पहुंचा रहा है।

टूल से कहीं ज्यादा है। AI हमारे नए भविष्य को गढ़ने का सबसे बड़ा आधार बन रही है। AI ट्रांसफॉर्मेटिव तो है ही लेकिन यह हम पर है कि हम इसे ज्यादा से ज्यादा ट्रांसपैरेंट बनाएं। अगर हम इस्तेमाल हो रहे डाटा और एल्गोरिथम को ट्रांसपैरेंट और फ्री फ्रॉम बायस बना सकें तो यह एक अच्छी शुरुआत होगी। AI 21वीं सदी में विकास का सबसे बड़ा टूल बन सकता है और 21वीं सदी को तबाह करने में भी सबसे बड़ी भूमिका निभा सकता है। डीपफेक

> **हमने 'AI फॉर ऑल' की भावना से प्रेरित होकर सरकार की नीतियां और प्रोग्राम तैयार किए हैं। हमारा प्रयास है कि हम सामाजिक और समावेशी विकास के लिए AI की क्षमताओं का पूरा फायदा उठा सकें।**
>
> – नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

की चुनौती आज पूरी दुनिया के सामने है। इसके अलावा साइबर सिक्योरिटी, डाटा की चोरी और आतंकियों के हाथ में AI टूल के आने का भी बहुत बड़ा खतरा है। ●

जलवायु परिवर्तन पर हर देश पूरा कर दिखाए अपना लक्ष्य

विश्व कल्याण के लिए सबके हितों की सुरक्षा और भागीदारी आवश्यक है, इसके लिए जरूरी है कि विश्व के देशों ने कार्बन उत्सर्जन पर जो लक्ष्य तय किए हैं उसे हर हाल में पूरा करें। विश्व की 17 फीसदी आबादी होने के बाद भी भारत की कार्बन उत्सर्जन में हिस्सेदारी महज चार फीसदी है। इसके बावजूद भारत वर्ष 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। संयुक्त अरब अमीरात में 30 नवंबर से 12 दिसंबर तक आयोजित कॉप-28 में शामिल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जलवायु परिवर्तन पर भारत की ओर से की गई प्रतिबद्धता को न सिर्फ दुनिया के सामने रखा बल्कि विश्व के देशों से भी अपने लक्ष्य को पूरा करने का किया आह्वान...

संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित कॉप-28 में एक दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल हुए और जलवायु परिवर्तन पर भारत की ओर से किए जा रहे कार्यों और प्रतिबद्धता से विश्व को अवगत कराया। तय किए गए लक्ष्यों को पूरा करने का आह्वान किया। भारत विश्व की उन कुछ अर्थव्यवस्थाओं में से एक है जो अद्यतन निर्धारित लक्ष्य (एनडीसी) को पूरा करने की राह पर है। उत्सर्जन की तीव्रता संबंधी लक्ष्य को भारत ने 11 साल पहले ही प्राप्त कर लिया है। भारत यून फ्रेमवर्क फॉर क्लाइमेट चेंज प्रोसेस के प्रति प्रतिबद्ध है इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कॉप-28 के मंच से कॉप-33 समिट को भारत की मेजबानी में कराने का प्रस्ताव रखा।

भारत विश्व की उन कुछ अर्थव्यवस्थाओं में से एक है जो

एनडीसी टार्गेट्स को पूरा करने की राह पर है। गैर-जीवाश्म ईंधन के लक्ष्य को भी देश ने निर्धारित समय से 9 साल पहले ही प्राप्त कर लिया। बावजूद इसके भारत इतने पर ही नहीं रूका। भारत का लक्ष्य 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता को 45 फीसदी घटाना है। देश ने तय किया है कि गैर-जीवाश्म ईंधन का शेयर बढ़ा कर 50 फीसदी करेंगे और 2070 तक जीरो कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य की तरफ बढ़ते रहेंगे।

भारत ने अपनी जी-20 अध्यक्षता में वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर की भावना के साथ क्लाइमेट के विषय को निरंतर महत्व दिया। टिकाऊ भविष्य के लिए भारत ने हरित विकास समझौता पर सहमति बनाई। यही नहीं नवीकरणीय ऊर्जा को तीन गुना करने की प्रतिबद्धता जताई गई। भारत ने वैकल्पिक ईंधन के लिए हाइड्रोजन के क्षेत्र को बढ़ावा दिया और वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन भी लॉन्च किया। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी की स्टडी कहती है कि इस अप्रोच से भारत 2030 तक प्रति वर्ष 2 बिलियन टन कार्बन उत्सर्जन कम कर सकता है।

पीएम मोदी ने कहा कि पिछली शताब्दी की गलतियों को सुधारने के लिए हमारे पास बहुत ज्यादा समय नहीं है। मानव जाति के एक छोटे हिस्से ने प्रकृति का अंधाधुंध दोहन किया लेकिन इसकी कीमत पूरी मानवता को चुकानी पड़ रही है, विशेषकर ग्लोबल साउथ के निवासियों को। संकल्प लेना होगा कि हर देश अपने लिए जो क्लामेट टारगेट्स तय कर रहा है वो पूरा करके ही दिखाएगा। संकल्प लेना होगा कि मिलकर काम करेंगे, एक-दूसरे का सहयोग करेंगे, साथ देंगे। ग्लोबल कार्बन बजट में भी सभी विकासशील देशों को उचित शेयर देना होगा। यह संकल्प लेना होगा कि इनोवेटिव टेक्नोलॉजी का लगातार विकास करें। अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरे देशों को टेक्नोलॉजी ट्रांसफर करें और क्लीन एनर्जी सप्लाई चेन को सशक्त करें।

ट्रांसफॉर्मिंग क्लाइमेट फाइनेंस

ट्रांसफॉर्मिंग क्लाइमेट फाइनेंस पर कॉप-28 की अध्यक्षता सत्र में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत ने जी-20 अध्यक्षता में सतत विकास और जलवायु परिवर्तन इन दोनों विषयों को बहुत प्राथमिकता दी है। भारत ने साझा प्रयास के माध्यम से कई विषयों पर सहमति बनाने में सफलता पाई है। भारत सहित ग्लोबल साउथ के तमाम देशों की जलवायु परिवर्तन में भूमिका बहुत कम रही है पर इसके दुष्प्रभाव इन देशों पर कहीं अधिक पड़े हैं। संसाधनों की कमी के बावजूद ये देश जलवायु कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध है। ग्लोबल साउथ की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कॉप-28 में लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन कार्यक्रम, कॉप-28 में ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम, जलवायु परिवर्तन पर कॉप-28 प्रेसीडेंसी सत्र को संबोधित करने के अलावा भारत और स्वीडन लीडरशिप ग्रुप ऑफ इंडस्ट्री ट्रांजिशन के दूसरे चरण की संयुक्त रूप से मेजबानी भी की।

'ग्लोबल ग्रीन क्रेडिट पहल की मेजबानी'

भारत ने कॉप-28 में संयुक्त अरब अमीरात के साथ ग्लोबल ग्रीन क्रेडिट पहल की संयुक्त रूप से मेजबानी की है। कार्यक्रम में स्वीडन के प्रधानमंत्री, नीदरलैंड के राष्ट्रपति और यूरोपियन काउंसिल के अध्यक्ष भी शामिल हुए। पीएम मोदी ने इन देशों को इस पहल में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। कार्यक्रम के दौरान एक वेब प्लेटफॉर्म भी लॉन्च किया गया जो पर्यावरण-अनुकूल कार्यों को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों और सबसे अच्छे तौर-तरीकों के संग्रह के रूप में काम करेगा। इस वैश्विक पहल का उद्देश्य ग्रीन क्रेडिट जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सकारात्मक कार्यों की योजना, अनुमानों और सर्वोत्तम तौर-तरीकों के आदान-प्रदान के माध्यम से वैश्विक सहभागिता, सहयोग और साझेदारी को सुविधाजनक बनाना है।

क्लाइमेट फाइनेंस और टेक्नोलॉजी बहुत ही जरूरी है। ग्लोबल साउथ के देशों की अपेक्षा है कि क्लाइमेट चेंज का मुकाबला करने के लिए विकसित देश उनकी अधिक से अधिक मदद करें। जी-20 में इसे लेकर सहमति बनी है कि जलवायु कार्रवाई के लिए 2030 तक कई ट्रिलियन डॉलर क्लाइमेट फाइनेंस की आवश्यकता है। यूएई द्वारा क्लाइमेट इंवेस्टमेंट फंड स्थापित करने की घोषणा का प्रधानमंत्री मोदी ने स्वागत किया।

जलवायु परिवर्तन पर प्रधानमंत्री मोदी की कॉप-28 अध्यक्षता में भागीदारी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक दिसंबर 2023 को संयुक्त अरब अमीरात के दुबई में 'ट्रांसफॉर्मिंग क्लाइमेट फाइनेंस' पर कॉप-

लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन के दूसरे चरण की मेजबानी

भारत और स्वीडन ने कॉप-28 के दौरान लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन के दूसरे चरण की संयुक्त रूप से मेजबानी की। पीएम मोदी ने स्वीडन के पीएम उल्फ क्रिस्टरसन के साथ दुबई में कॉप-28 में 2024-26 की अवधि के लिए लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन (लीडआईटी 2.0) के चरण-II को संयुक्त रूप से लॉन्च किया। भारत और स्वीडन ने इंडस्ट्री ट्रांजिशन प्लेटफॉर्म भी लॉन्च किया जो दोनों देशों की सरकारों, उद्योगों, प्रौद्योगिकी प्रदाताओं, शोधकर्ताओं और थिंक टैंक को आपस में जोड़ेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि लीड आईटी 2.0 निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करेगा...

- समावेशी एवं व्यवस्थित उद्योग परिवर्तन।
- निम्न-कार्बन प्रौद्योगिकी का मिलकर विकास एवं हस्तांतरण।
- उद्योग परिवर्तन के लिए उभरती अर्थव्यवस्थाओं को वित्तीय सहायता।

विश्व की 17 फीसदी आबादी के बाद भी भारत की ग्लोबल कार्बन उत्सर्जन की हिस्सेदारी चार फीसदी।

28 प्रेसीडेंसी सत्र में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्त को अधिक सुलभ और किफायती बनाने पर केंद्रित था। वैश्विक नेताओं ने 'नए वैश्विक जलवायु वित्त प्रारूप पर संयुक्त अरब अमीरात घोषणा' को अपनाया। घोषणा में प्रतिबद्धताओं को पूरा करना, महत्वाकांक्षी परिणाम प्राप्त करना और जलवायु कार्रवाई के लिए रियायती वित्त स्रोतों को व्यापक बनाना शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी ने ग्लोबल साउथ की चिंताओं को व्यक्त करते हुए विकासशील देशों को उनकी जलवायु महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने और उनके एनडीसी को लागू करने हेतु कार्यान्वयन के साधन, विशेष रूप से जलवायु वित्त उपलब्ध कराने की तात्कालिकता पर जोर दिया। पीएम मोदी ने हानि एवं क्षति के संचालन और कॉप-28 में संयुक्त अरब अमीरात जलवायु निवेश कोष की स्थापना का स्वागत किया।

पीएम मोदी ने कॉप-28 में जलवायु वित्त से संबंधित मुद्दों पर सक्रियता से विचार-विमर्श करने का आह्वान किया। इसमें जलवायु वित्त पर नए सामूहिक परिमाणित लक्ष्य में प्रगति, हरित जलवायु निधि एवं अनुकूलन निधि की पुनःपूर्ति, जलवायु कार्रवाई के लिए एमडीबी द्वारा किफायती वित्त उपलब्ध कराया जाएगा और विकसित देशों को 2050 से पहले अपने कार्बन उत्सर्जन को खत्म करना होगा, मुद्दे शामिल रहे।

'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम में प्रधानमंत्री का संबोधन'

प्रधानमंत्री मोदी ने कॉप-28 में 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' पर उच्च स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित किया। इसमें उन्होंने कहा कि कार्बन क्रेडिट का दायरा बहुत ही सीमित है और ये फिलॉसफी एक प्रकार से वाणिज्यिक तत्व से प्रभावित रही है। कार्बन क्रेडिट की व्यवस्था में एक सामाजिक उत्तरदायित्व का जो भाव होना चाहिए उसका अभाव देखा गया है। लिहाजा होलिस्टिक तरीके से नई फिलॉसफी पर बल देना होगा और यही ग्रीन क्रेडिट का आधार है। प्रकृति रक्षति रक्षिता अर्थात प्रकृति उसकी रक्षा करती है जो प्रकृति की रक्षा करता है। कॉप-28 के मंच से पीएम मोदी ने आह्वान किया कि इस शुरुआत से जुड़ें। साथ मिलकर इस धरती के लिए, अपनी भावी पीढ़ियों के लिए, एक ग्रीनर, क्लिनर और बेटर फ्यूचर का निर्माण करें। ●

पूरी दुनिया के पर्यटकों को आकर्षित कर रही है भारत की प्राचीन धरोहर

भारत का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। एक समय था जब दुनिया में भारत की समृद्धि के किस्से कहे जाते थे। आज भी भारत की संस्कृति, प्राचीन धरोहर पूरी दुनिया के पर्यटकों को आकर्षित करती है। 'विरासत पर गर्व' की भावना के साथ देश फिर से आगे बढ़ रहा है। इसी क्रम में 8 दिसंबर को दिल्ली के लाल किले में 'इंडिया आर्ट, आर्किटेक्चर एंड डिजाइन बियनाले 2023' के साथ-साथ उत्तराखंड के देहरादून में वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 2023 का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया उद्घाटन...

हर राष्ट्र के पास उसके अपने प्रतीक होते हैं जो विश्व को उसके अतीत से और उसके मूल्यों से परिचित करवाते हैं। इन प्रतीकों को गढ़ने का काम राष्ट्र की कला, संस्कृति और वास्तु का होता है। देश की राजधानी दिल्ली तो ऐसे कितने ही प्रतीकों का केंद्र है। जिनमें भारतीय वास्तु की भव्यता के दर्शन होते हैं। दिल्ली में आयोजित हुए 'इंडिया आर्ट आर्किटेक्चर एंड डिजाइन बियनाले' का यह आयोजन कई मायनों में खास है। आर्ट, आर्किटेक्चर और कल्चर ये मानवीय सभ्यता के लिए विविधता और एकता दोनों के स्रोत रहे हैं। दुनिया के सबसे विविधतापूर्ण राष्ट्र होने के बाद भी भारत को यही विविधता आपस में जोड़ने का काम करती है।

आज देश में आर्ट और आर्किटेक्चर से जुड़े हर क्षेत्र में आत्मगौरव की भावना से काम हो रहा है। भारत में आयोजित किए जा रहे बियनाले इस दिशा में एक और शानदार कदम है। इससे पहले दिल्ली में इंटरनेशनल म्यूजियम एक्सपो और अगस्त में फेस्टिवल ऑफ लाइब्रेरीज का आयोजन भी किया गया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से प्रयास है कि भारत में ग्लोबल कल्चरल की शुरुआत को संस्थागत बनाया जाए। केंद्र सरकार चाहती है कि वेनिस, साओ पाउलो, सिंगापुर, सिडनी, शारजाह जैसे बियनाले और दुबई-लंदन जैसे आर्ट फेयर्स की तरह दुनिया में भारत के आयोजनों की भी बड़ी पहचान बने। अपने इन्हीं लक्ष्यों की पूर्ति के लिए 8 दिसंबर को ही 'आत्मनिर्भर भारत सेंटर फॉर

देवत्व और विकास का अनुभव 'उत्तराखंड'

जहां अंजुली में गंगा जल हो, जहां हर एक मन बस निश्छल हो,
जहां गांव-गांव में देशभक्त हो, जहां नारी में सच्चा बल हो,
उस देवभूमि का आशीर्वाद लिए मैं चलता जाता हूं!
इस देव भूमि के ध्यान से ही, मैं सदा धन्य हो जाता हूं।
है भाग्य मेरा, सौभाग्य मेरा, मैं तुमको शीश नवाता हूं।

प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तराखंड के लिए कही कविताओं की इन पंक्तियों को याद करते हुए कहा कि यह वो राज्य है जहां आपको देवत्व और विकास दोनों का अनुभव एक साथ होता है। पीएम मोदी कहते हैं कि मैंने तो उत्तराखंड की भावनाओं और संभावनाओं को निकट से देखा है। उसे जिया और उसका अनुभव किया है। पीएम मोदी ने कहा, "बोला जाता है कि जवानी और पहाड़ का पानी पहाड़ के काम नहीं आता है। जवानी रोजी रोटी के लिए कहीं चली जाती है, पानी बहकर कहीं पहुंच जाता है। लेकिन मोदी ने ठान लिया है, अब पहाड़ की जवानी और पहाड़ का पानी भी पहाड़ के काम आएगा।"

देहरादून में उत्तराखंड वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 2023 के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि सामर्थ्य से भी यह देवभूमि निश्चित रूप से निवेश के बहुत सारे द्वार खोलने जा रही है। आज भारत, विकास और विरासत के जिस मंत्र के साथ आगे बढ़ रहा है उत्तराखंड उसका प्रखर उदाहरण है। देश में आज नीति संचालित शासन है। हर देशवासी को लगता है कि विकसित भारत का निर्माण उसकी अपनी जिम्मेदारी है।

भारत सरकार 21वीं सदी के आधुनिक कनेक्टिविटी के इंफ्रास्ट्रक्चर पर उत्तराखंड में अभूतपूर्व निवेश कर रही है। आधुनिक कनेक्टिविटी जीवन तो आसान बना ही रही है ये बिजनेस को भी आसान बना रही है। इससे खेती, टूरिज्म सहित दूसरे सेक्टर में भी नई संभावनाएं खुल रही है। हर नया रास्ता इन्वेस्टर के लिए एक सुनहरा मौका लेकर आया है। भारत के लिए, भारत की कंपनियों और निवेशकों के लिए यह अभूतपूर्व समय है। अगले पांच वर्षों में भारत, दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बनने जा रहा है। पीएम मोदी ने कहा देशवासियों को विश्वास दिलाता हूं कि मेरे तीसरे टर्म में देश दुनिया में पहले तीन में ठोकर रहेगा। निवेशकों से पीएम मोदी ने आह्वान किया कि उत्तराखंड के साथ चलकर अपना भी विकास करिए और उत्तराखंड के विकास में भी सहभागी बनिए।

"मैं चाहूंगा कि आयोजन का आगे भी विस्तार हो, इसमें ज्यादा से ज्यादा संख्या में देश साथ आएं। मुझे विश्वास है कि यह आयोजन इस दिशा में एक अहम शुरुआत साबित होगा।"

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

डिजाइन' का लोकार्पण भी हुआ। यह सेंटर भारत की यूनिक और दुर्लभ कलाओं को आगे बढ़ाने के लिए मंच देगा। ये कारीगरों और डिजाइनर को साथ लाने, मार्केट के हिसाब से इनोवेशन करने में मदद करेगा। इससे कारीगरों को डिजाइन डेवलपमेंट की भी जानकारी मिलेगी और वे डिजिटल मार्केटिंग में भी पारंगत होंगे। भारतीय शिल्पियों में इतनी प्रतिभा है कि आधुनिक जानकारी और संसाधनों के साथ वो पूरी दुनिया में अपनी छाप छोड़ सकते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत के 5 शहरों में कल्चरल स्पेस बनाने की शुरुआत होना भी एक ऐतिहासिक कदम है। दिल्ली के साथ-साथ कोलकाता, मुंबई, अहमदाबाद और वाराणसी में बनने वाले ये कल्चरल स्पेस इन शहरों को सांस्कृतिक रूप से और समृद्ध करेंगे। ये सेंटर लोकल आर्ट को मजबूत करने के लिए नए विचारों को भी आगे बढ़ाएंगे। पीएम मोदी का मानना है कि आर्ट, आर्किटेक्चर और कल्चर तभी फलते-फूलते हैं, जब समाज में विचारों की स्वतंत्रता होती है, अपने ढंग से काम करने की आजादी मिलती है। केंद्र की सरकार जब कल्चर की बात करती है तो हर तरह की विविधता का स्वागत करती है। देश के अलग-अलग राज्यों और शहरों में जी-20 के आयोजन के जरिए देश ने इसी विविधता को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। सभ्यताएं समागम और सहयोग से ही समृद्ध होती है इसलिए इस दिशा में दुनिया के दूसरे सभी देशों की भागीदारी, उनके साथ हमारी पार्टनरशिप महत्वपूर्ण है।●

कल्याण सिंह

जिन्होंने जन-कल्याण को बनाया अपना जीवन मंत्र

जन्म : 5 जनवरी 1932, मृत्यु : 21 अगस्त 2021

जननेता, सुशासन के संवाहक कल्याण सिंह ने सेवा और सामाजिक न्याय के अद्वितीय प्रतिमान स्थापित किए। वे एक ऐसे जननायक थे जिन्होंने अपने जीवन का हर क्षण गरीब और पिछड़ों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। अपने राजनीतिक कौशल, प्रशासकीय अनुभव और विकासोन्मुखी दृष्टिकोण से राष्ट्रीय स्तर पर एक अमिट छाप छोड़ी। वह अपनी सहजता और सरलता के कारण जनता में लोकप्रिय थे। जन-कल्याण को जीवन का मंत्र मानने और सादगीपूर्ण जीवन यापन करने वाले कल्याण सिंह का जीवन राष्ट्र निर्माण में योगदान करने के लिए सदैव करता रहेगा प्रेरित...

माता-पिता की तरफ से दिए गए नाम को कल्याण सिंह ने अपने जीवन से सार्थक कर दिया। वह जीवन भर जन-कल्याण के लिए जिए और जन-कल्याण को ही अपने जीवन का मंत्र बना लिया। कल्याण सिंह भारत के कोने-कोने में एक विश्वास और एक प्रतिबद्ध निर्णयकर्ता का नाम बन चुके थे। जीवन के अधिकतम समयकाल में वह जन-कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे। जब जो भी दायित्व मिला, वह हमेशा दूसरे के लिए प्रेरणा बने और जन-सामान्य के विश्वास का प्रतीक बन कर उभरे।

कल्याण सिंह का जन्म 5 जनवरी 1932 को उत्तर प्रदेश के अतरौली में हुआ था। उनके माता- पिता का नाम सीता देवी और तेजपाल सिंह था। एक साधारण किसान परिवार में जन्मे कल्याण सिंह युवावस्था में ही सार्वजनिक जीवन में सक्रिय हो गए थे। प्यार से लोग उन्हें 'बाबूजी' कहा करते थे। उन्होंने विधायक, मुख्यमंत्री, राज्यपाल हर भूमिका में राष्ट्रहित सर्वोपरि रखा। एक बहुत ही गरीब तबके से उठकर इतने बड़े नेता बनने, विचारधारा के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए संघर्षरत रहे।

कल्याण सिंह श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के एक बड़े नेता भी रहे। इस आंदोलन के लिए सत्ता त्याग करने में तनिक भी नहीं सोचा। उनका पूरा जीवन उत्तर प्रदेश के विकास इसे देश का सबसे अच्छा प्रदेश बनाने और गरीबों को समर्पित रहा। कल्याण सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहते हुए जनता को एक भयमुक्त और जन-कल्याणकारी शासन दिया। 21 अगस्त 2021 को उनका निधन हो गया। उनके राष्ट्र समर्पित विराट जीवन को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए भारत सरकार ने 2022 में उन्हें मरणोपरांत पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

कल्याण सिंह का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बहुत ही आत्मीय संबंध था। इसे ऐसे समझा जा सकता है कि जब कल्याण सिंह बीमारी के कारण अस्पताल में भर्ती थे तब प्रधानमंत्री मोदी लगातार उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेते रहते थे। उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए असंख्य लोगों की प्रार्थना में शामिल थे। उस समय पीएम मोदी ने कल्याण सिंह के साथ अपने संबंधों को याद करते हुए कहा था कि उनके साथ बात करने से हमेशा कुछ न कुछ सीखने को मिलता था। नया अनुभव होता था। मेरे पास कल्याण सिंह के साथ उठने-बैठने, बातचीत करने की कई यादें हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके निधन पर कहा था कि कल्याण सिंह राजनेता, वरिष्ठ प्रशासक, जमीनी नेता और बहुत अच्छे इंसान थे। वह अपने पीछे उत्तर प्रदेश के विकास के लिए एक अमिट योगदान छोड़ गए हैं। भारत के सांस्कृतिक उत्थान मे कल्याण सिंह के योगदान के लिए आने वाली पीढ़ियां हमेशा उनकी आभारी रहेंगी। भारतीय मूल्यों में उनकी गहरी आस्था थी। वह हमारी सदियों पुरानी परंपराओं पर गर्व किया करते थे। उन्होंने समाज के वंचित वर्ग के करोड़ों लोगों को आवाज दी। उन्होंने किसानों, युवाओं और महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में कई प्रयास किए। ●

बिना उंगली और आईरिस वाला व्यक्ति करा सकता है आधार नामांकन

ऐसा व्यक्ति जो आधार के लिए पात्र है लेकिन उंगलियों के निशान देने में असमर्थ है, वह केवल आईरिस स्कैन का उपयोग कर और जिसकी आंख की पुतली किसी भी कारण से नहीं ली जा सकी है, वह केवल अपने फिंगरप्रिंट का उपयोग कर नामांकन कर सकता है। अगर बायोमेट्रिक या आईरिश स्कैन दोनों में असमर्थ है तो भी नामांकन कर सकता है। ऐसे व्यक्ति के लिए बायोमेट्रिक अपवाद नामांकन दिशानिर्देशों के तहत तस्वीर ली जाती है। यूआईडीएआई असाधारण नामांकन के तहत प्रतिदिन लगभग एक हजार व्यक्तियों का नामांकन करता है। अब तक, यूआईडीएआई ने लगभग 29 लाख लोगों को आधार नंबर जारी किए हैं जिनकी उंगलियां गायब थीं अथवा आईरिस या दोनों बायोमेट्रिक प्रदान करने में असमर्थ थे।

ऐसा विशेष मामला केरल में सामने आया जिसमें एक महिला की उंगलियां नहीं थी जिससे वो आधार के लिए नामांकन नहीं करा पा रही थी। इसे देखते हुए केंद्रीय इलेक्ट्रानिक्स एवं आईटी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने यूआईडीएआई को तत्काल कदम उठाने के निर्देश दिए। इसके बाद नामांकन टीम ने केरल के कोट्टायम जिले के कुमारकम में जोसिमोल पी. जोस के घर का दौरा किया। उनका आधार नंबर तैयार किया। पूर्व में आधार नामांकन ऑपरेटर ने असाधारण नामांकन प्रक्रिया का पालन नहीं किया था जो 1 अगस्त, 2014 से लागू है।

देश में 1.3 करोड़ एलईडी स्ट्रीट लाइट से रौशन सड़कें

सड़कों पर कम बिजली खर्च में अच्छी रौशनी के लिए स्ट्रीट लाइटिंग का राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया गया। इसके तहत देशभर में एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड ने दिसंबर, 2023 तक 1.3 करोड़ एलईडी स्ट्रीट लाइट लगाई है। योजना की शुरुआत जनवरी, 2015 में की गई थी। यह जानकारी केंद्रीय विद्युत और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आर.के सिंह ने लोकसभा में एक सवाल के जवाब में दी है।

दूसरी तरफ देश के ग्रामीण क्षेत्रों में सभी इच्छुक गैर विद्युतीकृत घरों और शहरी क्षेत्र के सभी इच्छुक गरीब परिवारों को बिजली कनेक्शन देने के उद्देश्य से सहज बिजली हर घर योजना 'सौभाग्य' शुरू किया गया। इसके तहत करीब तीन करोड़ नए कनेक्शन दिए गए। वहीं बिजली खपत कम करने के उद्देश्य से उजाला योजना के तहत कम कीमत पर करीब 37 करोड़ एलईडी बल्ब वितरित किए गए जिससे एलईडी बल्ब की दुनिया में नई क्रांति आई।

अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन के लिए भारत फिर निर्वाचित

अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार में सर्वाधिक रुचि वाले 10 राष्ट्रों की श्रेणी में शामिल भारत सर्वाधिक वोट के साथ फिर से अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन (आईएमओ) के परिषद में निर्वाचित हुआ है। दो वर्षीय कार्यकाल वर्ष 2024-25 तक का है। अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार में सर्वाधिक रुचि वाले 10 देशों में भारत के साथ ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, स्पेन, स्वीडन और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं।

केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा है कि आईएमओ में अधिकतम वोट अंतरराष्ट्रीय समुद्री संचालन में भारत के योगदान को सुदृढ़ करने के लिए सरकार के दृढ़ संकल्प का संकेत है। आईएमओ समुद्री उद्योग को नियंत्रित करने वाला अग्रणी प्राधिकरण है जो वैश्विक व्यापार, परिवहन और सभी समुद्री संचालन का समर्थन करता है। अमृत काल विजन 2047 एक्शन प्लान के हिस्से के रूप में 43 पहलों की पहचान की गई है जिनमें से प्रमुख पहल हमारी वैश्विक समुद्री उपस्थिति को मजबूत करने पर केंद्रित है।●

मैथिल देविका
शास्त्रीय नृत्यांगना

बधिरों के लिए संगीत

नृत्यांगना मैथिल देविका ने **सांकेतिक भाषा को मुद्राओं के साथ मिलाकर** अपने दिव्यांग दर्शकों के लिए एक अनोखा नृत्य तैयार किया

भारतीय शास्त्रीय नृत्य पिछले महीने तिरुवनंतपुरम में एक अभूतपूर्व पल का साक्षी बना. जैसे ही मोहिनीअट्टम की कुशल नृत्यांगना मैथिल देविका ने संगीत और नृत्य के विरासत केंद्र अम्मावीदु में प्रदर्शन शुरू किया, सुनने और बोलने में अक्षम प्रशंसकों का एक उत्साहित समूह अपने सामने खुल रही भाव-भंगिमाओं में डूब गया. लेकिन उन्होंने उस प्रदर्शन का रसास्वादन कैसे किया? दरअसल, देविका ने अपने दूरदर्शी प्रोजेक्ट डांस फिलैंथ्रोपी ऐंड सोशल इन्क्लूजन के तहत 'क्रॉसओवर' नामक प्रदर्शन के लिए भारतीय सांकेतिक भाषा को शास्त्रीय नृत्य की हस्तमुद्राओं के साथ मिला दिया.

अपेक्षा के अनुरूप इसे तुरंत तारीफ मिली तथा ऐसे और प्रदर्शनों की योजना बनाई गई है. इसके अतिरिक्त 'क्रॉसओवर' पर आधारित एक लघु फिल्म जल्द ही केरल की विभिन्न जगहों पर प्रदर्शित की जाएगी. देविका का कहना है कि उन्होंने इस पहल को खातिर धन जुटाने के लिए, मन नहीं होने के बावजूद मलयालम फिल्म कथा इनुवरे (अब तक की कहानी) में एक किरदार निभाया.

अपने तीन दशक के शानदार करियर में देविका एक नृत्यांगना, शोधकर्ता और कंपोजर के रूप में उभरी हैं, जिन्होंने दुनियाभर के कला प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया. लेकिन, उनका मौजूदा प्रयास खासा महत्व रखता है. देविका कहती हैं, ''कोविड महामारी के दौरान, बिना किसी मंच और प्रदर्शन के मैंने एक ऐसे नृत्य रूप की कल्पना की जो मुझे उम्मीद थी कि यह कम भाग्यशाली लोगों को पसंद आएगा.'' यह कामयाबी मुद्रा की सीमाओं से परे जाकर भाषा के जरिये संचार करने के विचार के साथ हासिल हुई. वे कहती हैं, ''मैंने उनके दिलों से जुड़ने के लिए सांकेतिक भाषा सीखी.''

पलक्कड़ में कला से गहराई से जुड़े एक परिवार में जन्मीं देविका को चार साल की उम्र में ही शास्त्रीय नृत्य से परिचित करा दिया गया था. देविका 20 साल की उम्र से एकल प्रदर्शन कर रही हैं. उत्साहित देविका बताती हैं, ''नृत्य का मतलब ही क्या रह जाएगा अगर वह सीमित है और कला केवल विशेषाधिकार प्राप्त लोगों तक पहुंच रखती है. एक कलाकार के रूप में मैं जिंदगी के लिए प्रदर्शन तैयार करना अपनी जिम्मेदारी महसूस करती हूं.''

अपने प्रदर्शन के जरिये देविका ने दिखा दिया कि नृत्य भाषा और ध्वनि की सीमाओं से परे है. तिरुवनंतपुरम में उन्होंने गौर किया कि कुछ लोग उनकी मुद्राओं की नकल कर रहे थे. देविका संतोष से अपनी आंखें बंद करते हुए कहती हैं, ''यह एक सुखद अनुभव था. मैंने दुनियाभर में विभिन्न देशों और भाषाओं के लोगों के सामने प्रदर्शन किया है, लेकिन दर्शकों को अपनी मुद्राओं में शामिल होते देखना अभूतपूर्व है. यह संकेत है कि प्रदर्शन ने उनके दिलों को छू लिया. मुझे लगता है कि मेरा मिशन पूरा हो गया है.'' ■

खुशी की वजह

- नृत्यांगना मैथिल देविका ने 'डांस फिलैंथ्रोपी ऐंड सोशल इन्क्लूजन नामक पहल के जरिये दिव्यांग लोगों के लिए सांकेतिक भाषा का शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शन तैयार किया
- उन्हें यह विचार कोविड लॉकडाउन के दौरान आया जब कोई गाने वाला उपलब्ध नहीं था

बदलाव की अगुआ अफसर

अनुकृति शर्मा
सहायक पुलिस अधीक्षक, बुलंदशहर

आइपीएस अधिकारी अनुकृति यह **पक्का करने में लगी हैं कि बुलंदशहर में** महिला पुलिसकर्मियों को बराबर का दायित्व मिले, जिससे पुलिस व्यवस्था प्रभावी भी हो और जनता के नजदीक भी

खुशी की खोज

म

हिला पुलिसकर्मी बाइक पर ! वह भी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में ? भले ही यह हैरत वाली बात लगे लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 'बाइकवाली पुलिस दीदी' आपको कहीं भी घूमती नजर आ सकती महिला पुलिस अफसर यहां हैं. उन बाइक्स को यहां फैंटम बाइक कहा जाता है: हूटर, पुलिस की बत्ती, माइक वगैरह के साथ पुलिस की जरूरत के अनुरूप तैयार. इसका श्रेय जाता है 2020 बैच की आइपीएस अफसर और बुलंदशहर की मौजूदा सहायक पुलिस अधीक्षक (एएसपी) अनुकृति शर्मा को. उन्होंने पुलिस को ज्यादा असरदार और जनोन्मुखी बनाने का जिम्मा उठाया है. उनके मुताबिक, इस दिशा में पहला कदम है महिला पुलिस अफसरों को ज्यादा दायित्व देना.

इसी के तहत महिला अफसरों को कहीं अहम और सामने वाले रोल दिए जा रहे हैं. हर हफ्ते पुरुष और महिला पुलिसकर्मियों की ड्यूटी में अदला-बदली होती है ताकि बिना किसी लैंगिक भेदभाव के सबको सब तरह का काम करने का मौका मिले. महिला पुलिस अफसरों को कुर्सी वाले काम देने की बजाय फील्ड में जाने, सम्मन देने, छापे मारने यहां तक कि गिरफ्तारियां करने जैसे काम हाथ में लेने को बढ़ावा दिया जाता है. वे कहती हैं, ''यहां तक कि अर्धसैनिक बलों में भी महिलाओं को मानवाधिकार उल्लंघन से संबंधित मामलों के निबटने के लिए नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भेजा जाता है. मैं महिलाओं को उनकी रुचि के मुताबिक जिम्मेदारी सौंपने की हामी हूं. जरूरी नहीं कि उन्हें सिर्फ मेडिकल या महिला पीड़ितों से जुड़ी जिम्मेदारी संभालने और सीआरपीसी की धारा 164 के तहत बयान दर्ज करने तक ही सीमित रखा जाए. अगर उन्हें हर तरह के काम सौंपे जाएंगे तो इससे उनका आत्मविश्वास ही बढ़ेगा.''

यह पूछने पर महिला पुलिसकर्मियों ने कितने अपराधियों को पकड़ा है, अनुकृति फौरन जवाब देती हैं, ''हम छापे मारने जैसी कार्रवाई में लैंगिक आधार पर कोई अंतर नहीं करते क्योंकि इससे लैंगिक समानता की दलीलें बेमायने हो जाती हैं.'' पर फिर जोड़ती हैं, ''पिछले महीने ही नरौरा थाने की महिला पुलिस टीम ने अलग-अलग जगह से चार पुरुष अपराधियों को गिरफ्तार किया था.''

फैंटम बाइक पर महिला पुलिस अफसरों की चौकसी ने दूसरे महकमों में भी आत्मविश्वास पैदा करने का काम किया है. बुलंदशहर के सभी 25 थानों में ऐसी 1-1 बाइक उपलब्ध हैं. बाइक पर चौकसी करने वाली महिला कॉन्स्टेबल प्रीति कुमारी कहती हैं, ''पहले मैं आने-जाने के लिए अपनी स्कूटी इस्तेमाल करती थी, लेकिन अनुकृति मैडम ने हमें नोटिस देने के लिए फैंटम बाइक से जाने के लिए प्रेरित किया. अब तो हमारे लिए यह रोज की बात हो गई है.''

अनुकृति का मानना है कि महिला पुलिस अधिकारियों को महत्वपूर्ण और सार्थक भूमिकाएं देने से ज्यादा कुशल, जनता के अनुकूल, कम भ्रष्ट, संवेदनशील और अधिक जवाबदेह पुलिस व्यवस्था मुमकिन हो सकती है. वे कहती हैं, ''पुलिस का काम दरअसल लंबे समय से पुरुष प्रधान पेशा रहा है. आप गौर कीजिए तो पाएंगे कि अमूमन पुरुष शिकायतकर्ता ही थाने-चौकियों में आते रहे हैं. महिलाओं के लिए शिकायत लेकर पुलिस थाने जाने को आज भी अजीब नजरों से देखा जाता है. इसलिए, मैं शुरू से ही पुलिस सेवा को अधिक नागरिक-केंद्रित बनाने की कोशिश में जुटी रही हूं. हमारे थानों में किसी भी उम्र के बच्चे, बुजुर्ग या महिलाएं बेझिझक आ सकती हैं और अपनी समस्याएं हमारे साथ साझा कर सकती हैं. और अब तो सरकार की पहल 'मिशन शक्ति' के तहत रोज ही महिला शिकायतकर्ताओं की बात सुनी जाती है.''

अनुकृति कहती हैं, उनकी कोशिश पुलिस के प्रति जनता के सोच में बदलाव लाने की है. यही वजह है कि वे लोगों के साथ नियमित बैठकें और स्कूलों के दौरे भी करती हैं. उन्होंने अपनी कार्यशैली से सबका ध्यान खींचा है. पिछले साल जून में शहर की एक 70 वर्षीया महिला के घर बिजली पहुंचाने में पुलिस की मदद का वीडियो वायरल हुआ था. अनुकृति हर किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने को अपनी सेवा का अहम हिस्सा मानती हैं.■

★ ★ ★

खुशी की वजह

- अनुकृति की निगरानी में पुलिस की ड्यूटी में हर हफ्ते बदलाव होता है, जिससे कि पुरुष, महिला सभी पुलिसकर्मियों को हर तरह का काम करने का मौका मिले
- उनका मकसद पुलिस के बारे में बनी धारणा में सुधार लाना और पुलिस व्यवस्था को ऐसा बनाना है जिसमें जनता को अहमियत मिले
- बाइकवाली पुलिस दीदियां दूसरों में भी आत्मविश्वास पैदा कर रही हैं

★ ★ ★

राशिफल

जनवरी–2024

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए आपको आज कार्यक्षेत्र में कई अटके कार्यों को पूरा करना होगा। मानसिक तनाव की वजह से चिड़चिड़ापन भी हो सकता है। वैसे आर्थिक मामलों में आपको आज कमाई के कई मौके मिलेंगे। आपके लिए सलाह है कि आप आज अपनी कार्ययोजना को तब तक किसी से न कहें जब तक आपका काम पूरा नहीं हो जाता है। लव लाइफ के मामले में दिन बहुत पक्ष में नहीं है, पार्टनर के साथ किसी बात को लेकर मतांतर हो सकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको आज अच्छी खबर मिलेगी।

वृषभ

वृषभ राशि के लिए सितारे बताते हैं कि आज आप ऊर्जा से भरपूर रहेंगे, जो भी करेंगे उसमें आपको आज पूरी सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में आपको आज जोखिम नहीं लेना चाहिए, निवेश करने के लिए सोच रहे हैं तो सभी पक्षों पर विचार करने के बाद ही कोई भी फैसला लें। संतान का स्वास्थ्य परेशानी का कारण बन सकता है। लव लाइफ में आज आपको प्रेमी की ओर से खुशी मिलेगी। रोमांटिक शाम का आप आनंद ले सकते हैं।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों के लिए आज का दिन उलझन और तनाव भरा रहेगा। किसी बात को लेकर आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। लोग आपसे अनावश्यक आस लगाए रहेंगे और अपनी गलती के लिए भी आपको ही जिम्मेदार बताकर इल्जाम लगाएंगे। आपकी राशि के चतुर्थ भाव में चलते हुए चंद्रमा आपको पारिवारिक जीवन में सुख साधनों का आनंद दिलाएंगे। आपकी कोई चाहत आज पूरी होगी। बिजनस में आप को हिसाब किताब को ठीक करना होगा, काम के दबाव के बीच कमाई भी ठीक हो जाएगी। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क

कर्क राशि के लिए आज सितारे बताते हैं कि आपको आर्थिक मामलों में किए गए प्रयास का लाभ मिलेगा। परिवार के सदस्यों से आपको अपेक्षित सहयोग मिलेगा। किसी पारिवारिक कार्य को लेकर आज घर के बड़ों के साथ बातचीत कर सकते हैं। भाई बहनों की की मदद से आपका कोई जरूरी काम पूरा हो सकता है। काम के सिलसिले में की गई आपकी यात्रा आज सफल रहेगी। आपके लिए सलाह है कि अपनी वाणी को आज संयमित रखें और आवेश में आकर कुछ भी बोलने से बचें नहीं तो परेशानी होगी।

सिंह

सिंह राशि के लिए आज सितारे बताते हैं कि आपको आज घर के बड़ों से सहयोग और आशीर्वाद मिलेगा। आर्थिक लाभ भी आज आप प्राप्त कर सकते हैं लेकिन लाभ आपकी उम्मीद से काम होने की वजह से संतोष करना पड़ेगा। किसी मित्र या संबंधी की ओर से आपको उपहार मिल सकता है। आपकी मेहनत और समर्पण खुद बोलेगा और आप दूसरों का विश्वास और सहयोग हासिल करेंगे। इस राशि के बुजुर्ग आज खाली समय में अपने पुराने दोस्तों से मिलने जा सकते हैं। वैवाहिक जीवन में आज जीवनसाथी का साथ सहयोग बना रहेगा।

कन्या

कन्या राशि के लिए आज सितारे बताते हैं कि आज आज का दिन आपका उथल पुथल वाला रहेगा। किसी पुरानी समस्या की वजह से मन परेशान हो सकता है। लेकिन अच्छी बात यह है कि परिवार के बड़े आपका साथ देंगे और आपको उलझन से निकलने में सहयोग करेंगे। आर्थिक मामलों में आज आपको संभलकर चलना होगा। किसी से धन उधार भी लेना पड़ सकता है। लव लाइफ के मामले में आज का दिन बहुत ही अच्छा है। प्रेमी से आपको सहयोग और किसी विषय में उचित मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

तुला

तुला राशि के लिए आज सितारे बताते हैं कि आपको आज किसी नकारात्मक खबर से आप तनाव महसूस करेंगे लेकिन आपको फालतू सोच विचार से बचना चाहिए। अपने कीमती सामान का ध्यान रखें क्योंकि आपकी कोई चीज खोने या चोरी होने का भय बना रहेगा। शिक्षा प्रतियोगिता में आज छात्रों को बड़ी सफलता मिलेगी। वैवाहिक जीवन में जीवनसाथी की सेहत को लेकर थोड़ी चिंता रह सकती है। सितारे कहते हैं कि आज आपको दोस्तों और निकट संबंधियों से सहयोग मिलेगा। रुचिकर खान पान का आनंद लेंगे।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए आज का दिन आनंददायक रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, बीमार लोगों की सेहत में सुधार होगा। लेकिन खर्च के मामले में आपको अपना ध्यान रखना, कुछ गैर जरूरी खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार के साथ सामाजिक गतिविधियों भाग ले सकते हैं। घर परिवार के साथ आप मनोरंजक पल बिताएंगे। कार्यक्षेत्र में आज काम पर फोकस बना रहेगा और आप अपने काम को खुशी खुशी पूरा कर पाएंगे। मित्रों और सहकर्मियों से आपको सहयोग मिलेगा।

धनु

धनु राशि वालों के लिए आज का दिन खुशियों भरा रहेगा। बिजनस में आज आपको लाभ के अवसर मिलते रहेंगे। किराना कारोबार से जुड़े लोगों को आज अच्छा मुनाफा मिलेगा और कहीं आपका पैसा फंसा है तो आपको वह धन मिल सकता है। लव लाइफ के मामले में आज का दिन आपके लिए रोमांचक रहेगा। प्रेमी और जीवनसाथी से आपको सरप्राइज मिलेगा जिससे आप आनंदित होंगे। माता पिता की सेहत अगर बीते दिनों से ठीक नहीं चल रही है तो उनकी सेहत में सुधार से संतोष महसूस करेंगे।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए आज का दिन लाभकारी और शुभ रहेगा। आपका सरकारी क्षेत्र में अटका काम आज पूरा हो सकता है। नौकरी में अधिकारी वर्ग से आपको सहयोग मिल सकता है। जो लोग अभी तक सिंगल हैं उनकी आज किसी खास से मुलाकात होने की संभावना है। आज आराम के लिए बहुत कम समय है- क्योंकि आपको कई अटके कार्यों को पूरा करना होगा। वैवाहिक जीवन में आज आपके प्रेम और आपसी तालमेल बना रहेगा। आप साथ में सुखद पलों का आनंद लेंगे।

कुंभ

कुंभ राशि के जातकों के लिए आज का दिन मिलाजुला रहेगा। सेहत के मामले में आज आप अपना ध्यान रखें, खान पान के मामले में लापरवाही नुकसानदायक हो सकता है। बाहरी खान पान से आपको आज परहेज रखना चाहिए। अनावश्यक तनाव न लें क्योंकि इससे आपको मानसिक परेशानी हो सकती है। कोई दूर का रिश्तेदार आज आपसे संपर्क कर सकता है, जिससे आपको खुशी मिलेगी। मित्रों से आपको आज सहयोग मिलेगा। करियर में आप आज अपनी रचनात्मक क्षमता से लाभ ले पाएंगे।

मीन

मीन राशि के लिए आज सितारे बताते हैं कि आपको आज आशावादी बना रहना चाहिए और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढना चाहिए। अपनी सोच को आग अग्रगामी बनाएं और वर्तमान के साथ भविष्य को ध्यान में रखकर फैसला लें तो यह आपके लिए काफी फायदेमंद हो सकता है। लव लाइफ आज आपकी रोमांटिक रहेगी। प्रेमी के साथ आप बेहतर समय बिता पाएंगे। आज आप अपने जरूरी काम निपटाकर अपने लिए समय तो निकाल लेंगे, लेकिन इस समय का उपयोग आप अपने हिसाब से नहीं कर पाएंगे।

टुडे एक्सप्रेस

एक झलक

अयोध्या की